मई-2020
मूल्य - 40/-
वर्ष 10
अंक-8
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
कुबेर साधना
धूमावती साधना
सिद्धाश्रम साधना

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

निधि, विद्या एवं अक्षय कोष सिद्धि हेतु : धनाधीश कुबेर साधना

शत्रु भक्षण एवं समस्त दु:खों की निवृत्ति हेतु : धूमावती साधना

आनन्द, आकर्षण एवं सौन्दर्य प्राप्ति हेतु : शुक्र साधना

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
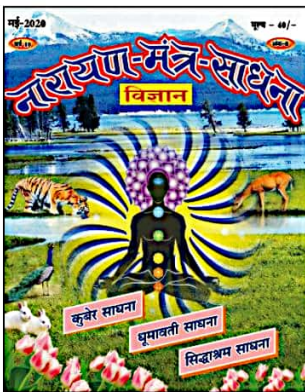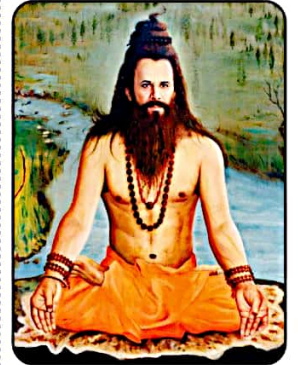
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27354368, 011-27352248
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शंख चक्र कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढ़ां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

हे देवी दुर्गा! आप समस्त राक्षसी वृतियों पर जयी होने के कारण जया हैं आप ऋषियों, मुनियों, योगियों, देवगणों एवं सिद्धि प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले साधकों द्वारा पूजनीय एवं वन्दनीय हैं। आपके शरीर की आभा काले मेघ के समान शांतिदायक हैं। आपकी क्रोध दृष्टि शत्रुओं को भयभीत कर देती है, श्री मस्तक पर चन्द्ररेखा एवं चारों हाथों में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल हैं। सिंह पर आरुढ़ आपके ही तेज से तीनों लोक परिपूर्ण हैं।

एकाग्रता व समर्पण के बिना कुछ नहीं जान सकते

एक आश्रम में तीन युवक पहुँचे। वे वहाँ कुछ दिन रहना चाहते थे। आश्रम के महंत ने उनसे प्रश्न पूछा -क्यों आए हो? पहले ने उत्तर दिया - बस रहने आया हूँ। महंत ने कहा - रहने में तो कोई दिक्कत है ही नहीं। जैसे दुनिया में रहते हो, वैसे ही यहाँ रहो। केवल रहना है तो हमें कुछ नहीं कहना है। दूसरे से पूछा तो उसने उत्तर दिया - कुछ जानने आया हूँ और तीसरे ने कहा - जीने के लिए रहने आया हूँ। महंत बोले - यदि कुछ जानना चाहते हो तो दो काम करने पड़ेंगे - बुद्धि को शुद्ध तथा मन को समर्पण योग्य बनाना पड़ेगा। क्या ऐसा कर सकोगे।

उस युवक ने उत्तर दिया - यह तो आसान है और मैं ऐसा करता रहता हूँ। तब महंत ने उसे समझाया - दुनिया की जीवनशैली और आश्रम की जीवनशैली में यही फर्क है। जिसे हम जानना कहते हैं, अधिकांश मौकों पर हम जानकारियों के स्तर पर काम करते हैं और जो हमारे मन की प्रतिछाया है वह इतनी हावी हो जाती है कि वास्तविक जानकारी न होकर मन की छाया ही रहती है। यह हमारा वहम होता है कि हमने जान लिया। चित्त को एकाग्र किए बिना जो जाना जाता है वह बहुत स्तरीय होता है। वह जाना जा सकता है जो दिख रहा है। उससे महत्वपूर्ण वह है जो देखा नहीं जा रहा है। जैसे जिसे हम परमात्मा मानकर देख रहे है, वो हमारा अहंकार, हमारा पूर्वाग्रह ही होता है। इस स्थिति से ऊपर उठकर जब इसके पीछे देखा जाए तो असली परमात्मा दिखता है। चाहे आश्रम में रहो, चाहे मंदिर में या दुनिया में रहो, चित्त की एकाग्रता और मन के समर्पण के बिना कुछ नहीं जान सकोगे। हाँ, जानकारियों से जरूर लबालब हो जाओगे और फिर महंत ने उस व्यक्ति की ओर देखा जिसने कहा था कि जीना चाहता हूँ। महंत बोले - रहना और जानना इन दोनों से ऊपर की स्थिति है जीना। जीवन को जीने के लिए परमात्मा की अनुभूति होना जरूरी है। जीवन बिताना आसान है, जीना कठिन है।

शिष्यत्व का आधार

असितगिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे,
सुरतरुवर शाखा लेखिनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

जहाँ भगवान शिव का नाम है वहाँ हास्य है, विनोद है, मस्ती है, आनन्द है, पूर्णता का निवास है... और जो हंसता है, वह मर नहीं सकता, क्योंकि जब हंसते हैं, तो अन्दर की वृत्तियाँ अपने-आप उजागर होती हैं, खून का एक उफान-सा आता है, जीवन में एक मस्ती आती है।

अगर जीवित जाग्रत गुरु हैं, तो जाग्रत शिष्य भी होने चाहियें, हम श्मशान में तो बैठे हैं नहीं। नृत्य और गायन, हास्य और विनोद, श्रद्धा और समर्पण ये सब कुछ जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के आयाम हैं, और पूर्णता प्राप्त करने के लिए कोई माला जपने की जरूरत नहीं।

यह शरीर, तुम जिसे शरीर कहते हो, यह शरीर नहीं है, इसलिए शरीर नहीं है, क्योंकि यह शास्त्रों के अनुसार देह है। देह में और शरीर में अन्तर होता है, देह का मतलब है जो मृत्युशील हो, गतिशील हो, समाप्त होने वाली हो। देह तो मर जायेगी, समाप्त हो जायेगी, इसलिए जो देह में जीवित है, उसको एक न एक दिन श्मशान की यात्रा करनी ही पड़ती है, पर जिसके पास शरीर है वह अमर है, शरीर का मतलब है, कि अन्दर एक ऊर्जा है, एक प्रवाह है। बाहरी शरीर के अन्दर एक और शरीर है, और वह शरीर हास्य उत्पन्न कर सकता है, वह शरीर एक भावना पैदा कर सकता है ....देह पैदा नहीं कर सकती, देह तो केवल इतना ही कर सकती है, कि अपने समान एक और चीज बना दे, यदि एक पुरुष है, तो एक और पुरुष की आकृति पैदा कर दे। देह का केवल इतना ही काम है, इसके अलावा देह कुछ और कर ही नहीं सकती। देह मुस्करा नहीं सकती, हास्य नहीं कर सकती, देह तो केवल धीरे-धीरे गतिशील होते हुए समाप्त हो जाती है.... हम समाप्त होने के लिये यहाँ नहीं आये हैं।

यदि समाप्त होने की क्रिया से तुम्हारा अर्थ है, कि हम जल जायेंगे, मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे, समाप्त हो जायेंगे तो यह कोई समाप्त होना नहीं है। समाप्त तो राम आज तक भी नहीं हुए, कृष्ण भी नहीं हुए, बुद्ध भी नहीं हुए, शंकराचार्य भी नहीं हुए, शिव भी नहीं हुए ये सब मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए इनके बारे में हमें मालूम है, हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इनके नाम को नहीं भूलेंगी। इसी प्रकार हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी हमारे लिये एहसास करें, कि हम कुछ थे, एहसास करें, कि हम किसी गुरु के शिष्य थे... और ऐसा अहसास शरीर के माध्यम से ही हो सकता है, देह के माध्यम से नहीं।

और इसीलिए मैं तुम्हारे जीवन में हास्य लाने की कोशिश करता हूँ। मैं चाहता हूँ, कि तुम्हारी जड़ता समाप्त हो जाए, इस देह की जड़ता समाप्त हो जाय... देह की जड़ता समाप्त होगी, तो मेरी आवाज आप तक पहुँच पायेगी। जब मेरी आवाज आप तक पहुंचेगी ही नहीं, तो मैं कितना भी शक्तिपात करूँ, वह शक्ति तुम्हारी देह से टकरा करके लौट

जायेगी, और मेरा शक्तिपात भी व्यर्थ हो जायेगा। वह शक्तिपात, जो चेतना का एक बिंदु है, जो तपस्या का एक अंश है, जो एक प्रवाह पुंज है, एक गतिशीलता है... वह शक्ति तुम्हारे शरीर को स्पर्श कर सकती है, और उस शरीर के आगे भी और क्रियायें हैं, फिर एक 'भू' तत्त्व है, 'भुवः' तत्त्व है, 'स्वः' तत्त्व है, 'महः' तत्त्व है, पर वे सब तो आगे की क्रियाएँ हैं।

आज मानव के पास अभाव के अलावा कुछ है ही नहीं। इसलिए नहीं है, कि जब कभी आप गुरु से मिलते हैं, तो सार्थक बात करते ही नहीं, तंग करते रहते हैं गुरु को। देहगत अवस्था में होते हैं, तो कहते हैं, कि गुरु जी! मेरी पत्नी बीमार है या मेरा प्रमोशन नहीं हुआ, यह हो गया, वह हो गया यह देहगत अवस्था हुई जब हम देह में रहेंगे, तो यह समस्याएँ तो रहेंगी ही।

जब देह छोड़ देंगे और शरीरगत अवस्था में आ जायेंगे, तब ये अवस्थायें आपको व्याप्त नहीं होंगी। चिन्ताएं तो होंगी, बाधाएं भी होंगी, पर आपको व्याप्त नहीं होंगी। वे तो आयेंगी ही, आप दुःखी होंगे तब भी आयेंगी, आप हाथ जोड़ेंगे तब भी आयेंगी, आप खड़े हो जायें, तब भी ये आयेंगी ही।

पुष्पदन्त ने 'महिम्न स्तोत्र' में शिव से कहा "मुझे बड़ा आश्चर्य होता है, कि तुम श्मशान के वासी हो, तुम्हारे पास खप्पर के अलावा कुछ है ही नहीं। जो भी है, खाली खप्पर है, और एक हाथ में परशु है, और चिता की भस्म लेकर लगाते रहते हो, और एक सांप भी है तुम्हारे गले में, इसके बावजूद भी तुम्हें जो आनन्द प्राप्त है, वह हमें प्राप्त नहीं, वह आनन्द हमें भी प्राप्त होना चाहिए।"

हमारे जीवन में जो समस्याएं हैं, वे समस्याएं तो आयेंगी ही, परन्तु जब आप शरीरगत अवस्था में चले जायेंगे, इस देह को छोड़ देंगे, तो आनन्द ही आनन्द मिलेगा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ, कि घर में समस्याएं नहीं होंगी, समस्याएं तो होंगी, मगर वे तुम्हें व्याप्त नहीं होंगी। वास्तविकता यह है, कि समस्याओं में मनुष्य लिप्त हो जाता है, और जब लिप्त हो जाता है, तो उसका वह साधना का क्रम, उसके शरीर से हट कर समाप्त हो जाता है। देह से साधना नहीं हो सकती, साधना के लिये जरूरी है, कि अन्दर का चेतना शरीर जाग्रत हो।

शरीर और देह इन दोनों में अंतर है।
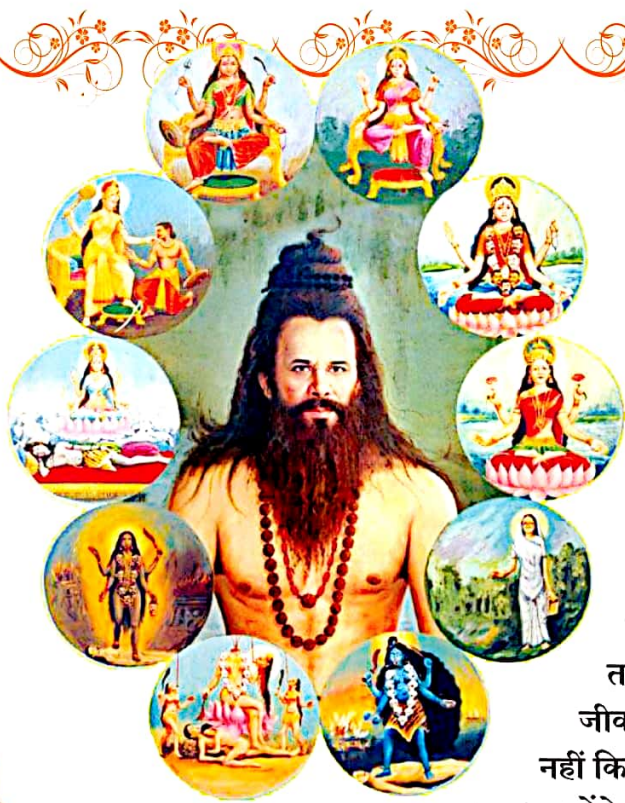
मान लो हमारे घर में दो हजार रुपये नहीं हैं, तो हम बहुत चिन्ता करेंगे, पर यदि आप निश्चिन्त हो जायेंगे, कि यह चीज नहीं है, तो नहीं है। ऐसी निश्चिन्तता से भी जीवन जिया जा सकता है, और उस दु:ख में भी जीवन जिया जा सकता है, जैसा भी तरीका हो आपका... और जिन लोगों ने निश्चिंत जीवन जिया है, उन लोगों को समस्याओं ने परेशान नहीं किया। उनके घर में भी पुत्र होगा, पत्नी होगी, बन्धु-बान्धव होंगे, सब कुछ होगा, पर उन्होंने पूर्णता के साथ जीवन जिया है, प्रसन्नता के साथ जीवन जिया है, हास्य के साथ जीवन जिया है।

भगवान शिव के शिष्य पुष्पदन्त ने दो ग्रंथ लिखे, जिनमें एक महिम्न स्तोत्र है। यदि आप कभी पढ़ें, तो पायेंगे, कि यह अत्यन्त अद्वितीय ग्रंथ है, इसमें चालीस श्लोक हैं, जिसमें एक श्लोक हैं

''असित गिरि समं स्यात्....'' सारी पृथ्वी को कागज, और सारे समुद्र को स्याही बना दूं, और सारे जंगल की लकड़ियाँ काटकर मैं लेखनी बना दूं, और मैं तो एक मामूली आदमी हूँ, यदि विधाता खुद भी लिखने बैठ जाए, इतने बड़े कागज पर, इतनी स्याही से लिखती ही रहे, फिर भी आपके गुणों का पार नहीं पा सकता।

और मैंने पहले भी बताया था, कि इतनी बड़ी गृहस्थी की समस्याएं लेकर वे आनन्दमग्न क्यों हैं?

आप में और शिव में कोई अन्तर नहीं है। अन्तर तो आप मान रहे हैं, शरीर नहीं मान रहा। शंकराचार्य ने नहीं माना, शंकराचार्य ने कहा शिवोऽहं (मैं शिव हूँ)। उन्होंने व्यर्थ में नहीं कहा, वे अपने शरीर से बोल रहे थे। जब तुम अपनी देह से बोलोगे, तो यही भाव उत्पन्न होगा मैं तो यहाँ हूँ और शिव का मंदिर वहाँ है... और फिर आगे मंदिर में जाओगे, तो पुजारी रोक देंगे, फिर कैसे दर्शन करोगे? जब तुम स्वयं शिवमय हो जाओगे, तो तुम्हारे सामने साक्षात् शिव खड़े होंगे ही।

''शिवोऽहं शंकरोऽहम्।''

मैं ही शिव हूँ, मैं ही शंकर हूँ... फिर अगर ध्यान करोगे, तो भगवान शंकर को आना ही पड़ेगा। तुमको मंदिर में जाने की जरूरत नहीं है। व्यक्ति स्वयं शिवमय बन सके, इसके लिए ही तो इस देह से शरीरगत अवस्था में जाने की क्रिया को समझने की जरूरत है।

तुम पुस्तक पढ़कर रात को सो जाओगे, फिर इस पुस्तक की कोई सार्थकता नहीं
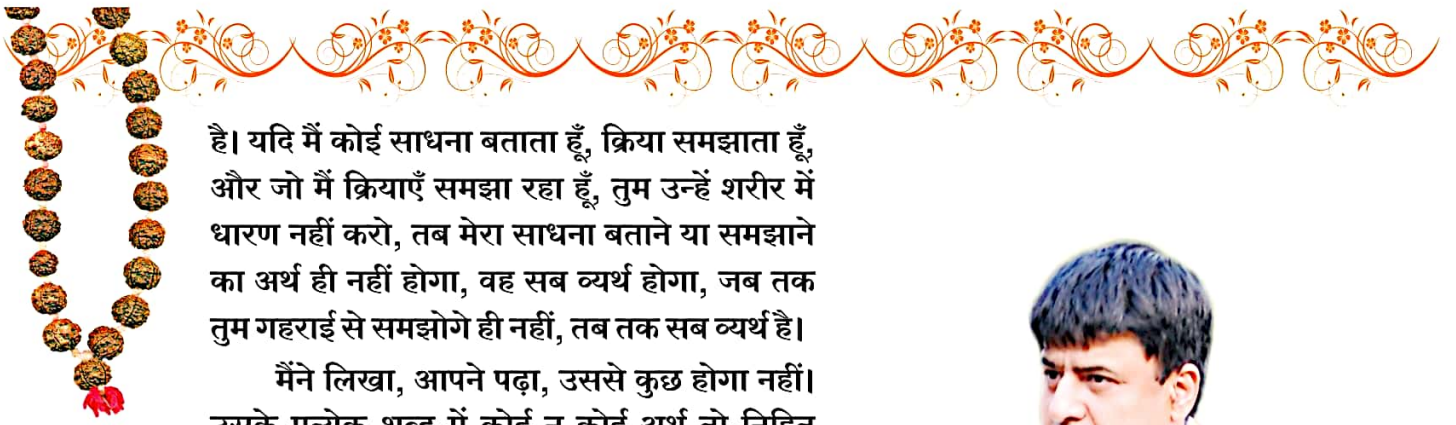
है। यदि मैं कोई साधना बताता हूँ, क्रिया समझाता हूँ, और जो मैं क्रियाएँ समझा रहा हूँ, तुम उन्हें शरीर में धारण नहीं करो, तब मेरा साधना बताने या समझाने का अर्थ ही नहीं होगा, वह सब व्यर्थ होगा, जब तक तुम गहराई से समझोगे ही नहीं, तब तक सब व्यर्थ है।

मैंने लिखा, आपने पढ़ा, उससे कुछ होगा नहीं। उसके प्रत्येक शब्द में कोई न कोई अर्थ तो निहित होगा ही, उसे समझने की आवश्यकता है। यदि भगवान शिव तुम्हारे खुद के शरीर के अन्दर हैं, तो हैं, फिर वे पत्थर की मूर्ति में नहीं हैं। जो देहगत अवस्था में नहीं होंगे, वे मंदिरों में नहीं जायेंगे, फिर भी हम मंदिर में जायेंगे, जलधार चढ़ायेंगे, दूध चढ़ायेंगे, पुष्प चढ़ायेंगे, बिल्व पत्र चढ़ायेंगे, क्योंकि हमें देहगत अवस्था में भी जीने की जरूरत है, क्योंकि हम गृहस्थ हैं, और ज्योंही देहगत अवस्था से हम अलग हुए, फिर ये सब बाह्य क्रियाएँ व्यर्थ हैं।

यह पत्नी है, यह बेटा है, यह माता है, ये सगे-सम्बन्धी हैं ये सब देहगत अवस्था को दर्शाते हैं, और ज्योंही व्यक्ति देह छोड़ता है, जलता है श्मशान में, तब कोई साथ नहीं होता। वे सब रोते-रोते अपने घर को चले जाते हैं, और वह शरीर अवस्था में कहीं और चला जाता है। जब तुम्हें कभी न कभी जाना ही है, तो आज ही चले जाओ, तुमसे ज्यादा अच्छा तो वह सांप है, जो भगवान शिव के गले में है, जो अपनी केंचुली को छोड़ देता है, और पूरी केंचुली को अपने शरीर से उतार करके एक दूसरा शरीर धारण कर लेता है।

हम तो उस सर्प योनि से भी ज्यादा बदतर हैं, इसलिए कि हमें किसी ने समझाया नहीं, कि देह और शरीर में क्या अन्तर है? जब तक अन्तर समझ नहीं आयेगा, तब तक बार-बार गुरु को बोलना पड़ेगा, चीखना पड़ेगा, चिल्लाना पड़ेगा, कहना पड़ेगा... और तुम सोचोगे, कि गुरुजी की रोजी-रोटी चलती है, इसलिए वे बोलेंगे ही... और आप सोचेंगे, कि हमें तो बैठना ही है, सुनना ही है तो उससे कोई फायदा होगा नहीं।

आप उस क्रिया को पहले अपने अन्दर सात्विक भाव से लीजिये, फिर देखिये कितना आनन्द आता है। एक मस्ती के साथ में विचरण कीजिये, जो

कुछ हो रहा है, होने दीजिये, यह भाव स्वाभाविकता से रहने दीजिये। तुम्हारे चाहने से भी नहीं होगा, और तुम्हारे नहीं चाहने से भी होगा।

अब बेटा नहीं कमा रहा है और तुम झींकते रहो बैठे-बैठे, नहीं कमायेगा, तो नहीं कमायेगा। तुम उसके हाथ जोड़ोगे, तो भी नहीं कमायेगा फिर उस दुःख को, उस वेदना को, उस कष्ट को तुम क्यों भोग रहे हो? तुम हटकर किनारे हो जाओ, जब तुम शरीरगत अवस्था में आ जाओगे, तो यह सब व्यर्थ लगेगा।

शंकराचार्य, भगवान शिव की प्रार्थना करते हुए कह रहे हैं **न तातो न माता,** उनकी मां भी थी, उनके पिता भी थे, उनके भाई भी था, उनके मित्र भी थे, उनके शिष्य भी थे, उनका घर भी था, सब कुछ था, खाने के लिये रोटियाँ भी थीं, और यह सब कुछ होते हुए भी उन्होंने कहा **न तातो न माता....**

तो इसका अर्थ है, मैं शरीरगत अवस्था में जाना चाहता हूँ। तुम इस देहगत अवस्था को छोड़ कर शरीरगत अवस्था में जिस दिन भी चले जाओगे यह एक क्षण के बाद भी हो सकता है और पूरा जीवन भी लग सकता है तब तुमको चिन्ताएं व्याप्त नहीं हो सकती, फिर तुमको दुःख, तकलीफ व्याप्त नहीं हो सकते, फिर तुम माथा पकड़ कर नहीं बैठोगे, फिर तुम्हें घबराहट नहीं होगी, परेशानी नहीं होगी, किसी प्रकार का अभाव नहीं होगा। तुम्हारे प्रयत्नों से अभाव नहीं मिट सकता... और हमें मिटाने की जरूरत भी नहीं है।

पुष्पदन्त ने जो ग्रंथ लिखे हैं, ''महिम्न स्तोत्र'' और दूसरा ''शिव स्तोत्र'' उस शिव स्तोत्र में भी चालीस श्लोक हैं, और वे अपने-आप में अद्वितीय श्लोक हैं। एक श्लोक में उसने कहा है

विदारो पूर्वायं वति चरति पूर्णमद इव,
शिवत्वं सेव्यं य यद निरत श्रेव्य श्रुति इव।
विषाग्रं मेवात्वं भव न वदिता प्रेयत इवः
शिवो साक्षाद् रूपं शिव भवति सायुज्य इति च।

यह एक अद्वितीय श्लोक है और यह ग्रंथ पुष्पदन्त ने लिखा तो सही, लेकिन यह न तो प्रकाशित हुआ और न ऋषियों की जुबान पर ही

आया.... और पुष्पदन्त के बाद यह ग्रंथ भी समाप्त हो गया। उसका एक भी श्लोक आज के युग में इस पूरी पृथ्वी पर शायद ही किसी को याद हो। इस तरह से तो ये सब ग्रंथ समाप्त हो जायेंगे, यदि उनको कागजों पर नहीं उतारा गया, यदि उनको जीवन में नहीं उतरा गया, तो इतने अद्वितीय ग्रंथ जो लिखे हैं, वे सब समाप्त हो जायेंगे और हमारे पूर्वजों की थाती अपने-आप में लुप्त हो जायेगी। आज इस पूरे भारतवर्ष में इस शिव स्तोत्र का एक भी श्लोक किसी भी पंडित को याद ही नहीं है।

''इस श्लोक में पुष्पदन्त ने भी वहीं बात कही है, जो इस पुस्तक का सार है।''

वह कहता है ''मैं भगवान शिव की पूजा तो पचहत्तर साल से कर रहा हूँ, परन्तु मैं उनका गण हर समय तनाव में हूँ, हर समय चिन्ता में हूँ, हर समय परेशानी में हूँ और इसलिए मेरे मन में प्रश्न उठता है क्या मेरे जीवन की नियति यही है, कि मैं इन चिन्ताओं के साथ ही मर जाऊँ? और भगवान शिव! क्या आपके वरद हस्तों में रहकर भी मेरा जीवन ऐसा ही व्यतीत होगा? कौन सा क्षण आयेगा, जब मैं अपने-आप में उस अद्वितीय आनन्द को प्राप्त कर सकूँगा जिसको शास्त्रों में कहा है ब्रह्मानन्दं परं सुखदं।''

और उसने ज्योंही यह श्लोक पढा, भगवान शिव ने कहा 'गुरुर्वै गतिः''... तुमने गुरु को धारण ही नहीं किया, तब कौन समझायेगा, तुम्हें कि पचहत्तर साल तक मेरी सेवा करते हुए भी तुम अभाव से क्यों हो? आज पहली बार तुम्हें एहसास हुआ, आज तुमने पहली बार विचार किया है, कि क्यों तुम भुगत रहे हो, इसलिए मुझे उत्तर देना पड़ा है।

यदि तुम अभय प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें गुरु के पास जाना पड़ेगा, और गुरु के माध्यम से तुम मालूम करो, कि तुम क्यों अभाव भोग रहे हो, क्यों तकलीफें तुम्हें व्याप्त हैं।

शिव स्तोत्र के ये पूरे श्लोक किसी पुस्तक में या किसी ग्रंथ में कोई दिखा दे, ऐसा सम्भव नहीं लग रहा है, यह परम्परा, खत्म सी इसलिए लग रही है, क्योंकि बीच में एक अंधेरा आ गया था। कृष्ण के बाद भी दो ढाई हजार साल तक अंधेरा रहा, फिर कोई व्यक्तित्व आयेगा, जो ब्रह्माण्ड से शब्दों को पकड़ेगा और अपने शिष्यों के सामने सुना देगा। यह जीवन का एक अंधकार पक्ष है, इसे मैं भी समझ रहा हूँ, मगर जब कोई ऐसी पोथी मिलेगी, जिस पर गुरु लिख सकें तो अवश्य इस अंधकार का हनन होगा... अगर
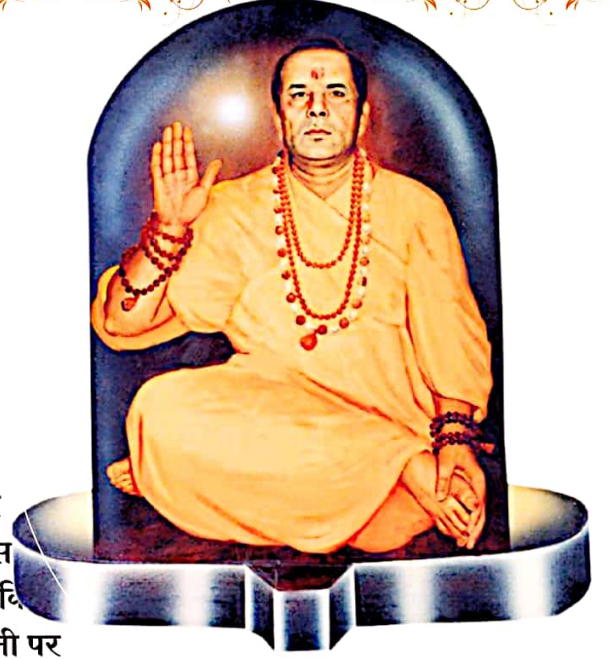
तुम में से कोई पोथी बने पर जब तुम खाली कागज हो जाओगे, तब ही गुरु उस पर लिख सकेंगे।

यह दर्द, यह बेचैनी, यह दु:ख हमेशा मेरे साथ रहेगा, यह तो आने वाला समय ही एहसास करेगा। गुरु इन्हें कागजों पर नहीं लिखेंगे, क्योंकि कागज तो गल जायेंगे। अब ये ग्रंथ किसी की छाती पर लिखने हैं, कलेजे पर लिखने हैं... और गुरु तो लिखने के लिये तैयार हैं, लेकिन कोई सीना फाड़ करके सामने खड़ा हो, तब तो लिखें।

इसलिए शिव ने कहा **'गुरुवै'**.... तुम गुरु को पकड़ोगे, तब वह गुरु तुम्हें समझायेगा, कि क्यों तुम पचहत्तर साल तक मेरे ऊपर बिल्व-पत्र चढ़ाते हुए भी शिवमय नहीं बन सके? क्यों काल को रोक नहीं सके, क्यों पूर्णता प्राप्त नहीं कर सके?

तीसरे श्लोक में फिर पुष्पदन्त पूछ रहे हैं ''मैंने अपनी जवानी, सारे जीवन का यौवन, सारे जीवन के क्षण आपके चरणों में व्यतीत कर दिये, मैंने तो केवल आपको समझा है, आपके अलावा किसी को समझा ही नहीं।''

शिव ने कहा ''एक हाथ है और दूसरे हाथ के बिना तुम ताली बजाना चाहते हो, तो ताली बज ही नहीं सकती, जब तक बीच में हवा का अंश नहीं होगा, बीच में कोई माध्यम जरूर होना चाहिए। मैं यदि आवाज करूँगा, तो आवाज किसी माध्यम से पहुँचेगी? नि:सन्देह हवा के माध्यम से।''

पुष्पदन्त! तुम्हारे और मेरे बीच में कोई माध्यम नहीं है, अत: तुम जो कहते हो, वह तुम्हारे पास तक रह जाता है, मेरे पास तक पहुँचता ही नहीं, और मैं जो कहता हूँ, वह तुम्हारे पास तक नहीं पहुँचता! इसलिए तुम देहगत अवस्था में हो, तुम केवल पुष्पदन्त हो''... और चौथी पंक्ति पुष्पदन्त ने डेढ़ साल बाद लिखी... उसने तीन पंक्तियाँ लिखी और चौथी वह लिख नहीं पाया, क्योंकि चौथी पंक्ति में पूरे ग्रंथ का सार था।

राजा भोज एक बार अपने महल में सो रहे थे, रात्रि को अपने पलंग पर लेटे-लेटे ही उन्होंने एक श्लोक लिखा

धनं रूपत्वं प्रेयश्च पूर्णत्व सुख सेवच।
देहं राज्य अश्वं च पत्नी प्रेयश्च पूर्णत:।।
सदं हस्ति च माणिक्यंऽयं राजा भवता वदेत्।

उन तीनों पंक्तियों का अर्थ था "मैं राजा भोज हूँ, महानगरी उज्जैन का मालिक हूँ, मेरा राज्य है, मेरे मकान हैं, सुन्दरतम स्त्रियों का मैं पति हूँ, नौकरानियाँ हैं, धन है, वैभव है, ऐश्वर्य है, सब कुछ है... तीन पंक्तियाँ खत्म हो गईं... अब चौथी पंक्ति नहीं सूझे? यह विचार तो कर रहा था, पर चौथी बोल नहीं पा रहा था, तीन पंक्तियों को ही बार-बार दोहरा रहा था।"

एक चोर उसके पलंग के नीचे छिपा हुआ था, इस इंतजार में, कि राजा भोज सोये और वह चोरी करके जाय। अगर कोई नाच करने वाला है, तो कहीं नाच होने पर वह रुक नहीं सकता, नाचेगा, नहीं तो पांव जरूर पटकेगा, पर वह कुछ करेगा जरूर। चोर ज्ञानी था, पर मजबूरी में चोरी करने आया था। जब उसने सुना, कि तीन पंक्तियाँ यह पन्द्रह मिनट से दोहरा रहा है, तब वह बोला

'सम्मीलने नयनयो र्नहि किंचिदस्ति'

उसने कहा "राजा भोज तुम सही कह रहे हो। तुम भोज हो, तुम बादशाह हो यहाँ के, तुम्हारी सुन्दरतम पत्नियाँ हैं, नौकरानियाँ हैं, धन है, ऐश्वर्य है, सब कुछ है, पर जब तुम्हारी आंख बन्द हो जायेगी, तब ये कहाँ जायेंगे? फिर तुम्हारे पास क्या बचेगा?"

इसलिए शिव पूछते हैं, जब तुम्हारी आँख बन्द हो जायेगी, तब तुम्हारे पास क्या बचेगा? यह पत्नी, ये धन क्या बचेगा तुम्हारे पास? कुछ नहीं बचेगा, है ही नहीं तुम्हारे पास पूंजी... और पूंजी तब होगी जब तुम देह से शरीर में चले जाओगे, पूंजी वह होगी जब तुम साधारण मानव से 'शिवोऽहं शंकरोऽहम्' हो जाओगे, जब तुम गुरु में समर्पित हो जाओगे... और जब तुम गुरुमय बन जाओगे, वह पूंजी होगी, तब हजारों काल भी इकट्ठे हो जायें, मगर तुमको नहीं मार सकते, फिर तुम जीवित रहोगे और जरूर रहोगे।

अभी काल तुम्हें मार सकता है, क्योंकि तुम्हारे पास वह पूंजी नहीं है। जो ये सांसारिक पूंजी है वह तो देह के साथ-साथ एक न एक दिन खत्म हो जायेंगी।

इसलिए शिव ने कहा **"अगर तुम्हारे और मेरे बीच में माध्यम नहीं है, तो बिल्व पत्र चढ़ाने से, जल चढ़ाने से कुछ नहीं हो सकता। तुम्हारे मेरे बीच में एक गुरु होना चाहिए, क्योंकि तुम्हारी आँखों से मैं तुम्हें दिखाई नहीं दूंगा, तुम मुझे पहिचानते ही नहीं।"**

तुम्हारे पास क्या प्रमाण है, कि भगवान शिव कैसे हैं? यह तो शिवलिंग है, लेकिन उनका कोई शरीर तो होगा। हम तो केवल एक अंग की पूजा कर रहे हैं, और जो तुम चित्र में देख रहे हो, वे तो चित्रकार ने बनाए हैं, उसने भी शिव को नहीं देखा, अगर शिव आ भी जाएं, तो पहिचानोगे कैसे? अब तुम 'ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय' जपते रहो और
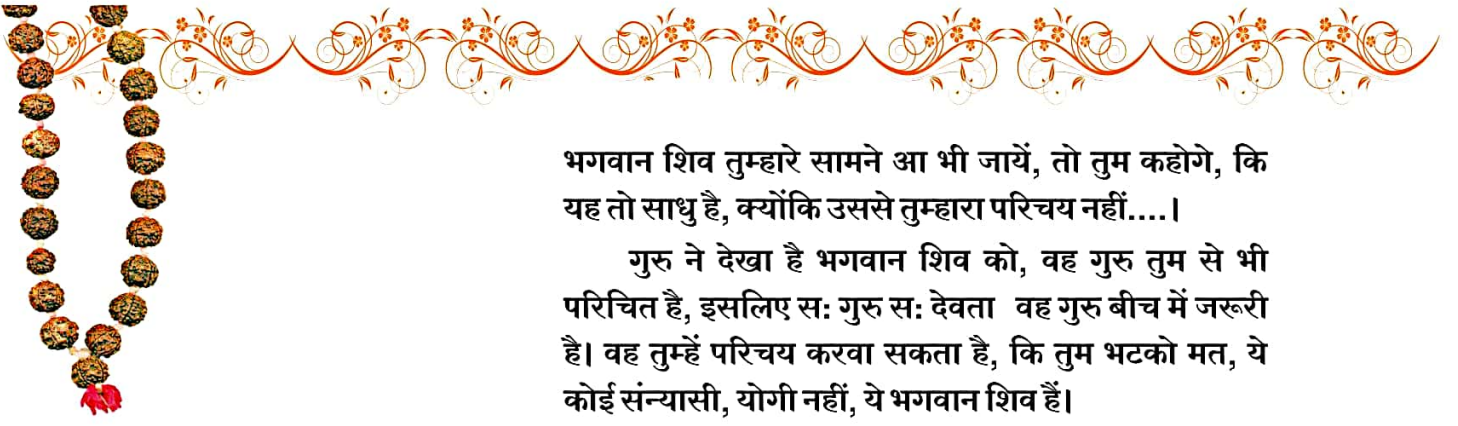
भगवान शिव तुम्हारे सामने आ भी जायें, तो तुम कहोगे, कि यह तो साधु है, क्योंकि उससे तुम्हारा परिचय नहीं....।

गुरु ने देखा है भगवान शिव को, वह गुरु तुम से भी परिचित है, इसलिए सः गुरु सः देवता वह गुरु बीच में जरूरी है। वह तुम्हें परिचय करवा सकता है, कि तुम भटको मत, ये कोई संन्यासी, योगी नहीं, ये भगवान शिव हैं।

इसलिए शिव ने कहा ''ऐसे कुछ नहीं होगा। तुम पचहत्तर साल तो क्या पांच हजार साल तक मेरी पूजा करो, तब भी कुछ नहीं होगा।''

पुष्पदन्त वहाँ से जाता है, और सीधा गुरु के चरणों में अपने-आपको समर्पित कर देता है, गुरु से कहता है ''मुझे शिव की जरूरत नहीं है, मैं शिवत्व का क्या करूँगा? मैं आपके पास आया हूँ, गुरुदेव! आप ही मुझे बताइये, कि मुझे क्या करना चाहिए, जिससे जीवन में मैं जो चाहता हूँ, वह प्राप्त हो।''

और गुरु उसको समझाते हैं, वही चीज समझाते हैं, जो मैं आपको समझा रहा हूँ, उस कड़ी को पच्चीस हजार वर्ष बाद वापिस जोड़ रहा हूँ।

उन्होंने भी पुष्पदन्त को यही समझाया ''तुम अपनी देह को छोड़ दो, देह का मोह मत करो, देह का मोह करोगे, तो देहगत अवस्था में रह जाओगे।''

और ये सारी दशा, जो कुछ है, वह देहगत अवस्था ही है यह पत्नी, ये पुत्र, ये नौकर, ये बन्धु-बान्धव, जब तुम अपने-आप को छोड़ दोगे... चाहे घंटे भर के लिए छोड़ो, चाहे दो घंटों के लिए छोड़ो, मैं यह नहीं कह रहा, कि तुम हमेशा के लिए छोड़ दो, पर कुछ समय के लिए छोड़ दो। कुछ समय के लिए तुम उस शरीरगत अवस्था में आ जाओ... तुमको एक अद्वितीय आनन्द की प्राप्ति होगी, एक अजीब-सी खुमारी आयेगी, ऐसा लगेगा, कि तुम अपने-आप में ध्यान मग्न हो, फिर कुछ भी संसार में तकलीफदायक नहीं लगेगा।

पुष्पदन्त के गुरु ने कहा ''सेवत्वं समर्पत्वं''

कुछ समझाया नहीं, केवल दो बातें समझाईं और दो शब्द ही बोले उसने ऐसा लम्बा-चौड़ा कुछ नहीं किया, दीक्षा वगैरह उसने कुछ नहीं दी, बस दो सूत्र ही दिये सेवा और समर्पण।

समर्पण का मतलब है तुम्हारे पास कुछ रहे ही नहीं। तुम्हारे पास जो देह है, उसको समर्पित कर दो, इसे मेरे पास

छोड़ दो, इसे मैं अपने-आप संभाल लूंगा जब तुम जाओगे, तब देह अपने-आप तुम्हें दे दूंगा तुम जाओगे कहाँ? तुम श्मशान में जाओगे ही नहीं, देह तो तुम्हारे पास है ही नहीं। तुम श्मशान में जा ही नहीं सकोगे, क्योंकि वहां केवल देह जाती है... और यह तभी हो सकता है, जब तुम सेवा करोगे, तभी कुछ प्राप्त हो पायेगा। ऐसा नहीं, कि मैं स्वार्थी हूँ। मैं चाहूँ या ना चाहूँ, पर यह केवल सेवा के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है। निश्चिन्तता के साथ में, कहीं मन में कोई लगाव-दुराव नहीं हो, बिना किसी लोभ-लालच के सांसारिकता से अपने को बचाते हुए निःस्वार्थ भाव एवं लगन से की गई सेवा ही सच्ची सेवा है। सेवत्वं समर्पत्वं साथकत्वं... और तीसरी स्टेज तुम्हारी साधक की बनती है, चौथी स्टेज तुम्हारी शिष्य की बनती है, तीनों स्थितियों से गुजरता हुआ व्यक्ति शिष्य बनता है।

पुष्पदन्त ने कहा **''शिष्यत्व तो बाद की बात है... मेरे जीवन का लक्ष्य, मेरे जीवन का आनन्द यह है, कि मैं पूर्ण शिवमय बनूं।''**

गुरु ने कहा ''मैं तुम्हें उस प्रकार की दीक्षा दे रहा हूँ, जिसके माध्यम से तुम्हारी देहगत अवस्था को हटा कर, तुम्हें शरीरगत अवस्था में ले सकूँगा।''

कुण्डलिनी जागरण आपने पढ़ा है, पर तुम यह नहीं जानते, कि कुण्डलिनी बैठी कहाँ है? कहाँ से खींच कर निकालनी है? यह गुरुओं को भी पता नहीं। जितने भी गुरु हैं, उनके कम से कम तीन सौ ग्रंथ तो मैंने पढ़ लिए हैं, उनमें लिखा हुआ है, कि मूलाधार के नीचे एक जगह है, जहाँ कुण्डलिनी सर्प की भांति साढ़े तीन आंटे देकर बैठी हुई है, और वह वहां से उठती है, फिर वह सभी चक्रों को बेधती हुई सहस्रार में पहुंच जाती है।

बस, तुम अब एक काम करो... बीस ग्रंथ लेकर एक ग्रंथ तुम और लिख दो, कि साढ़े तीन आंटे नहीं ढाई आंटे हैं बस लिख दो.. और इस प्रकार तुम कुण्डलिनी जागरण के सिद्धहस्त आचार्य बन जाओगे, फिर तुम्हारे पास बीस-पच्चीस शिष्य तो आ ही जायेंगे गुरुदेव! मेरी भी कुण्डलिनी जाग्रत कर दो ढाई आंटे वाली... साढ़े तीन आंटे थे, एक तो आपने खोल ही दिया, अब ढाई आंटे आप और खोल दो... आप बहुत महान हैं... खुल रही है। और ऐसे भी ग्रंथ लिखे गये! जिनको ज्ञान नहीं था, उन्होंने कुण्डलिनी जागरण के ग्रंथ लिख दिये और हमारा सत्यानाश इस तरह के अनुभवहीन, तथ्यहीन ग्रंथों ने किया।

''जहाँ तुम ढूंढ रहे हो, वहाँ कुण्डलिनी है ही नहीं।''
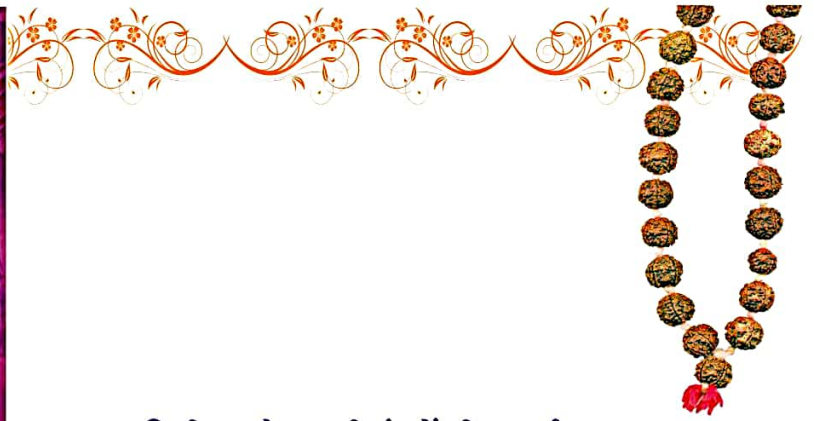
कुण्डलिनी का तो गायत्री मंत्र में सीधा वर्णन किया हुआ है। इसलिए कहा गया है, कि गायत्री मंत्र परमाणु बम से भी ज्यादा विस्फोटक है। अब शास्त्रों में लिखा है, कि चौबीस अक्षरों की गायत्री है, और आप मुझे चौबीस अक्षर गिनकर दिखा दें, बेशक आप पढ़कर देख लें। उसमें चौबीस अक्षर हैं ही नहीं और शास्त्रों में लिखा है चौबीस अक्षर। उसमें अक्षर तेईस हैं, फिर चौबीसवां अक्षर कहाँ गया? अब कौन बतायेगा तुम्हें? अब तुम्हारे पास गुरु तो हैं नहीं, जो तुम्हें समझाए कि किस प्रकार चौबीस अक्षर बनते हैं।

किसी ने कहा, कि ऐसा है और तुमने कहा ''हाँ'', ऐसा है। मूलत: यह गायत्री मंत्र, सविता मंत्र है। शास्त्रों में, वेदों में गायत्री शब्द का उल्लेख नहीं के बराबर है। यह सविता मंत्र है और सविता का मतलब है सूर्य... और सूर्य का मतलब है तेजस्वी। शरीर के अन्दर इतना विस्फोट पैदा हो जाए, कि अन्दर के जो पाप हैं, दु:ख हैं, छल हैं, वे विस्फोटित होकर समाप्त हो जाएं। इसलिए उस गायत्री मंत्र में जो बीज हैं, वे हैं भू:, भुव:, स्व:, मह:, जन:, तप:, सत्यम् ये सात शरीर हैं। इस मंत्र में एक से दूसरे शरीर में जाने की क्रिया है। आगे मंत्र में तत्स वितुर्वरेण्यं लिखा है।

जो एक विशिष्ट क्रिया है और उस क्रिया को गुरु के बिना नहीं समझा जा सकता।

मैं वही समझा रहा हूँ, कि पहली क्रिया 'भू:' से 'भुव:' में जाने की है। यह जो गायत्री मंत्र का पहला बीज है, इसे समझने की जरूरत है। प्रत्येक मंत्र के चार चरण होते हैं। प्रत्येक दोहे के, प्रत्येक चौपाई के, प्रत्येक श्लोक के चार चरण होते हैं, जितने मंत्र लिखे हुए हैं, उनके भी चरण चार हैं, पर गायत्री मंत्र के चार चरण नहीं हैं तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्। अब चौथा तुम्हें यह चौथा चरण कौन समझाएगा? कैसे समझोगे?.... और तुम गायत्री मंत्र जपते हो।

सारे मंत्र हमारे पूर्वजों ने कीलित कर दिये। कीलित का मतलब है, कोई एक अक्षर हटा दिया या कोई अक्षर जोड़ दिया, बस अब झींकते रहो बैठे-बैठे और मंत्र का उच्चारण करते रहो। यह सब मैं इसलिए बता रहा हूँ, कि ये बातें तुम्हारे समझ में तभी आयेंगी, जब तुम शरीरगत अवस्था में चले जाओगे, देहगत अवस्था में इस गूढ़ता को नहीं पकड़ पाओगे। शरीरगत अवस्था में जाने पर ये सारी समस्याएं स्वत: मिट जायेंगी।

और यह तुम्हारी देह हाड़-मांस, मल-मूल के लोंदे के अतिरिक्त कुछ नहीं है... अगर तुम्हें विश्वास नहीं, तो मैं एक्सपेरीमेंट करके दिखा देता हूँ। तुम पांच दिन स्नान मत
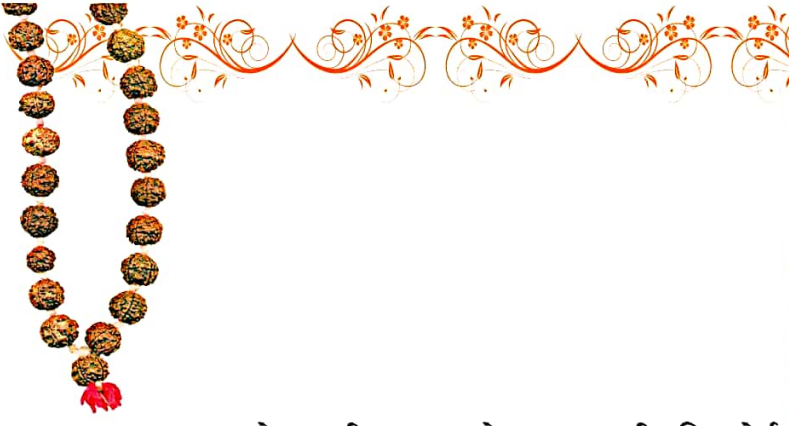
करो, इतनी बदबू आने लग जाएगी, कि कोई पास में नहीं बैठेगा तुम्हारे, यह तुम्हारी देह है। गाय की चमड़ी पड़ी रहे, तो महीने भर तक बदबू नहीं आती उसमें, और तुम्हारा शरीर मरने के बाद में दो घंटे तक पड़ा रहे, तो बदबू इतनी आने लगती है, कि पड़ोस वाला रह नहीं सकता, वो कहेगा ''हटाओ भाई! इसे, अब यहाँ क्यों रखा है? मर गया सो मर गया, अब इसे श्मशान में ले जाओ और जल्दी से जल्दी इसे जला दो, नहीं जलाओगे, तो बदबू आएगी।

अब ये तो तुम्हारी देह है, तुम उस पर लक्स साबुन लगा रहे हो, क्रीम लगा रहे हो, शृंगार कर रहे हो, और फिर कॉलर झटकते हो मेरे पास आकर।

''होगा क्या इससे।?''

''इस देह को संभालने से कुछ नहीं होगा, उस शरीर में जाने की जरूरत है।''

देह से शरीर में जाने की क्रिया मामूली बात नहीं है, प्रत्येक के बस की बात नहीं है। जब मालूम ही नहीं है, तो कोई करेगा कैसे? यह एक बदलने की क्रिया है, और जब ऐसा होगा, तो आपको शिव दिखाई देंगे और गारण्टी के साथ दिखाई देंगे। भगवान शिव का पूरा विग्रह दिखाई देगा, केवल शिवलिंग नहीं, उनका चेहरा, उनकी शांत मुद्रा, उनकी श्मशान की मुद्रा जो शास्त्रों में वर्णित है, वे भगवान शिव अपने-आप में पूर्णत्व रूप में दिखाई देंगे, तब तुम्हें महसूस होगा, कि यह शिव अपने-आप में अद्‌भुत हैं, अनिवर्चनीय है, इसलिए इनको देव नहीं कहा है, महादेव कहा है।

जरूर कोई बात है। यह एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव में जाने की क्रिया है। और आपको जीवन में सात पड़ाव पार करने हैं। पहला देह, देह के बाद में प्राण और प्राण के बाद में आत्मा, इस तरह से ये सात शरीर हैं, और यही सात शरीर कुण्डलिनी के सात चक्र हैं।

अब उनको ज्ञान था ही नहीं, इसलिए उस पुष्पदन्त को पूरे पचहत्तर साल लगे, और साधना-तपस्या करने के बाद में जो ज्ञान और चेतना प्राप्त हुई, कि हम देह से शरीर में चले जाएं... और जब हम चले जाऐंगे, तो अपने-आप में दिव्य दर्शन प्राप्त होने लग जाएंगे। फिर जो शंकराचार्य बोल रहे हैं शिवोऽहं शंकरोऽहं आप भी बोल पाएंगे।

मैं तुम्हें एक मूलचन्द से शिवोऽहं बना दूं, तुम्हें हरीकिशन से शंकरोऽहं बना दूं ये मेरी बहुत बड़ी उपलब्धि है, ये तुम्हारे ऊपर बहुत बड़ा ऋण है, कि मैं ऐसा करूँ, और ऐसा मुझे करना ही है।
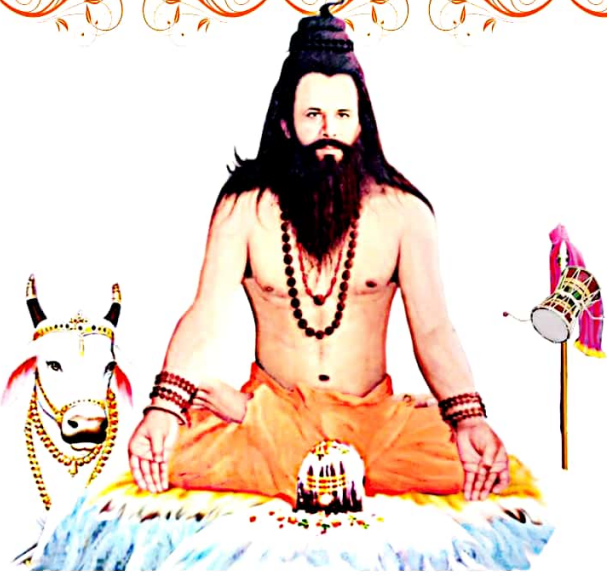
और यदि आप मुझसे सम्पर्कित ही नहीं होंगे... अपनी देह लेकर अलग खड़े होने से तो शरीर प्राप्त नहीं होगा... होगा केवल शिव द्वारा बताये दो सूत्रों 'सेवत्वं' और 'समर्पत्वं' के द्वारा। इसलिए मैं यह बात कह रहा हूँ, कि तुम नदी की तरह बहो, रुको नहीं, तुम्हें बहना है, बीच में चार आदमी खड़े होंगे, तो खड़े होंगे, तुम केवल अंधे हो जाओ।

''अगर सोच-समझकर समर्पण किया, तो वह समर्पण ही क्या हुआ?''

अकबर पाँच बार नमाज पढ़ता था, एक बार जब वह बाहर गया हुआ था तो दोपहर को वहां मार्ग में ही, उसने चादर बिछाई और नमाज पढ़ने लगा। एक सत्रह या अट्ठारह साल की लड़की थी, उसको टाइम दे रखा था उसके प्रेमी ने, यह कहकर, कि बारह बजकर पन्द्रह मिनट तक नहीं आई, तो मैं चला जाऊँगा। बारह बजकर बारह मिनट हो गये, और वह भागती हुई बेचारी घर से निकली... और चादर पर पांव रखती हुई चली गई। अकबर को बड़ा गुस्सा आया, कि यह कौन लड़की है, जो चादर पर पांव रखकर चली गई। वह अपने प्रेमी से मिली, पांच-सात मिनट बात की, फिर जब लौटी तो उसके पांव धीमे-धीमे चल रहे थे... और वह उस चादर के पास से, ज्योंही निकलने लगी, तो अकबर ने उसको रोक लिया और कहा ''तुझे दिखाई नहीं दे रहा? इस चादर के ऊपर पांव रखकर चली गई।''

उसने कहा ''मैं तो अपने प्रेमी से मिलने के लिये इतनी पागल सी थी, कि कुछ दिखाई नहीं दे रहा था... पर तुम क्या कर रहे थे?''

''नमाज पढ़ रहा था।''

''तो तुम्हें कैसे मालूम पड़ा, कि मैं पांव रखकर गई हूँ, फिर तो तुम नमाज पढ़ ही नहीं रहे थे, तुम तो खुदा के पास थे ही नहीं, तुम मुझे देख रहे थे।''

समर्पण अपने-आप में अंधा होता है, बहरा होता है... और लीन हो जाने की क्रिया ही अपने-आप में सही समर्पण है।

अब मैं खड़ा हूँ... और तुम मिल ही नहीं सको ''चलो, आज भीड़ बहुत है, कल मिलेंगे।''

...फिर कुछ नहीं हो सकता, सम्भव ही नहीं है, और मेरे पांव पकड़ने से भी कुछ नहीं होगा, मैं तो क्रिया सिखा रहा हूँ। नदी को किसी ने सिखाया नहीं, कि समुद्र में मिलने के

लिये बहुत तेजी से दौड़ना चाहिए, और जब नदी भागती है, तब वह अपने-आप में समुद्र बन जाती है.... और यह भी जीवन की एक क्रिया है, जिस प्रकार हास्य जीवन की एक क्रिया है, रोना भी जीवन की एक क्रिया है। इसलिए कहा है, कि शिवत्वं, सेवत्वं, समर्पत्वं। मिटा दीजिये अपने-आप को, जब मिट जाने की क्रिया होगी, तभी कुछ प्राप्त होगा।

जैसे ही बीज जमीन में समाया, तो एक अंकुर फूटा, और समय के साथ-साथ एक वटवृक्ष बन गया, पर वह बीज कितना सा था, छोटा सा तो था, पर मिटा दिया अपने आप को मेरा जो होगा, सो होगा ऐसा निश्चय करके जमीन में गड़ गया, तो वह एक दिन विशाल वटवृक्ष बन गया, चाहे वह दस साल बाद बना, चाहे वह पन्द्रह साल बाद बना पर बना अवश्य।

मैं भी बीज था तुम्हारी तरह और जमीन में गड़ गया, न पत्नी देखी, न पिता को देखा, न सम्बन्धी को देखा, बस सोचा जो कुछ होगा, देखा जायेगा, या तो बीज गल जायेगा या बीज विशाल वटवृक्ष बन जायेगा, कुछ न कुछ तो होगा जरूर, खाली बीज नहीं रहेगा... और आज मैं आपके सामने हूँ, जिसकी छाया के नीचे आज कम से कम हजारों लोग बैठते हैं।

तुम भी ऐसा वटवृक्ष बन सकते हो, यदि समर्पण हो, मिटने की क्रिया हो अपने आप में। यदि तुम सोचते हो, कि मैं बीज हूँ और मिट भी जाऊँगा, तो इससे क्या फायदा होगा?

"अभी रुक गये, तो कभी वटवृक्ष नहीं बन सकते।"

इसलिए गुरु ने पुष्पदन्त को बताया सेवत्वं, समर्पत्वं, साधकत्वं, शिष्यत्वं।

यह जीवन की स्टेज, अपने-आप में देह से शरीर में जाने की क्रिया है, और मैंने अभी तुमसे वायदा किया है, कि मैं तुम्हें देह से शरीर में ले जाने के लिए समर्थ हूँ। मैं घबराता हूँ नहीं, घबरायेगा वह, जो अपूर्ण होगा, आधा घड़ा हमेशा आवाज करेगा

"सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्दं"

यदि घड़ा भरा हुआ हो, तो आवाज करेगा ही नहीं। मुझमें इतनी क्षमता है, कि मैं तुमको देह से शरीर में ले जाऊं... और वहाँ पहुँचते ही तुम में एकदम से प्रकाश पैदा होगा।

जब कृष्ण ने कहा "हे अर्जुन! पूरा ब्रह्माण्ड मेरे अन्दर है, पर तू समझता नहीं। तू मां-बाप को क्या देख रहा है, मेरा अपने-आप में विराट रूप है, देख, मुझ में देख।"

और तुम्हें भी मैं कह रहा हूँ, तुम्हारा पूरा ब्रह्माण्ड तुम्हारे शरीर के अन्दर है, यह

शिवलिंग, यह सोमनाथ सभी कुछ तुम्हारे अन्दर है, यदि अन्दर देखोगे, तो तुम्हें साक्षात् शिव-विग्रह दिखाई देगा... और बाहर देखोगे, तो पत्थर की मूर्तियों के अलावा कुछ दिखाई नहीं देगा... और यह सब तभी हो पायेगा, जब देह से शरीर में जाओगे।

मैं सोचता हूँ, कि आप उस अनुभव को प्राप्त करें, जो मैं आपको बता रहा हूँ, जो उस गुरु ने पुष्पदन्त को समझाया है, उसी कड़ी की... और यही वह तथ्य है, जहाँ पुष्पदन्त के गुरु ने उसको समझाया था, कि यही देह से शरीर में जाने की क्रिया है... और वही क्षण पांच हजार साल बाद पुन: आ रहा है, जब एक गुरु अपने शिष्य को कह रहे हैं, कि मैं तुम्हें वापिस इस देह से शरीर में ले जाऊँगा, ले जाऊँगा तभी आप शिव को अपने सामने देख पायेंगे, तभी आप अपनी छठी इन्द्रिय को जाग्रत कर सकेंगे.... तब आपके जीवन में ऊर्ध्वगामी बनने की ओर पहला कदम होगा।

और मेरे भी जीवन के आनन्द की पहली उपलब्धि होगी, जब आप-अपने जीवन में उस क्षण की प्राप्ति कर सकेंगे, यही हृदय से मेरा आशीर्वाद है।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।
तीव्र प्रभावयुक्त
आत्म यंत्र
सभी प्रकार की क्रियाएं मानव सिर्फ सफलता प्राप्त करने के लिए ही करता है। इस कार्य में सभी साधनाएं सहायक हो और उन सबका उसे मनचाहा लाभ मिले यही प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। परंतु जब स्वयं अपना मन ही उदास, हताश या निराश हो, स्वयं हम यदि उत्साहहीन हों, हमारे ही अंदर यदि हीनभावना भर गई हो, तो ऐसे में एकाग्रता हो ही नहीं सकती। उत्साह और एकाग्रता के अभाव में व्यक्ति के मन में उदासी या हीनभावना इतने प्रबल रूप से अधिकार जमा लेती है, कि व्यक्ति किसी भी कार्य में सफल नहीं हो पाता तब वह बात-बात में झुंझलाने लगता है, उसके प्रत्येक निर्णय गलत होने लगते हैं। सद्गुरुदेव जन्मदिवस के विशिष्ट मुहूर्त्त पर गुरुधाम, जोधपुर में इन परेशानियों का सटीक उपाय विशिष्ट तीव्र प्रभावयुक्त आत्म मंत्र तैयार कराए गए हैं। आप स्वयं इस दैवी शक्ति युक्त यंत्र की विलक्षणता अनुभव करेंगे। मन में उमंग, उत्साह, पूर्ण यौवन, रस, आनन्द, प्रसन्नता एवं सफलता का वातावरण बनेगा।
विधान
इस यंत्र को प्राप्त कर किसी भी गुरुवार से नित्य प्रात:काल 5 मिनट निम्न मंत्र का जप कर लें तथा इस यंत्र को पूजा की जगह स्थापित कर लें।
मंत्र :
॥ ॐ ऐं ब्रह्माण्ड तेजसे नम: ॥
30 दिन बाद किसी पवित्र जलधारा में विसर्जित कर दें या मंदिर में चढ़ा दें।
405/-
नारायण मंत्र साधना विज्ञान
मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर
यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।
वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
नारायण मंत्र साधना विज्ञान
गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

धनाधीश कुबेर साधना

निधि विद्या एवं अक्षय कोष सिद्धि हेतु

धनाधीश कुबेर समस्त पृथ्वी पर जो सम्पदा बिखरी हुई, उसके अधिपति है, यही नहीं अपितु जमीन के अन्दर जितना भी धन, रत्न और सम्पदा छिपी हुई है, उसका अधिपति भी कुबेर को ही माना गया है। आकस्मिक धन प्राप्ति या अन्य श्रेष्ठ उपायों द्वारा लक्ष्मी की स्थायी प्राप्ति का आधार भी कुबेर को ही माना गया है। देवताओं और मनुष्यों के निवास करने योग्य जितनी भी पृथ्वी है, उस सारी पृथ्वी की सम्पदा के एकमात्र अधिपति देवता धनाधीश कुबेर है। भगवान विष्णु भी लक्ष्मी को प्रिय रखने के लिए कुबेर को ही आधार मानते हैं, स्वर्णमयी लंका के निर्माण में कुबेर का महत्वपूर्ण हाथ रहा है, कुबेर ही सही अर्थों में लंका के अधिपति थे, और ब्रह्मा ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें पुष्पक विमान भेंट किया था।

पुराणों के अनुसार महर्षि पुलस्त्य के पुत्र योगीराज विश्रवा ने भरद्वाज की कन्या इलविला से विवाह किया था, और इसी से कुबेर की उत्पत्ति हुई थी, बाल्यावस्था से ही कुबेर भगवान ब्रह्मा के साधक बने और ब्रह्मा की साधना कर उन्होंने विशेष सिद्धि प्राप्त की। ब्रह्मा ने उन्हें संसार की समस्त सम्पत्ति का अधिकारी बनाया और कैलाश पर्वत के समीप अलकापुरी के ये स्वामी बने।

सही अर्थों में देखा जाय तो वेदों और पुराणों में

लक्ष्मी की साधनाएँ कम दी गई हैं, इसकी अपेक्षा कुबेर साधना पर विशेष बल दिया गया है, उनके अनुसार यदि जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त करना है, तो कुबेर साधना के द्वारा ही संभव है। इस साधना के निम्न लाभ महर्षियों ने बताये हैंह्व

1. कुबेर साधना सिद्ध करने से धनाधीश कुबेर प्रसन्न होते हैं, और साधक के जीवन में सभी दृष्टियों से समृद्धता एवं सफलता प्रदान करते हैं।
2. इस साधना के द्वारा साधक के जीवन में 'अक्षय कोष सिद्धि' प्राप्त होती है, वह ज्यों-ज्यों खर्च करता है, त्यों-त्यों उसकी सम्पत्ति बेतहाशा बढ़ती ही जाती है, यह पता ही नहीं चलता, कि इतना धन कहाँ से आ रहा है और किस प्रकार से आ रहा है, यह इस साधना की सिद्धि का चमत्कार है।

मेरा अनुभव

मेरे पिताजी वीतरागी थे, मेरी माँ की मृत्यु के बाद उन्होंने संन्यास धारण कर लिया था, उनके जीवन में मैं अकेला ही पुत्र था, परन्तु वे अधिकतर हिमालय में ही विचरण करते रहते थे, नवीन स्थानों का पता लगाना, उच्च कोटि के योगियों और संन्यासियों से मिलना उनका स्वभाव था, हिमालय में ही उन्होंने तीन बार मानसरोवर की यात्रा की थी और पूरे कैलाश पर्वत की परिक्रमा कर अलकापुरी पर्वत पर विचरण किया था।

अपने अंतिम दिनों में वे अत्यन्त कमजोर हो गये थे, एक दिन उन्होंने कुबेर साधना की चर्चा की और बताया कि यह साधना यों तो किसी भी बुधवार को सम्पन्न की जा सकती है, पर ग्रहण के समय, दिवाली या महालक्ष्मी जयन्ती के अवसर पर इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, सौभाग्य से इस वर्ष 21.06.2020 को सूर्य ग्रहण पड़ रहा है।

साधना विधि

मेरे पिताजी ने जिस प्रकार से मुझे इसका प्रयोग और विधि समझाई थी वह अपने आप में महत्वपूर्ण है, मैंने अनुभव किया है कि धनप्रदायक साधनाओं में यह सर्वश्रेष्ठ और अपने आपमें अद्वितीय है। वास्तव में ही जो दुर्भाग्यशाली होते हैं, वे ही ऐसे अवसर को हाथ से जाने देते हैं। साधकों को चाहिए कि वे वर्ष में जब भी अवसर मिले, इस साधना को तो अवश्य ही सम्पन्न करे।

इस ग्रहण के अवसर पर साधक स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपनी पत्नी के साथ या अकेले पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक पात्र में (जो कि स्टील या लोहे का न हो) केसर से स्वस्तिक का चिह्न बनावे, और उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस ढेरी पर एक छोटा सा पात्र या कटोरी रख दे और उसमें धनाधीश कुबेर यंत्र को स्थापित कर दे, यह यंत्र रावण संहिता के अनुसार सिद्ध और चैतन्य होना चाहिए, यदि संभव हो तो इसके साथ ही कुबेर चित्र भी स्थापित कर दे।

शास्त्रों में बताया गया है, कि श्वेत वर्ण, मोटा शरीर, अष्ट दन्त एवं तीन चरणों वाले गदाधारी कुबेर अत्यन्त ही सुन्दर दिखाई देते हैं, और इनके अनुचर यक्ष निरन्तर इनकी सेवा में बने रहते हैं। अप्सराएं इनके सामने नृत्य करती रहती हैं, और इनका सारा शरीर स्वर्ण तथा रत्नों से आच्छादित है।

यदि चित्र नहीं हो तो यंत्र को स्थापित कर दे औरे फर सामने आटे का चार मुंहवाला दीपक लगाकर उसमें घी भर ले और चार बत्तियाँ लगा ले, जिसे चौमुहाँ दीपक कहते हैं।

इसके बाद साधक सबसे पहले संक्षिप्त गणपति पूजन करे, यदि उसके घर में लक्ष्मी का चित्र हो तो सामान्य भाव से लक्ष्मी का पूजन करे और फिर कुबेर चित्र का पूजन कर, उसे स्थापित करे। तत्पश्चात् निम्न यंत्र एक अन्य थाली में बनाये।

धनाधीश कुबेर यंत्र

16	1	14	7
6	4	5	3
15	9	2	8
15	11	7	13

यह चांदी की सलाका या तांबे की सलाका द्वारा अष्टगंध से निर्मित करे, और फिर इसकी पूजा करे। इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान कुबेर का ध्यान करे।

ध्यान

मनुज बाह्य-विमानपरिस्थितिम् गरूड़ रत्न निभं निधि-नायकम्।
शिव-सख मुकुटादि-विभूषितम्, वर-गदे दघतं भज तुन्दिलम्।

इस प्रकार से ध्यान सम्पन्न कर फिर हाथ में जल लेकर विनियोग करेह्न

विनियोग

ॐ अस्य श्री कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषि:, वृहती छन्द, कुबेर: देवता, अक्षय, निधि सिद्धये जपे विनियोग:।

तत्पश्चात् ऋष्यादि-न्यास करेह्न

विश्रवा ऋषये नम: शिरसि,
वृहती छन्द से नम: मुखे
कुबेर देवताय नम: हृदि
अक्षय निधि सिद्धये जपे विनियोगाय नम: सर्वांगे।

ऐसा करने के बाद साधक निम्न प्रकार से अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ अंग न्यास करेह्न

	कर न्यास	अंग न्यास
ॐ यक्षाय	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:
ॐ कुबेराय	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ वैश्रवणाय	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखाये वषट्
ॐ धन-धान्या-धिपतये	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
ॐ अक्षय निधि समृद्धि मे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ देहि द्रापय स्वाहा	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद शुद्ध स्फटिक माला से भगवान् कुबेर का गोपनीय मंत्र आठ माला मंत्र जप सम्पन्न करे। यह मुझे मेरे पिताजी ने अत्यन्त गोपनीय ढंग से दिया था जो कि अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय रूप से चमत्कारिक है।

कुबेर मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्याधिपतये अक्षय निधि समृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

Om Yaskshy Kuberay Vaishravanay Dhandhanyadhipataye Akshaye Nidhi Samriddhi Me Dehi Dapay Swaha.

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब इसी मंत्र से 108 शुद्ध घृत की आहुतियां दे दे, और उस माला को अपने गले में धारण कर ले, और यंत्र को जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां पर स्थापित कर दे। यदि संभव हो तो किसी कन्या को या ब्राह्मण को अपने घर में बुलाकर भोजन करवा दें, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध होता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, कई साधक तो प्रत्येक अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न करते हैं। कहा जाता है, कि जो एक वर्ष तक प्रत्येक अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, उसकी आगे की सात पीढ़ियाँ पूर्ण सम्पन्न और सुख सौभाग्य युक्त बनी रहती है।

साधना सामग्री-450/-

धूमावती साधना

दस महाविद्याओं की साधना करना जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि मानी जाती है, ये दस प्रकार की शक्तियों की प्रतीक होती हैं, और महत्त्वपूर्ण अवसर पर जीवन में जिस शक्ति तत्व की कमी होती है, उस कमी को पूरा करने के लिए महाविद्या की साधना उपासना करना जीवन का सौभाग्य माना जाता है।

'धूमावती' दस महाविद्याओं में से एक हैं, जिस प्रकार 'तारा' बुद्धि और समृद्धि की, 'त्रिपुर सुन्दरी' पराक्रम एवं सौभाग्य की सूचक मानी जाती हैं, इसी प्रकार 'धूमावती' शत्रुओं पर प्रचण्ड वज्र की तरह प्रहार करने वाली मानी जाती हैं। यह अपने आराधक को अप्रतिम बल प्रदान करने वाली देवी हैं जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में सहायक सिद्ध होती ही हैं, यदि पूर्ण निष्ठा व विश्वास के साथ 'धूमावती साधना' को सम्पन्न कर लिया जाए तो।

सांसारिक सुख भी अनायास ही प्राप्त नहीं जाते, उनके लिए भी साधना का बल और मंत्र की सिद्धि आवश्यक है, सुख प्राप्त करना महत्वपूर्ण है, किन्तु उन सुखों का उपभोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। आज के इस प्रतिस्पर्धावादी युग में यह कहाँ संभव है, कि व्यक्ति कुछ क्षण सुख से, आनन्द से व्यतीत कर सके, उसे तो आये दिन कोई न कोई समस्या घेरे ही रहती है, और उन्हीं से जूझते हुए उसकी शक्ति समाप्त होती जाती है, ऐसी परिस्थिति में उसे शारीरिक शक्ति के साथ-साथ दैविक बल की भी आवश्यकता पड़ती है। यह मानव मात्र का स्वभाव है, कि जब चारों ओर परेशानियों के, बाधाओं के, अड़चनों के बादल मंडरा रहे होते हैं, तभी व्यक्ति ईश्वर की अभ्यर्थना करने के लिए समय निकालने के लिए विवश हो ही जाता है।

शारीरिक शक्ति अच्छे खान-पान और योग द्वारा प्राप्त की जाती है, किन्तु दैविक शक्ति को साधना के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष सभी के लिए साधना का द्वार खुला है। प्रत्येक गृहस्थ व संन्यासी के लिए शक्ति-साधना विशेष महत्वपूर्ण होती है, इसके बिना तो जीवन अभावपूर्ण ही होता है।

शक्ति-साधना की तीन श्रेणियां होती हैं - पशु, वीर और दिव्य। घृणा, लज्जा, भय, शंका, जुगुप्सा, कुल,

शील और जाति इन आठ पाशों से आबद्ध जीव 'पशु' होता है, परंतु शक्ति-साधना को सम्पन्न कर वह जीव पाशमुक्त हो 'पशुपति' हो जाता है।

दस महाविद्याओं के क्रम में 'धूमावती' सप्तम महाविद्या हैं, ये शत्रु का भक्षण करने वाली महाशक्ति और दु:खों की निवृत्ति करने वाली हैं। बुरी शक्तियों से पराजित न होना और विपरीत स्थितियों को अपने अनुकूल बना देने की शक्ति साधक को इनकी साधना से प्राप्त होती है।

कहते हैं कि समय बड़ा बलवान होता है, और उसके आगे सबको हार माननी पड़ती है, किन्तु जो समय पर हावी हो जाता है, वह उससे भी ज्यादा बलशाली कहलाता है।

शक्ति सम्वलित होना और शक्तिशाली होना तो केवल शक्ति-साधना के माध्यम से ही संभव है, जिसके माध्यम से दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित किया जा सकता है।

जो भयग्रस्त, दीन-हीन और अभावग्रस्त जीवन जीते हैं, वे कायर और बुजदिल कहलाते हैं; किन्तु जो बहादुर होते हैं, वे सब कुछ अर्जित कर, जो कुछ उनके भाग्य में नहीं है, उसे भी साधना के बल पर प्राप्त करने की सामर्थ्य रखते हैं . . . और यदि साधना हो किसी महाविद्या की, तो उसके भाग्य के क्या कहने, क्योंकि दस महाविद्याओं में से किसी एक महाविद्या को सिद्ध कर लेना भी जीवन का अप्रतिम सौभाग्य कहलाता है।

आज समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, हिंसा और शत्रुता का वातावरण बन गया है, फलस्वरूप यदि व्यक्ति शांतिपूर्वक रहना चाहे, तो वह नहीं रह सकता, अत: जीवन की असुरक्षा समाप्त करने की दृष्टि से यह साधना विशेष महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय है।

धूमावती 'दारुण विद्या हैं, सृष्टि में जितने भी दु:ख हैं, व्याधियां हैं, बाधायें हैं, इनके शमन हेतु इनकी साधना श्रेष्ठतम मानी जाती है। जो व्यक्ति या साधक इस महाशक्ति की आराधना-उपासना करता है, ये उस साधक पर अति प्रसन्न हो उसके शत्रुओं का भक्षण कर लेती है।

महाविद्याओं में धूमावती की साधना बहुत ही कठिन मानी जाती है। इसके लिए साधक को बहुत ही पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए। इस साधना से पूर्व तत्सम्बन्धित दीक्षा लेने का प्रयास करना चाहिए, इससे साधना काल में किसी प्रकार का भय आदि होने की संभावना नहीं रहती।

साधना विधि

1. इस प्रयोग में निम्न सामग्री अपेक्षित होती है - 'प्राणश्चेतना युक्त धूमावती यंत्र', 'दीर्घा माला' तथा 'अघोरा गुटिका'।
2. 30.05.20 के दिन इस महाविद्या साधना को सम्पन्न करें या फिर किसी भी रविवार को।
3. यह रात्रिकालीन साधना है, इसे 9 बजे से 12 बजे के मध्य सम्पन्न करें।
4. साधक को स्नान आदि से पवित्र होकर, साधना कक्ष में पश्चिम दिशा की ओर मुख कर, ऊनी आसन पर बैठकर साधना करनी चाहिए।
5. लाल वस्त्र, लाल धोती और गुरु चादर का प्रयोग करें।
6. यह साधना किसी भी एकान्त स्थल पर, श्मशान में, जंगल में, गुफा में जहाँ कोई विघ्न उपस्थित न हो, करना श्रेयस्कर रहता है।
7. अपने सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर धूमावती चित्र स्थापित करें, फिर किसी प्लेट में 'यंत्र' को स्थापित करें।
8. यंत्र को जल से धोकर उस पर कुंकुम से तीन बिन्दु लाइन से लगा लें, जो सत्व रज एवं तम गुणों के प्रतीक स्वरूप हैं।
9. धूप व दीप जला दें और पूजन प्रारंभ करें -

विनियोग :

दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लें, निम्न संदर्भ को पढ़ें -

अस्य धूमावती मंत्रस्य पिप्पलाद ऋषि, निंवृच्छन्द: ज्येष्ठा देवता, 'धूं'' बीजं, स्वाहा शक्ति:, धूमावती कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

हाथ में लिए हुए जल को भूमि पर या किसी पात्र में छोड़ दें।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ पिप्पलाद ऋषये नम: शिरसि	(दायें हाथ से सिर को स्पर्श करें)
ॐ निवृच्छन्द से नम: मुखे	(मुख को स्पर्श करें)
ॐ ज्येष्ठादेवतायै नम: हृदि	(हृदय को स्पर्श करें)
ॐ धूं बीजाय नम: गुह्ये	(गुह्य स्थान को स्पर्श करें)
ॐ स्वाहा शक्तये नम: पादयो	(पैरों को स्पर्श करें)
ॐ धूमावती कीलकाय नम: नाभौ	(नाभि को स्पर्श करें)
ॐ विनियोगाय नम: सर्वांगे	(सभी अंगों को स्पर्श करें)

कर न्यास :

ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभयां नम:	(दोनों तर्जनी उंगलियों से दोनों अंगूठों को स्पर्श करें)
ॐ धूं तर्जनीभ्यां नम:	(दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनी उंगलियों को स्पर्श करें)
ॐ मां मध्यमाभ्यां नम:	(दोनों अंगूठों से दोनों मध्यमा उंगलियों को स्पर्श करें)
ॐ वं अनामिकाभ्यां नम:	(दोनों अंगूठों से दोनों अनामिका उंगलियों को स्पर्श करें)
ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नम:	(दोनों अंगूठों से दोनों कनिष्ठिका उंगलियों को स्पर्श करें)
ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नम:	(परस्पर दोनों हाथों को स्पर्श करें)

10. **यंत्र, गुटिका और माला** को दोनों हाथों की अंजलि में ले लें, एकाग्रचित्त होकर दीपक की लौ पर मूल मंत्र का 51 बार जप करते हुए 'त्राटक' करें।

11. इसके बाद सामग्री को दोनों नेत्रों से स्पर्श करायें, सामग्रियों को यथास्थान चौकी पर रख दें, 'गुटिका' को यंत्र के सामने रखें।

12. **संकल्प :**

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि अमुक मासे (महीने का नाम बोलें) अमुक दिने (दिन का नाम बोलें) अमुक गोत्रोत्पन्नोहं (अपने गोत्र का नाम बोलें) अमुक शर्माहं (अपना नाम बोलें) समस्त शत्रु भय, व्याधि निवारणार्थाय दु:ख दारिद्रय विनाशाय च श्री धूमावती साधना करिष्ये।

हाथ में लिए जल को भूमि पर छोड़ दें।

13. **ध्यान :**

दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवती धूमावती का ध्यान करें -

अत्युच्चा मलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना,
रुक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चंचला।
प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनु: कृष्णातिरुक्षाप्रभा;
ध्येया मुक्तकत्वा सदाप्रिय कलिर्धूमावती मन्त्रिणा।

अर्थात् 'मलीन वस्त्र पहिने हुए सबको भयभीत करने वाली, मन में विकार को उत्पन्न करने वाली, रूखे बाल वाली, भूख और प्यास से व्याकुल, बड़े-बड़े दांतों वाली, बड़े पेट वाली, पसीने से भरी हुई, बड़ी-बड़ी आँखों वाली, कांतिहीन, खुले बालों वाली, सदा अप्रिय व्यवहार को चाहने वाली भगवती धूमावती का मैं ध्यान करता हूँ, कि वे मेरे जीवन की समस्त विघ्न-बाधाओं का नाश करें।''

14. इस प्रकार भगवती धूमावती के स्वरूप का चिंतन करते हुए बायें हाथ में गुटिका को लेकर मुट्ठी बाँध लें और 'दीर्घा माला' से निम्न मंत्र का 5 माला नित्य तीन दिन तक जप करें -

मंत्र :

।। ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा ।।

15. जप समाप्ति के बाद सभी सामग्रियों को चौकी पर बिछे कपड़े में ही लपेट कर चौथे दिन शाम को किसी जन-शून्य स्थान में जाकर, गड्ढा खोदकर दबा दें और पीछे मुड़कर न देखें।

16. घर आकर हाथ-पैर धो लें।

यह साधना दुर्भाग्य की गूढ़-रेखाओं को मिटाकर सौभाग्य में बदलने की दिव्य क्रिया है। इस साधना के बाद निश्चय ही जीवन में सौभाग्य का सूर्योदय होगा और सम्पन्नतायुक्त एवं सुखी जीवन का प्रादुर्भाव संभव होगा।

साधना सामग्री-
(यंत्र, माला, गुटिका) न्यौछावर - 570/-

जीवन है, तो सब कुछ है, आयु है, स्वास्थ्य है, तभी संसार में किसी अन्य वस्तु की कल्पना की जा सकती है, इसी को कहा गया है 'जान है तो जहान है'। और इसी तथ्य को बहुत पूर्व ही ऋषियों ने अनुभव कर जड़ी-बूटियों एवं अन्य पदार्थों के औषधीय गुणों को संकलित किया और जन्म दिया एक अद्‌भुत शास्त्र को जिसकी तुलना वेद जैसे सर्वोच्च ग्रंथ से की गई और नाम दिया गया आयुर्वेद।

मुलहठी, जिसे मुलेठी भी कहते हैं, एक बहुत ही उपयोगी एवं सुपरिचित वनस्पति है। यह दो वर्ष तक खराब नहीं होती और विभिन्न नुस्खों में औषधि के रूप में प्रयोग की जाती है। इसका सत भी बनाया जाता है जिसे सत मुलेठी या रुब्बे सूस कहते हैं। यह मधुर और शीतवीर्य होती है तथा किसी भी मौसम में प्रयोग की जा सकती है। भावप्रकाश निघण्टु में लिखा है

यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्वीचक्षुष्याबलवर्णकृत।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्यास्वर्य्या पित्तानिलास्र
जित् व्रणशोध विषच्छर्दितृष्णाग्लानि क्षयापहा।।

भाषा भेद से नाम भेद सं. यष्टीमधु। हि. मुलहठी, मुलेठी। इं.-लिकोरिस (Liquorice)।

गुण यह शीतल, शीतवीर्य, भारी, स्वादिष्ट, नेत्रों के लिए हितकारी, बल तथा वर्ण के लिए उत्तम, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, केशों तथा स्वर के लिए गुणकारी है तथा पित्त, वात एवं रुधिरविकार, व्रणशोध, विष, वमन, तृषा, ग्लानि तथा क्षय को नष्ट करने वाली है एवं प्यास, खांसी, वमन, दमा और सिरदर्द के लिए लाभदायक है, नेत्रों के लिए फायदेमंद, त्रिदोषनाशक और घाव को भरने वाली है।

परिचय मुलहठी आमतौर पर पंसारी और किराना की दुकानों पर आसानी से मिल जाती है। इसका पौधा 6 फिट तक ऊंचा होता है। यूं तो यह भारत के जम्मु-कश्मीर और देहरादून में पैदा होती है फिर भी ज्यादातर विदेशों से ही आयात की जाती है। इस पौधे की जड़ बहुत मीठी होती है। इसकी जड़ और काण्ड (तना) को ही अधिकतर प्रयोग में लिया जाता है। यह लकड़ी जैसी होती है और इसका टुकड़ा मुंह में रख कर चूसने से मीठा लगता है। इसमें एक प्रमुख तत्व ग्लिसीराइज़िन (Glycyrrhizin) पाया जाता है। जो मीठा होता है इसके अतिरिक्त ग्लूकोज़, सक्रोज़, मैनाइट, स्टार्च, ऐस्पैरेजिन, तिक्त पदार्थ, राल एक प्रकार का उड़नशील तैल और एक रंजक तत्व पाया जता है। आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसका प्रयोग होता है। यह विपाक में मधुर होती है और शीतवीर्य होता है अतः इसका सेवन किसी भी ऋतु में किया जा सकता है।

उपयोग इसका उपयोग औषधियों में, मीठे जुलाब में, मीठी गोली, खांसी की गोली, गले की खराश और स्वर भंग को ठीक करने वाली गोली, बलवीर्यवर्द्धक नुस्खों में प्रायः होता ही है। आयुर्वेदिक योग मधुयष्टादि चूर्ण, यष्टादि क्वाथ, यष्टी मध्वादि तैल में इसका उपयोग होता है। इसे मुंह में रख कर चूसने से लालारस की वृद्धि होती है, कफ आसानी से निकल जाता है जिससे खांसी में आराम होता है, गले की खराश और स्वर भंग में लाभ होता है। यह रेचक गुण रखती है अतः जुलाब के नुस्खे में इसका प्रयोग होता है। श्वासकष्ट, कफ विकार, खांसी और दमा के लिए यह बहुत उपयोगी होती है। पौष्टिक होने से यह शुक्रमेह और यौनदौर्बल्य को दूर करने वाले वाजीकरण नुस्खों में प्रयोग की जाती है। यह महिलाओं के मासिक ऋतुस्राव की अनियमितता को नियमित करती है। केश एवं नेत्रों के लिए इसका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है। यहाँ कुछ परीक्षित एवं

मतिर्वचः कर्म सुखानुबन्धं सत्वं विधेयं विशदा च बुद्धिः।
ज्ञानं तपस्तत्परता च योगे यस्यास्ति तं नानुपतन्ति रोगाः।। चरक संहिता

सुख देने वाली मति, सुखकारक वाणी और सुख कारक कर्म, अपने अधीन में रहने वाले मन और शुद्ध पापरहित व सात्विक बुद्धि जिनके पास है और जो ज्ञान प्राप्त करने, तप एवं योग का अभ्यास करने में सदैव तत्पर रहते हैं उन्हें शारीरिक एवं मानसिक कोई भी रोग नहीं होते।

अब यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम क्या करते हैं। इतनी जानकारी प्राप्त करके भी यदि हम इसके विपरीत आचरण करते हैं तो इसका फल तो हम भोगेंगे ही पर तब यह न कह सकेंगे कि यदि, हमें ऐसी जानकारी होती तो ऐसा नहीं करते।

लाभकारी सिद्ध होने वाले घरेलू प्रयोग प्रस्तुत किये जा रहे हैं

पौष्टिक औषधि शरीर को पुष्ट, सुडौल और शक्तिशाली बनाने के लिए किसी भी आयु वाले, स्त्री या पुरुष सुबह और रात को सोने से पहले मुलहठी का महीन पीसा हुआ चूर्ण 5 ग्राम, आधी चम्मच शुद्ध घी और डेढ़ चम्मच शहद में मिला कर चाटें और ऊपर से मिश्री मिला ठण्डा किया हुआ दूध घूंट-घूंट कर पिएं। यह प्रयोग कम से कम 40 दिन तक करे। बहुत लाभकारी है।

कफ प्रकोप व खांसी खांसी होने पर यदि कफ चीठा व सूखा होता है तो बार-बार खांसने पर बड़ी मुश्किल से निकल पाता है। जब तक गले से कफ निकल नहीं जाता तब तक रोगी खांसता ही रहता है। 5 ग्राम मुलहठी चूर्ण 2 कप पानी में डालकर इतना उबालें कि पानी आधा कप बचे। इस पानी को आधा सुबह और आधा शाम को सोने से पहले पी लें। 3-4 दिन तक यह प्रयोग करना चाहिए। इसे दुबारा गरम करने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ़ ढक कर रखें। इस प्रयोग से कफ़ पतला हो जाता है और ढीला हो जाता है जिससे बड़ी आसानी से निकल जाता है और खांसी व दमा के रोगी को बड़ी राहत मिलती है।

मुंह के छाले मुलहठी का टुकड़ा मुंह में रख कर चूसने से मुंह के छाले ठीक होते हैं। इसके चूर्ण को थोड़े से शहद में मिला कर चाटने से भी आराम होता है।

हिचकी मुलहठी चूर्ण शहद के साथ चाटने से हिचकी आना बन्द होता है। यह प्रयोग वात और पित्त का शमन भी करता है।

वमन पेट में अम्लता और पित्त बढ़ने पर जी मिचलाता है तबीयत में बेचैनी और घबराहट होती है, उल्टी होने जैसा लगता है पर उलटी होती नहीं। कभी-कभी सिर दर्द भी होने लगता है, जो उलटी होने पर ही ठीक होता है। उलटी लाने के लिए 2 कप पानी में 2 चम्मच (10 ग्राम) मुलहठी चूर्ण डाल कर काढ़ा कर लें। जब पानी आधा कप बचे तब उतार कर ठण्डा कर लें। राई का पिसा चूर्ण 3 ग्राम इसमें डालकर पीने से उलटी हो जाती है जिससे पेट में जमा, पित्त या कफ निकल जाता है और तबीयत हलकी हो जाती है। रोगी को बहुत आराम मिलता है। यह उपाय विषाक्त प्रभाव, अजीर्ण, अम्लपित्त, खांसी और कफ की वृद्धि होने या छाती में कफ जमा होने पर करना बहुत हितकारी होता है।

पेटदर्द वात प्रकोप से होने वाले उदरशूल में ऊपर बताये गये मुलहठी के काढ़े का सेवन आधा सुबह और आधा शाम को करने से बादी का उदरशूल ठीक हो जाता है।

मासिक ऋतुस्राव मुलहठी का चूर्ण 5 ग्राम थोड़े शहद में मिला कर चटनी जैसा बनाकर चाटने और ऊपर से मिश्री मिला ठण्डा किया हुआ दूध घूंट-घूंट कर पीने से मासिक-स्राव नियमित हो जाता है। इसे कम से कम 40 दिन तक सुबह शाम पीना चाहिए।

हृदय रोग वात प्रकोप का दबाव हृदय पर पड़ने से हृदय में पीड़ा होती है। मुलहठी का चूर्ण आधा चम्मच और कुटकी का चूर्ण आधा चम्मच (आधा 3-3 ग्राम) मिला कर सुबह शाम कुनकुने गरम पानी के साथ सेवन करने से आराम होता है।

बलवीर्यवर्द्धक मुलहठी का चूर्ण 5 ग्राम और 5 ग्राम अश्वगन्धा चूर्ण थोड़े से घी में मिला कर चाट लें और ऊपर से 1 गिलास मिश्री मिला मीठा दूध पीएं। लगातार 60 दिन तक यह प्रयोग शुबह शाम करने से खूब बलवीर्य की वृद्धि होती है और शरीर पुष्ट व सुडौल होता है। परीक्षित है।

(विशेष प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह ले लें।)

सूर्यस्तुति

नमो नमो वरेण्याय वरदायांशुमालिने।
ज्योतिर्मय नमस्तुभ्यमनन्तायाजिताय ते।।
त्रिलोकचक्षुषे तुभ्यं त्रिगुणायामृताय च।
नमो धर्माय हंसाय जगज्जननहेतवे।।
नरनारीशरीराय नमो मीढुष्टमाय ते।
प्रज्ञानायाखिलेशाय सप्ताश्वाय त्रिमूर्तये।।

नमो व्याहृतिरूपाय त्रिलक्षायाशुगामिने।
हर्यश्वाय नमस्तुभ्यं नमो हरितबाहवे।।
एकलक्षविलक्षाय बहुलक्षाय दण्डिने।
एकसंस्थद्विसंस्थाय बहुसंस्थाय ते नमः।।
शक्तित्रयाय शुक्लाय रवये परमेष्ठिने।
त्वं शिवस्त्वं हरिर्देव त्वं ब्रह्मा त्वं दिवस्पतिः।।
त्वमोंकारो वषट्कारः स्वधा स्वाहा त्वमेव हि।
त्वामृते परमात्मानं न तत्पश्यामि दैवतम्।। (सौरपुराण 1/31-37)

असंख्य किरणों से सुशोभित होने वाले अंशुमालिन ! आप वर देने में पूर्ण समर्थ एवं ज्योतिःस्वरूप हैं। आपके स्वरूप का कोई अंत नहीं है, इसीलिये आपका नाम अनन्त है। किसी से भी पराजित न होने वाले अजित भगवन्! मैं वरेण्य भगवान् सूर्य देव को बार-बार प्रणाम करता हूँ।

तीनों लोकों के नेत्र स्वरूप त्रिलोकचक्षु भगवन्! आपका श्रीविग्रह त्रिगुणात्मक है, आप अमृतस्वरूप हैं, धर्म और हंस आपके नाम हैं - आप ही संसार की सृष्टि के कारण हैं। जगत् की सृष्टि करने वाले प्रभो! आपको नमस्कार है।

सात अश्वों से वहन किये जाने वाले रथ पर आरूढ त्रिमूर्तिदेव! आप ज्ञान के भण्डार हैं, आपकी अखिलेश नाम से प्रसिद्धि है, सारा संसार आपको शिव स्वरूप में स्मरण करता है और समस्त नर-नारी आपके शरीरस्वरूप हैं। अर्द्धनारीश्वररूप परमेश्वर! आपको बार-बार नमस्कार है।

भूः भुवः, स्वः व्याहृति स्वरूप सूर्य भगवन्! आप त्रिलक्ष, हरितबाहु और हर्यश्व नामसे अर्चित तथा सतत गतिशील हैं। हे आशुगामिन्। आपको नमस्कार है।

भगवन्! एकलक्ष, विलक्ष, बहुलक्ष, एकसंस्थ, द्विसंस्थ, बहुसंस्थ और दण्डी - ये आपके पर्यायवाची शब्द हैं। भगवन्! मैं आपको निरंतर नमस्कार करता हूँ।

रवि एवं परमेष्ठी-संज्ञा से सुशोभित शुक्लमूर्ते! आपमें तीनों शक्तियाँ संनिहित हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आप ही हैं। दिवस्पते! मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

भगवन्! आप ही ॐकार, वषट्कार, स्वाहा और स्वधा के स्वरूप हैं। आप ही परब्रह्म परमात्मा हैं। मैं आपके अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं देखता।

भगवान सूर्य की उपासना

उपनिषदों में

भगवान सूर्य चराचर की आत्मा हैं।

सृष्टि का प्रसवन एवं संप्रेरण इन्हीं के द्वारा होता है। गाययत्री मंत्र द्वारा इन्हीं की उपासना होती है।

छान्दोग्योपनिषद् में 'आदित्यो ब्रह्म इत्यादेश:' (३/१९/१) कहकर आदित्य ब्रह्मरूप में उपासना करने का विधान मिलता है।

उपनिषदों में लक्ष्य भेद की दृष्टि से आदित्य की विविध रूपों में उपासना का वर्णन मिमलता है। उपासना में अभेद दृष्टि की प्रधानता होती है। अतएव तैत्तिरीय उपनिषद् स्पष्ट शब्दों में कहती है कि 'स यश्चायं पुरुषे यश्चासावादित्ये स एक:' (10/4) अर्थात् जो चैतन्य सत्ता इस पुरुष में है तथा आदित्य में है, वह एक ही है। इसीलिये ईशोपनिषद में 'योऽसावसौ पुरुष: सोऽहमस्मि' (16) कहकर 'सोऽहम्' (मैं वह हूँ) भाव से अभेदोपासना का विधान मिलता है। भगवान सूर्य सत्यधर्मा हैं, सत्यलोक के अधिपति एवं विशुद्ध सत्य के प्रकाशक हैं, अतएव उन्हीं से 'सत्य' को आवृत करने वाले हिरण्मय आवरण को दूर करने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये (ईश. 15)।

प्रश्नोपनिषद् में भगवान सूर्य की उपासना प्राणशक्ति के अधिपति के रूप में तथा विश्वप्राण 'वैश्वानर' के रूप में करने का विधान मिलता है। छान्दोग्योपनिषद् में सूर्य के वैश्वानर स्वरूप का स्पष्ट रूप में वर्णन मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में 'सुव:' (6/2) एवं 'मह:' – इन व्याहृतियों के रूप में उपासना करने का वर्णन मिलता है। छान्दोग्योपनिषद् (1/5) में ओंकार, उद्गीथ एवं आदित्य में अभेद का वर्णन मिलता है तथा आदित्य की अधिदैवत उद्गीथ के रूप में उपासना करने का विधान मिलता है। यहीं आदित्य की सप्तविध सामोपासना का वर्णन मिलता है।

यहीं रश्मिदृष्टि से व्यस्त उपासना के फल का भी वर्णन है। त्रयीविद्या के अंग (2/23) एवं तृतीय सवन के देवता के रूप में भी आदित्य की उपासना होती है। छान्दोग्योपनिषद् के तृतीय अध्याय में प्रसिद्ध 'मधुविद्या' का वर्णन है, जिसमें आदित्य की 'मधु' रूप में उपासना करने की विधि का वर्णन है। सूर्य किरणें ही मधुनाडियाँ हैं। छान्दोग्य के अष्टम अध्याय में हृदयनाडी का एवं सूर्यरश्मिरूप मार्ग का परस्पर संबंध बताकर उत्क्रान्ति एवं देवयानगति के लिये इनकी उपासना का वर्णन है। छान्दोग्योपनिषद् के विभिन्न स्थलों में एवं कौषीतकि उपनिषद् में आदित्यान्तर्वर्ती हिरण्मय पुरुष की उपासना का वर्णन है।

सूर्यमण्डल में ब्रह्म की उपासना का विधान महानारायणोपनिषद् में भी मिलता है। इसी उपनिषद् (1/31) में आदित्य, भानु एवं हिरण्यगर्भ के पृथक्-पृथक् गायत्री मंत्र भी मिलते हैं। इसी उपनिषद् में सर्वप्रथम भगवान सूर्य के प्रसिद्ध अष्टाक्षर बीज मंत्र - 'ॐ घृणि: सूर्य आदित्य:' का तथा इसके जप से प्राप्त होने वाले फल का वर्णन मिलता है। बृहदारण्यकोपनिषद् में स्पष्ट शब्दों में आदित्योपासना का स्वरूप आध्यात्मिक अश्वमेध यज्ञ बताया गया है एवं यह कहा गया है कि यह तपने वाला सूर्य ही अश्वमेध है - 'अश्वमेधो य एषतपति' (1/2/7)। बृहदारण्यक में पंचज्योतिर्विद्या, पंचाग्नि-विद्या, मधुविद्या, चक्षुब्रह्म की उपासना तथा अह: संज्ञक विद्या की उपासना के संदर्भ में आदित्य ज्योति एवं आदित्य पुरुष का वर्णन मिलता है। श्वेताश्वतरोपनिषद् (4/2) 'तदादित्य:' कहकर ब्रह्म एवं आदित्य में अभेद मानती है तथा ब्रह्म को 'आदित्य वर्ण' में रूप में वर्णन करती है। ईशोपनिषद् ने भी 'तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमम्' कहकर ब्रह्म के परम तेजोमय कल्याण रूप का वर्णन किया है। मुण्डकोपनिषद में उस ब्रह्म का ज्योतियों की ज्योति एवं शुभ्र तेज के रूप में वर्णन मिलता है। वस्तुत: सूर्य में ज्योति एवं तेज ब्रह्म के ही अंश हैं। सूर्य,चन्द्र तथा नक्षत्र आदि सभी उसी के तेज से प्रकाशित होते हैं - 'येनादित्यस्तपति तेजसा भ्राजसा च' (महानारा. 1/3)।

द्युलोक में स्थित भौतिक सूर्यमण्डल विराट पुरुष का चक्षु है तथा इसी कारण वह सर्वलोक का चक्षु है। मुण्डकोपनिषद् में सूर्य एवं चन्द्र अक्षर पुरुष के नेत्रद्वय के रूप में वर्णित किये गये हैं। ऐतरेयोपनिषद् (2/4) के अनुसार ये आदित्य ही चक्षु होकर पुरुष में प्रविष्ट हुए हैं एवं प्रश्नोपनिषद् (3/8) के अनुसार ये बाह्यप्राण के रूप में उदित होकर चाक्षुष प्राण को अनुगृहीत करते हैं। मैत्री-उपनिषद् के अनुसार ब्रह्म आदित्य एवं प्राण - इन दो रूपों में अपने को धारण किए हुए हैं। आदित्य बहिरात्मा हैं एवं प्राण अंतरात्मा है। आदित्य की बहिरात्मगति से प्राण की अंतरात्मगति का एवं प्राण की अंतरात्मगति से ब्रह्म की बहिरातमगति का अनुमान होता है।

आदित्य रूप ब्रह्म की अभिव्यक्ति अधिदैवत, अधिज्योतिष और अधिभूत - इन सभी लोकों में है। महानारायणोपनिषद् में सविता देवता से अविद्या, भ्रम तथा पाप आदि का नाश करने के लिये एवं बुद्धि, भद्र और सम्पत्ति आदि मिलने के लिये प्रार्थना की गयी है। सूर्य ही प्रकाश, ताप एवं वृष्टि के जनक तथा संवत्सररूपी चक्र का प्रवर्तक हैं वस्तुत: जन्म से लेकर मोक्षपर्यन्त सम्पूर्ण चक्र के केन्द्र एवं प्रवर्तक भगवान सूर्य ही हैं। श्वेताश्वतरोपनिषद में भगवान सविता से ही मन एवं बुद्धि को योगयुक्त करने की प्रार्थना की गयी है। तैत्तिरीयोपनिषद् के महासंहितोपनिषद् (1/3/2) में 'अधिज्योतिष' में आदित्य का उत्तर ज्योति के रूप में उल्लेख है। पंचोपासना में आदित्य की गणना 'अग्नि वायु, आदित्य, चन्द्रमा और नक्षत्र' - इन पाँच अधिभूतों में की गयी है। हिरण्यरश्मिवाले सूर्य की उपासनाशील साधक विश्व के साथ तादात्म्य भाव को प्राप्त करता हुआ ऐसा अनुभव करता है कि वह 'विश्व' हो गया - स्वर्णज्योतिरूप बन गया है - अहं विश्वं भुवनमभिभवाम्योम् सुवर्णज्योती:।

स्वर्गति एवं परममुक्ति दोनों के अधिकारी व्यक्ति सूर्यरश्मिमार्ग से देवयान-मार्गद्वारा अपने-अपने अभीष्ट लोकों में जाते हैं। मण्डकोपनिषद् की ऋचा स्पष्ट रूप से कहती है कि यथाकाल विधिपूर्वक यज्ञ होम करने वाले यजमान को सूर्यरश्मियाँ देवाधिपति के पास ले जाती हैं - 'तज्जयन्त्येता: सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवास:।' बृहदारण्यकोपनिषद् में देवयान के मार्ग का एवं क्रमिकगति का वर्णन है। क्योंकि सत्य एवं प्रज्ञानघन का साधक सूर्य सत्य बल से प्रकाशित होता है - 'सत्येनादित्यो रोचते दिवि' (महा 79/2); अतएव देवयानमार्ग भी सत्य से ही प्राप्त होता है - 'सत्येन पन्था विततो देवयान:' (मुण्डक 3/1/6)। क्रम मुक्ति के अधिकारी योगी का प्राण हृदय स्थ सुषुम्ना नाडी के मार्ग से होकर ब्रह्मरन्ध्र से उत्क्रान्त होते हैं एवं सूर्यरश्मियों के द्वारा देवयान मार्ग से ले जाये जाकर सूर्यद्वार से ब्रह्मलोक में प्रविष्ट होते हैं। वे भोगक्षयपर्यन्त ब्रह्मलोक में निवास करते हैं - 'सूर्यद्वारेण ते विरजा: प्रयान्ति यत्रामृत: स पुरुषो ह्यव्ययात्मा' (मुण्डक. 1/2/11)। भोगक्षय के बाद उनकी आदित्यब्रह्म के स्वरूप में अभेदावस्थिति होती है। तत्पश्चात् सृष्टि-प्रलय होने पर आदित्यब्रह्म का कार्यकाल जब समाप्त हो जाता है तब वे भी आदित्यब्रह्म साथ ही मुक्त हो परब्रह्म में लीन हो जाते हैं।

भगवान सूर्य की उपासना सकाम एवं निष्काम भाव - दोनों प्रकार से की जाती है। चक्षु

भगवान सूर्य की उपासना सकाम एवं निष्काम भाव

दोनों प्रकार से की जाती है।

चक्षु की नीरोगता, बुद्धि की प्राप्ति, रक्तहीनता, चर्मरोग और यक्ष्मा आदि रोगों को दूर करने, पाप को नाश करने एवं रत्न-सम्पत्ति आदि की प्रभुत मात्रा में प्राप्ति के लिये श्रीसूर्य की सकामभाव से उपासना की जाती है।

की नीरोगता, बुद्धि की प्राप्ति, रक्तहीनता, चर्मरोग और यक्ष्मा आदि रोगों को दूर करने, पाप को नाश करने एवं रत्न-सम्पत्ति आदि की प्रभुत मात्रा में प्राप्ति के लिये श्रीसूर्य की सकामभाव से उपासना की जाती है। इसके लिये संकल्पपूर्वक सूर्यबीजाक्षर मंत्र या गायत्री का जप, ध्यान, चाक्षुषोपनिषद अथवा सूर्योपनिषद् का पुरश्चरणयुक्त पाठ, ध्यान एवं अन्य शास्त्रविहित तथा उपनिषत्प्रोक्त उपासना विधि का अनुष्ठान किया जाता है। मुक्ति के लिये निष्कामभाव से उपनिषत् प्रोक्त किसी भी उपासना विधि का आश्रय लिया जा सकता है; क्योंकि कोई भी उपासना अंत में अनन्तता को प्राप्त होकर सत्य ज्ञान एवं अनंतरूप ब्रह्म को प्राप्त कराने वाली हो जाती है। **इस विषम में तीन बातों का ध्यान रखना है।**

(1) उपासना में ध्यान के लक्ष्य का चुनाव अपने उद्देश्य के अनुसार करें। यदि तेजस्वी होना चाहते हैं तो ब्रह्म के तेजरूप का, आनन्द की अनुभूति चाहते हैं तो आनन्दरूप का, शान्ति चाहते हैं तो शांत रूप का तथा ज्ञान चाहते हैं तो ज्ञान रूप का ध्यान करें। ध्यान का जैसा लक्ष्य होगा, वैसा ही फल प्राप्त होगा।

इस विषय में यह भी ध्यान रखने की बात है कि लक्ष्य विषय का सृष्टि में अथ से अंत तक जहाँ तक प्रसार है, वहाँ तक साधक की व्याप्ति एवं उपलब्धि का प्रसार हो जाता है। **यह बात छान्दोग्य उपनिषद के सप्तम अध्याय में भगवान सनत्कुमार ने ऋषि नारद को ब्रह्मोपासना के अनेक रूपों का उदाहरण देकर भली-भांति समझा दिया है। उदाहरण के लिये छान्दोग्य 7/11/2 में उल्लेख है कि जो ब्रह्म की 'तैजस' रूप में उपासना करता है, वह तेजस्वी हो जाता है,** तेजस्वान लोकों को प्राप्त करता है; उसकी सत्ता के किसी भी क्षेत्र में तम नहीं रहता, जहाँ तक तेज की गति है, वहाँ तक उसका कामचार हो जाता है। इसी नियम के अनुसार आदित्य ब्रह्म का उपासक आदित्य रूप हो जाएगा, आदित्य लोक को प्राप्त होगा, उसकी सत्ता के सभी क्षेत्र सत्य के दीप्तज्योति से प्रकाशित होंगे एवं जहाँ तक आदित्य की गति है, वहाँ तक वह इच्छाचारी होगा।

(2) दूसरी बात यह है कि साधक को उपास्य के सम्पूर्ण रूप का स्पष्ट ज्ञान हो। वह खण्ड को ही पूर्ण मान लेने की भूल न करें; अन्यथा लक्ष्यहानि होगी। प्रतीक के रूप में चक्षु, आदित्यमण्डल आदि किसी की उपासना को प्रारंभ करने का, ध्यान में चित्त को एकाग्र करने का बिन्दु तो बनाया जा सकता है, परंतु यह मान लेना कि चक्षु या आदित्य ही पूर्णब्रह्म हैं, नितान्त भूल है; क्योंकि ये ब्रह्म के केवल एक अंशमात्र हैं। इस तथ्य को छान्दोग्योपनिषद् में महाराज अश्वपति द्वारा प्रतिपादित वैश्वानर विद्या में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया गया है। बृहदारण्यकोपनिषद में राजा अजातशत्रु ने भी दृप्तिबालाकि गार्ग्यकी ऐसी ही भ्रान्त धारणा का खण्डन किया है। अतएव उपासना में ध्यान दृष्टि को किसी एक वस्तु या भाव में केन्द्रित करते हुए भी पूर्ण ब्रह्म का ही चिंतन करना चाहिये। आदित्य मण्डल ब्रह्म पुरुष चक्षु, मूर्धा या तेज के रूप में ध्यान का विषय बन सकता है, परंतु यह ध्यान रखना है कि यह लक्ष्यदेश केवल अंश-मात्र है, पूर्णब्रह्म नहीं। सूर्य का ध्यान करते हुए भी सूर्य प्रकाश के आदि स्रोत, अंगी परब्रह्म का ही चिंतन होना चाहिये। अतएव कहा गया है - 'ध्येय:' सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायण: . . . . ?'

(3) तीसरी बात यह है कि प्रतीक एवं प्रतीकार्थ में अंतर को स्पष्ट समझना चाहिये। प्रतीक किसी पदार्थ की ओर संकेत करता है, वह स्वयं संकेतित पदार्थ नहीं बन सकता। उपासना में उपासक प्राय: यही भूल करते हैं। भगवान बादरायण ने भी व्यास-सूत्र में उपासकों के इस भूल की ओर संकेत किया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि आलम्बन प्रतीक में तो ब्रह्म का ध्यान किया जाता है, परंतु ध्यान के आलम्बन के लिये गृहीत किया गया वह प्रतीक ब्रह्म नहीं है। यही बात कठोपनिषद् में बार-बार - 'नैतद् ब्रह्म यदुपासते' अर्थात् जिसकी उपासना की जाती है, वह प्रतीक ब्रह्म नहीं है - यह कहकर स्पष्ट की गयी है।

अत: उपासकगण को चाहिये कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भगवान सूर्य की उपासना के द्वारा स्वर्ण एवं परम लक्ष्य अपवर्ग को प्राप्त करें।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरू से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- गुरु की कृपा से ही सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है, क्योंकि गुरु से बड़ा कोई अन्य तत्त्व नहीं है, अत: मोक्ष मार्ग पर चलने वाले शिष्य को सदैव गुरु का ही चिन्तन, मनन करते रहना चाहिए।
- गुरु कृपा से ही ब्रह्मा सृजन में, विष्णु पालन में तथा रुद्र संहार करने में समर्थ हो पाते हैं, अत: शिष्य को गुरु सेवा को ही परम सौभाग्य समझना चाहिए। समस्त भारतीय ऋषि परम्परा इस बात का जीवन्त प्रमाण है, कि गुरु सेवा द्वारा ही सर्वस्व प्राप्ति सम्भव है।
- यदि शिष्य अपने जीवन में पूर्णता चाहता है, तो उसके लिए गुरु साधना आवश्यक है, क्योंकि गुरु ही परम तत्त्व है।
- शिष्य यदि गुरु मंत्र का जप नियमित रूप से करता है, तो उस जप के तेज से दु:स्वप्न का प्रभाव नहीं होता, और यदि सुस्वप्न हो तो उसका पूर्ण फल प्राप्त होता है।
- शिष्य को चाहिए कि वह व्रत, दान, तीर्थ, तप आदि में अधिक न उलझ कर गुरु को ही अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान दे। जीवन में गुरु के होने से ही ये यज्ञ, जप, तप आदि क्रियाएँ भी फल दे पाने में समर्थ होती हैं।
- गुरु के भीतर स्थित ज्ञान को किसी प्रकार भी खरीदा नहीं जा सकता, उसकी प्राप्ति तो मात्र गुरु को प्रसन्न कर ही की जा सकती है, अत: शिष्य को गुरु के सामने सदैव विनीत भाव से ही रहना चाहिए।
- यदि शिष्य के मन में यह अहंकारी भाव है, कि मैं एक श्रेष्ठ जाति में उत्पन्न हुआ हूँ, मैं बहुत धनाढ्य हूँ, मैं बहुत ऐश्वर्यवान हूँ, मेरा परिवार बहुत प्रतिष्ठित है, मेरा यश बहुत फैला हुआ है, या मैं बहुत विद्वान हूँ आदि, तो उसे गुरु के सम्मुख उपस्थित नहीं होना चाहिए। इन भावों को तिरोहित कर ही गुरु कृपा प्राप्त की जा सकती है।
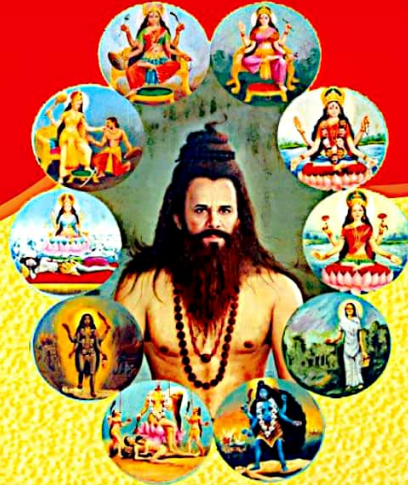
- चिन्ता मत करो, तुम्हारे जीवन का जो अभीष्ट लक्ष है वह इस जीवन में पूरा हो जाएगा। बस जरूरत इस बात की है कि अपने आपको विकारों से दूर रखते हुए नि:स्वार्थ भाव सेवा कार्य करते हुए मेरे द्वारा बताये मार्ग पर चलो।
- क्योंकि तुम्हारे पास एक दिव्य पथ है। चैतन्य गुरु एवं दिशा-दृष्टि स्पष्ट है।
- प्रेम जीवन का अद्वितीय वरदान है और मैंने तुम्हारे होठों को गुनगुनाहट देकर तुम्हारे जीवन में बसन्त का आगमन किया है।
- शिष्य ही तो परिचय होता है इस जगत में अपने गुरु का... और इस गुण से सम्पन्न वह तभी हो सकता है जब अपने आपको गुरु चरणों की शरण में अर्पित कर दे।
- तुम मेरे पुत्र या शिष्य ही नहीं हो, मेरी जीवन्त उपस्थिति के प्रमाण हो।
- तुम में से प्रत्येक शिष्य सीधा मुझसे जुड़ा हुआ है, जो मेरी उपस्थिति का साक्षीभूत स्वरूप है।
- मैंने जिन्दगी भर मेहनत कर ऊसर रेगिस्तान में गुलाब के पुष्प खिलाए हैं, और सूरज से रोशनी झटक कर तुम्हारे आत्म को प्रकाशित किया है।
- अब यह तुम्हारा दायित्व है, कि यह पुष्प मुरझाये नहीं, आत्म प्रकाश धुंधलाए नहीं।
- साधना के पथ पर न तो पुरुष होता है और न कोई स्त्री, वह तो सम्पूर्ण साधक होता है।
- क्या सांस लेना आवश्क है? क्या जीवित रहना आवश्क है?..... और अगर ये सब आवश्यक हैं, तो साधना भी आवश्क है।... और साधना में सिद्धि के लिए दो तत्त्वों की नितान्त अनिर्वाता है गुरु के प्राणों से एक रस होने की किया और इष्ट से पूर्ण साक्षात्कार की किया।
- अनन्त देवी-देवता हैं, अनन्त उपासना पद्धति है, कहां-कहां जाकर सिर झुकाओगे, किन-किन दरवाजों पर जाकर नाक रगड़ोगे, जीवन के दिन तो थोड़े से ही हैं, गिनती के हैं। वे तो ऐसे ही समाप्त हो जाएंगे, फिर
- क्या मिलेगा? जीवन यूं ही भटकते हुए मन्दिरों में, तीर्थों में, साधु-संन्यासियों के पास समाप्त हो जाएगा। यदि तुम्हें सद्गुरु मिल गए हैं, तो सब कुछ छोड़कर उनके चरण क्यों नहीं पकड़ लेते?
- साधक की मात्रा शून्य से प्रारम्भ होकर ब्रह्म तक पहुंचती है। और गुरु के माध्यम से ही ब्रह्म तक की यात्रा सम्भव होती है। जो गुरु से एकाकार होगा, वह ब्रह्म से एकाकार होगा।
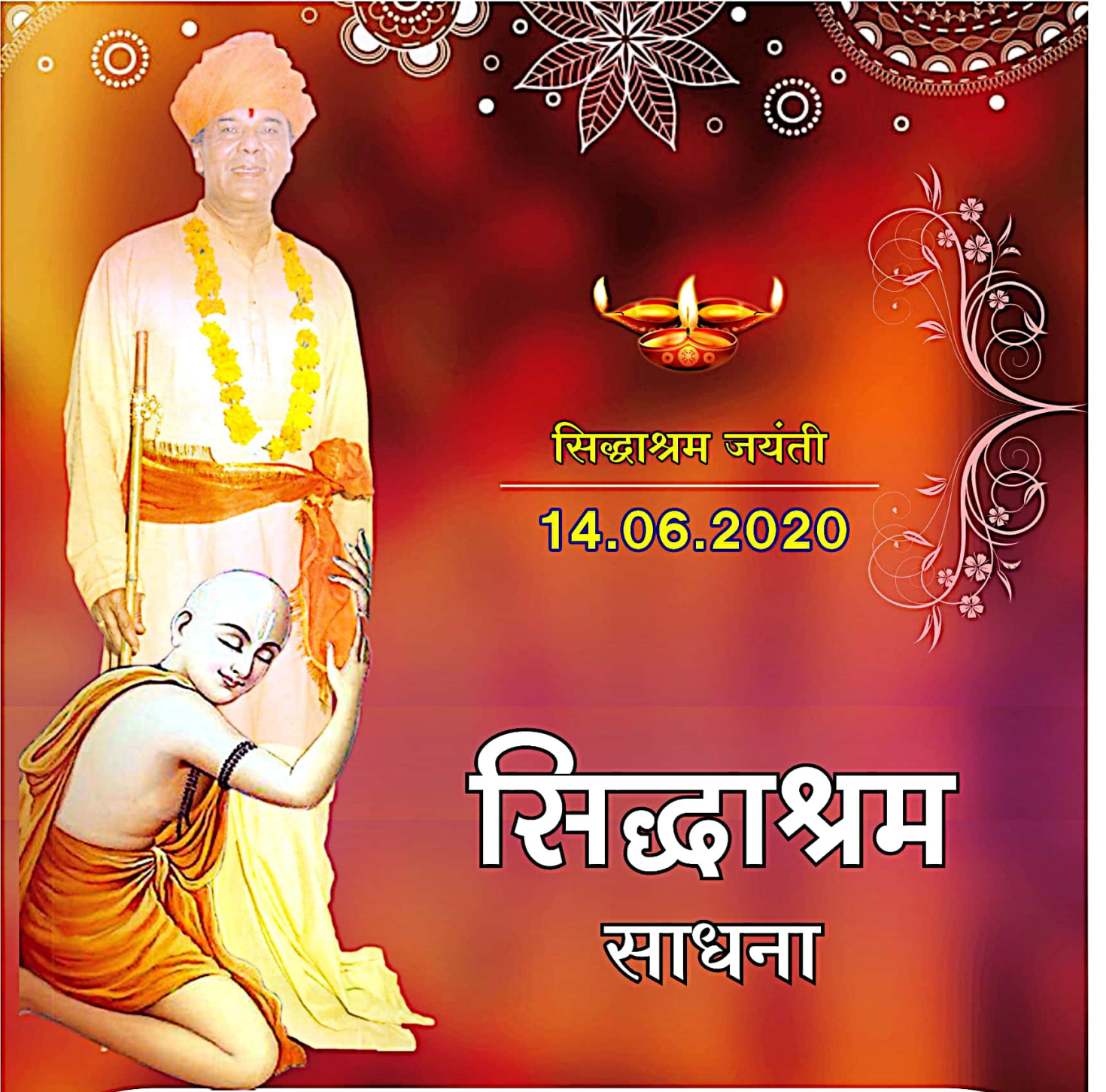
किसी भी शिष्य के जीवन की धन्यता होती है, जब वह अध्यात्म की ओर उन्मुख होता है और अध्यात्म की सम्पूर्णता तब होती है, जब शिष्य सिद्धाश्रम के चिंतन को अपने जीवन में स्थान देता है। जीवन में सिद्धाश्रम के विषम में चिंतन प्रारंभ होने का अर्थ ही है, कि अब शिष्य में नयी चेतना का प्रादुर्भाव हुआ है, अब वह शिष्य सामान्य कोटि का जीव मात्र ही नहीं रह गया है, अब वह हंस की श्रेणी में आने योग्य हो गया है, जिसने अपने पंखों को पसार दिया है . . .

– सिद्धाश्रम जयंती (14.06.20) के अवसर पर प्रस्तुत है, सिद्धाश्रम की चेतना को स्पर्श करता एक दुर्लभ साधना विवरण

जीवन में कुछ पल ऐसे भी होते हैं, जब चित्त स्वत: ही समस्त राग-द्वेषों से मुक्त होता हुआ, किसी शून्य में लीन हो जाता है।

वासनाओं के उद्वेग भूली-बसरी बात हो जाती है, चित्त में चल रहा अनेक कामनाओं का कोलाहल शांत हो जाता है, मोह-ममता से अपने आपको मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है।

तथा विगत जीवन के पीड़ादायक क्षण यूं विस्मृत हो जाते हैं मानो उनका कभी अस्तित्व ही न रहा हो।

लेकिन बस वे पीड़ादायक क्षण ही क्यों? ऐसे में तो समस्त चेतना, समस्त अस्मिता ही किसी शून्य से सम्पृक्त हो, ऐसे अद्‌भुत अनिवर्चनीय प्रकाश के साथ नृत्य करने लग जाती है।

जैसे प्रात: की स्वर्णिम रश्मियों का मधुरिम प्रकाश, किसी घने वृक्ष के झुरमुट से बार-बार आकर नर्तन सा करता झलक जा रहा हो।

.....और झलक कर पता नहीं, किस इंगित को देने के लिए आतुर हुआ जा रहा हो।

कभी तो सहसा कुछ स्वर्णिम राशि सी बिखेर देती हैं वे कोमल किरणें!

तो कभी वे ही कुछ शीतल बन रूपहली सी आभा छलका कर कहने लग जाती है, किसी अनदेखी स्निग्धता के विषय में।

यही होती है शायद प्राणों की वह दशा, जहां से जीवन में कुछ और घटित होने लग जाता है।

- बुलाने लग जाते हैं ऐसे क्षण, अपनी ओर कोई गूढ़ सा संकेत देकर वहां चलने के लिए, जहां इस जगत के वैषम्य से मुक्ति संभव है।

सिद्धाश्रम केवल एक प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी स्थली ही नहीं, देवांगनाओं की क्रीड़ास्थली भर भी नहीं, यहां तक कि केवल तपोभूमि भी नहीं...

सिद्धाश्रम तो स्वमं में जीवन की एक स्थिति है, जो प्राप्त कर सकता है कोई भी साधक, इसी भू-भाग पर रहते हुए, सामान्य गृहस्थ के आवरण में, जीवन को बिना छोड़े हुए।
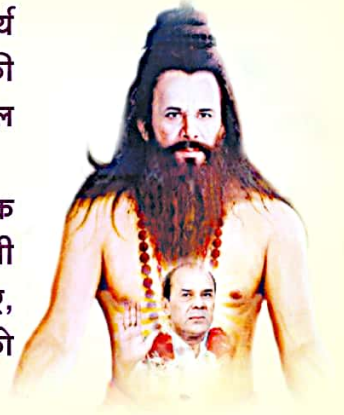
जहां पल-पल अपने आपको दबोच कर जीवन जीने की विवशता नहीं है, जहां कृत्रिम संबंधों के साथ औपचारिकता के आवरण में रहने की बाध्यता नहीं है।

....और न जहां पल प्रतिपल किसी आघात की आशंका है - न प्राणों पर, न चेतना पर, न स्मित पर, न जीवन के नृत्यमय आह्लाद पर।

लेकिन क्या संज्ञा दे सकते हैं, इन प्राणों की दशा की? प्राणगत होते हुए भी, कितनी पृथक होती है यह दशा प्राणों के उस दु:सह्य आवरण से।

उस बोझ से, जो मथ कर रख देता है चित्त को, जब कभी बोध हो जाए वास्तविकता का।

बोध हो जाए इस बात का, है सब कुछ अंततोगत्वा प्रलाप ही और इन प्रलापों के लिए इतनी अधिक वेदना?

इन्हें अर्जित करने के लिए इतनी व्यर्थ की भागदौड़? क्या अर्थ रह जाएगा फिर जीवन का, यदि वहां तक न पहुंच सके जहां सब कुछ नित्य है? केवल नित्य ही नहीं प्रतिपल नूतन भी तो!

यही प्रतिपल नूतन होना ही, तो सिद्धाश्रम का वास्तविक परिचय है। जहां काल अपने क्रूर पंजों को फैला नहीं सकता, जहां मृत्यु उपस्थित हो ही नहीं सकती, जहां क्षययुक्त कुछ है ही नहीं, वस्तुत: वहीं तो नूतनता भी उन्मुक्त हो अपना नृत्य प्रस्तुत कर सकती है।

अन्यथा इस जगत में तो नूतनता यदि दैववश उपस्थित हो भी जाए, तो विषमताओं के ताप में छटपटा कर क्षणांश में अपना अस्तित्व त्याग, जीवन की एक बोझिलता बन जाती है, और यही कारण बन जाता है मन के सारे असंतोष का, कटुताओं व प्राणहीनता का।

जिस जीवन में कोई नूतनता न हो, वह जीवन स्पन्दित हो सकता है तो कैसे? वह तो एक दिनचर्या से अधिक कुछ रह ही नहीं जाता है।

इसी कारणवश सिद्धाश्रम की धारणा केवल अब एक तप: स्थली के रूप में स्वीकार करना अपर्याप्त होगा, और अपर्याप्त ही होगा यह धारणा निर्मित कर लेना, कि सिद्धाश्रम का साक्षात्कार सीधे साधनाओं के माध्यम से हो जाना संभव है।

वस्तुत: एक सिद्धाश्रम पहले साधक के हृदय में आकर उतर जाता है और उसकी उपस्थिति में, उसकी उपस्थिति के प्रकाश में ही आगे का मार्ग स्वत: प्रशस्त होने लग जाता है। एक तपोभूमि होते हुए भी सिद्धाश्रम, तो प्रारंभिक चरणों में भावगत व प्राणगत स्थिति ही है।

यदि हृदय में वह भावभूमि ही नहीं

तप में प्रमाद ना करें

- तप से प्रजापति ने इस सृष्टि का सृजन किया। सूर्य तपा और संसार को कुछ देने में समर्थ हुआ। तप के बल से भगवान शेष पृथ्वी का भार उठाते हैं। शक्ति और वैभव का उदय तप से ही होता है।
- तपाने पर धातुओं से श्रेष्ठ उपकरण बनते हैं सोने के आभूषण बनते हैं। बहुमूल्य आयुर्वेदिक भस्में तपाये जाने पर ही अमृतोपम गुण दिखाती हैं।
- तपस्वी बलवान बनता है विद्वान और मेधावी बनता है। ओजस, तेजस और वर्चस प्राप्त करने के लिए तपश्चर्या का अवलम्बन लेना पड़ता है।
- बिलासी, आलसी, चापलूस और कायर मरते हैं, प्रतिभा भी गवां बैठते हैं।
- उन्हें लक्ष्मी भी छोड़कर चली जाती है वे पराधीन एवं दीन दुर्बल के समान जीते हैं।
- अस्तु तपस्वी होना चाहिए तप में प्रमाद नहीं करना चाहिए।
- जप-तप साधक के अस्त्र है उनके बिना कुछ भी संभव नहीं इससे ही शरीर शुद्धि होती है और लक्ष्य की प्राप्ति भी।

निर्मित हो सकी, कि जिसके आधार पर यह जाना जा सके कि सिद्धाश्रम का परिचय क्या है तो आगे कहां तक की यात्रा के लिए मन में कोई आग्रह निर्मित हो सकेगा?

केवल अध्यात्म के क्षेत्र में ही नहीं इस दैनिक जीवन में भी, जिससे परिचय ही न हो, क्या उसके प्रति मन में कोई आग्रह उमड़ सकता है?

इसी मूलभूत तथ्य को ध्यान में रखकर इस वर्ष दिनांक 14.06.2020 को सिद्धाश्रम जयंती के अवसर पर सिद्धाश्रम प्राप्ति से संबंधित एक विशिष्ट साधना प्रस्तुत की जा रही है, जिसे साधना से अधिक 'परिचय' कहना ही अधिक उचित रहेगा।

वस्तुतः सिद्धाश्रम के विषय में कोई सम्पूर्ण साधना क्रम प्रस्तुत कर पाना, गुरु परम्परा में गोपनीय होने के कारण अत्यंत दुष्कर ही रहा है। जिसके पीछे कारण मात्र इतना ही है, कि ऐसा विशिष्ट ज्ञान हल्के और ओछे व्यक्तियों के समीप जाकर अपनी अर्थवत्ता न खो दे, उपहास के विषय वस्तु न बनने लग जाए।

इसके उपरान्त भी गुरु के चिंतन मर्यादाबद्ध तो हो सकते हैं, किसी परिसीमा में आबद्ध नहीं और संभवतः यही कारण था कि सिद्धाश्रम जयंती के अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा कृपापूर्वक यह साधना रहस्य प्रदान किया गया था जिसे यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रयोग विधि

इस प्रकार की उच्चकोटि की साधना में प्रविष्ट होने वाले साधक के पास ताम्रपत्र पर अंकित सिद्धाश्रम मंत्रों से संस्पर्शित गुरु यंत्र एवं सिद्धप्रदा माला आवश्यक उपकरण के रूप में होनी अनिवार्य होती है, जिसका पहले किसी साधना में प्रयोग न किया गया हो।

उपरोक्त दिवस पर इन्हें लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर, सम्मानपूर्वक स्थापित करें एवं स्वयं भी सफेद धोती को पहन, गुरु पीताम्बर ओढ़ कर सफेद रंग के सूती आसन पर बैठें। इस साधना को प्रातः 5 से 6 बजे के मध्य अथवा रात्रि में दस बजे के पश्चात सम्पन्न करना चाहिए।

यंत्र व माला का दैनिक साधना विधि पुस्तक के अनुसार पूजन करने के पश्चात् गुरु मंत्र की पांच माला मंत्र जप करके निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप सम्पन्न करें -

सिद्धाश्रम चेतना मंत्र

|| ॐ ह्रीं सिद्धाश्रमं भं सं मं पं सं क्षं ॐ नमः ||

OM HREEM SIDDHAASHRAMAM BHAM SAM MAM PAM SAM KSHAM OM NAMAH

साधना के पश्चात् अगले दिन यंत्र व माला को विसर्जित कर दें।

यह साधना सम्पन्न करने पर साधक ध्यान में, विशिष्ट अनुभव प्राप्त होने लगते हैं और साधक चाहे तो गुरुदेव से सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा भी प्राप्त कर सकता है।

न्यौछावर - 450/-

झिलझिलाता सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है

5.6.2020 पूर्णिमा

शुक्र साधना से

जीवन, इच्छा का दूसरा रूप है, इच्छा प्रत्येक मनुष्य को जीवन में आशा दिलाते हुए उसे आगे बढ़ने की ओर, कुछ प्राप्त कर लेने हेतु प्रेरित करती है, वह इच्छा ही आज के जीवन में प्रधान बन गयी है, जिसके कारण प्रत्येक मनुष्य सब प्रकार के सांसारिक सुखों को प्राप्त करना चाहता है, धन के कारण दुखी व्यक्ति धन प्राप्त करना चाहता है, तो युवतियां सुंदरता प्राप्त करना चाहती है, किसी में यश प्राप्त करने की इच्छा रहती है, तो किसी में बल प्राप्त करने की, कहने का तात्पर्य यह है कि सांसारिक इच्छाओं का कोई अंत ही नहीं है।

इन इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रत्येक व्यक्ति प्रयास अवश्य करता है, धन कमाने के लिए हर तरह के प्रयास किये जाते है, सौन्दर्य, रूप, व्यक्तित्व बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रकार के लेप, प्रसाधन सामग्री, विशेष प्रयोग किये जाते हैं, इन सबके बावजूद सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है, जिससे एक ऐसी कुंठा आ जाती है जो कि उसके व्यक्तित्व के विकास को रोक देती है, व्यक्ति निराशावादी हो जाता है, और उसे जीवन भार लगने लगता है, ऐसा क्यों होता है?

जीवन रहस्य : इच्छा एवं आनन्द

जहाँ इच्छा, अभिलाषा, काम, जीवन के सुनहरे पक्ष के प्रतीक हैं, और यही इस सांसारिक जीवन का आनन्द भी है, हर व्यक्ति के मन में न तो परब्रह्म से साक्षात्कार करने की इच्छा होती है, और न ही हर व्यक्ति घर-परिवार छोड़कर संन्यासी बन सकता है, उसे तो अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द लेने की ही इच्छा रहती हे, और जब तक वे इच्छाएं अतृप्त रहती है, उसे संतोष मिल ही नहीं पाता, एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है, लेकिन यह तो आवश्यक है, कि सामान्य इच्छाएं तो पूर्ण होनी ही चाहिए नहीं तो जीवन का क्या अर्थ रह जाता है? जीवन भार समान हो जाता है, और यह जीवन घसीटते हुए पूरा होता है, इस प्रकार के इच्छाहीन अतृप्त जीवन में कहाँ मधुरता है? कहाँ प्रेम है? कहाँ सौन्दर्य है? कहाँ आनन्द है? कहाँ पूर्णता है?

जीवन का रस और सौन्दर्य तो व्यक्ति के स्वयं के अधीन, पूर्ण रूप से तो नहीं है, लेकिन इसके लिए उसे कुछ ऐसे कार्य अवश्य सम्पन्न करने पड़ते हैं, जिससे कि दूसरे उसकी ओर आकर्षित होते हैं, उसके जीवन में उत्साह निरंतर बना रहता है, उसके जीवन का सांसारिक पक्ष उसे श्रेष्ठता प्रदान करता है, जहाँ पुरुषों में कामदेव उस पर प्रसन्न होकर स्थाई रूप से निवास कर लेते हैं, जिससे कि उसके व्यक्तित्व में आकर्षण निरंतर बना रहता है, वहीं स्त्रियों में रति उसमें सुंदरता भर देती है, जिससे कि मन एवं शरीर हर समय तरोताजा, उत्साह से भरपूर एवं प्रसन्न रहता है।

जीवन तो क्षण-क्षण जीने का आनन्द है, प्रत्येक क्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है, और जो क्षण, जो समय चला जाता है, वह तो आपके जीवन में कभी वापस आ ही नहीं सकता है, तो फिर किसी क्षण को क्यों व्यर्थ किया जाए, प्रत्येक क्षण को जीवन रस से, ऐसे आनन्द से सराबोर कर दिया जाए कि आनन्द, काम प्रवाह निरंतर जीवन में दौड़ता जाए, अतृप्त इच्छाएं पूरी होती जायें, इस प्रकार का आनन्द न तो कोई असामान्य स्थिति है, और न ही कोई विकृति।

जहाँ जीवन में आनन्द, आकर्षण, प्रेम, सौन्दर्य नहीं है वह जीवन ही व्यर्थ है, यदि आप किसी से अपनी बात को कहते है, और वह प्रभावित नहीं हो पाता है, तो आपका व्यक्तित्व मिथ्या है, यदि आप किसी की ओर आकर्षित है तो यह भी चाहेंगे कि वह भी आपकी ओर उतना ही आकर्षित हो, आपके जीवन में उत्साह का प्याला निरंतर छलकता रहे।

व्यक्ति और ग्रह

यह तो निश्चित है, कि आकाश मण्डल में जितने भी ग्रह है उन सभी ग्रहों की रश्मियां पृथ्वी पर आती है, और उन रश्मियों के द्वारा ग्रहों का प्रभाव मानव पर पड़ता है, उसी के अनुसार उस व्यक्ति का जीवन और क्रियाकलाप बन जाता है, यही ग्रह-प्रभाव उसकी विचार धारा, उसकी जीवन पद्धति, उसके जीने के ढंग इत्यादि को निश्चित करता है, ग्रहों की गति के फलस्वरूप व्यक्ति के कार्यों में परिवर्तन आता है।

प्रत्येक ग्रह विशेष गुणों को लिए हुए होता है, और उसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन में उन्हीं गुणों, कार्यों पर विशेष रूप से पड़ता है, लेकिन जीवन में प्रत्येक कार्य एक दूसरे से जुड़ा होता है, इसी कारण प्रत्येक ग्रह का प्रभाव उसके पूरे कार्यों पर पड़ता है, यहाँ आगे शुक्र ग्रह एवं उसका किन कार्यों पर विशेष प्रभाव व्यक्ति के जीवन में पड़ता है, विवरण दिया जा रहा है -

शुक्र - रस, सौन्दर्य, आनन्द

ग्रहों के संबंध में विशेष प्रकार का विवेचन करने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान युग में शुक्र ग्रह अपना प्रभाव व्यक्ति के जीवन में विशेष रूप से डालता है, और उसका प्रभाव उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है, शुक्र की दृष्टि से प्रभावशाली व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग से ही दृष्टिगोचर होता है, उसका क्रिया-कलाप निराला ही होता है।

यह शुक्र शारीरिक सौन्दर्य, शारीरिक रचना, स्वच्छता, तेजस्विता, आकर्षण, प्रेम, काम, आनन्द रस, कलात्मकता, दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता, विशेष व्यक्तियों से सम्पर्क, भोग-विलास का कारक ग्रह है, शुक्र की श्रेष्ठता व्यक्ति के जीवन को आनन्द से सराबोर कर देती है, सांसारिक दृष्टि से वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी प्रकार की कमी अनुभव नहीं करता है, उसकी बातचीत में, उसके व्यक्तित्व में एक ऐसा आकर्षण आ जाता है, कि दूसरे उसकी ओर खिंचे चले आते हैं, उसकी बात का प्रभाव दूसरों पर अवश्य ही पड़ता है, एक प्रकार से उसके अंदर वशीकरण के समान शक्ति आ जाती है, यदि ऐसा व्यक्ति मेनका, अप्सरा, यक्षिणी साधना करता है, तो उसे इस प्रकार की साधनाओं में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है, ऐसे साधक जीवन को रस सौन्दर्य एवं आनन्द की दृष्टि से ही देखता है, हर स्थिति में उसमें आशा की भावना अवश्य रहती है।

शुक्र को प्रबल कैसे करें

ऊपर दिये गये विवरण से यह तो स्पष्ट है, कि आपके भौतिक युग में शुक्र के समान जीवन पर प्रभाव डालने वाला कोई दूसरा ग्रह नहीं है, क्योंकि जैसा स्पष्ट है, कि जहाँ जीवन में आनन्द, आकर्षण, प्रेम, सौन्दर्य नहीं है वह जीवन ही व्यर्थ है, यदि आप किसी से अपनी बात को कहते है, और वह प्रभावित नहीं हो पाता है, तो आपका व्यक्तित्व मिथ्या है, यदि आप किसी की ओर आकर्षित है तो यह भी चाहेंगे कि वह भी आपकी ओर उतना ही आकर्षित हो, आपके जीवन में उत्साह का प्याला निरंतर छलकता रहे।

मैंने अपने जीवन में शुक्र प्रधान जितने भी व्यक्ति देखे है, वे व्यक्ति अपने जीवन में कभी दुःखी नहीं रहते हैं, उनमें रूप, सौन्दर्य-रूप को परखने की, उसे प्राप्त करने की, जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द लेने की शक्ति विद्यमान रहती है, यह स्थिति आपके जीवन में भी संभव है, लेकिन इसके लिए अपने जीवन को शुक्र दृष्टि से अनुकूल बनाना आवश्यक है, कई व्यक्तियों में शुक्र प्रभावशाली होता है लेकिन अन्य ग्रहों के विपरीत प्रभाव के फलस्वरूप यह विशेष ग्रह दब जाता है, इसी कारण उनकी इच्छाएं उत्पन्न अवश्य होती हैं, लेकिन पूरी होने से पहले मुरझा जाती है, कार्य प्रारंभ तो श्रेष्ठ रूप से होते हैं, लेकिन अधूरे होकर रह जाते हैं, ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व का तेज धीरे-धीरे मुरझा जाता है, शारीरिक सौन्दर्य के साथ-साथ मन के भीतर की सौन्दर्य भावना, रस भावना, आनन्द भावना, उत्साह भावना मुरझा जाती है।

इच्छाओं की पूर्ति कैसे करें

किसी भी कार्य के प्रारंभ होने और उसका पूरा होने और उसका पूर्ण फल प्राप्त होने की पहली सीढ़ी ही इच्छा है, यह इच्छा शक्ति आपको प्रेरित करती है, कि आपको आगे बढ़ना है और जीवन का आनन्द लेना है, वह आनन्द कोई व्यक्ति श्रेष्ठ वस्त्रों में प्राप्त करता है, तो कोई श्रेष्ठ भवन से, कोई श्रेष्ठ भोजन से, तो कोई सुंदरता के साहचर्य से, तो कोई काम क्रीड़ा से, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा का आकार फैलाता तो रहता है, लेकिन यदि उसका शुक्र प्रबल है तभी उसकी इच्छाएं पूर्ण हो सकती हैं।

कई व्यक्ति शुक्र को प्रबल करने के लिए कुछ रत्नों का सहारा लेते है, जिसमें हीरा (डायमंड) प्रमुख है, लेकिन इसमें दो विशेष स्थितियां है, सर्वप्रथम तो शुद्ध हीरा इतना अधिक महंगा होता है, कि प्रत्येक व्यक्ति के वश के बाहर की बात होती है, और दूसरा यह है, कि हीरा कुछ व्यक्तियों

को ही अनुकूल रहता है, अन्य व्यक्तियों को यह प्रतिकूल प्रभाव तत्काल दे देता है, अत: इस रत्न को पहिनने में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए, इसके साथ यह भी स्पष्ट है, कि रत्नों का प्रभाव अत्यंत सीमित ही रहता है, रत्न पूरे व्यक्तित्व को झंझोर कर जीवन की दिशा को मोड़ नहीं सकते हैं, जब कि साधना में ऐसी शक्ति विद्यमान रहती है कि आप स्वयं चाहे पुरुष हो या नारी, शक्तिपुंज बन जाते है।

शुक्र साधना

शुक्र साधना के संबंध में हजारों वर्षों से विभिन्न ग्रंथों में चाहे रावणकृत 'उड्डीश तंत्र' हो अथवा 'विश्वामित्र संहिता' अथवा 'शाक्त प्रमोद' हो, इन सभी ग्रंथों में शुक्र को प्रधानता देते हुए, वशीकरण एवं आकर्षण से विशेष रूप से जोड़ा गया है, लेकिन शुक्र केवल वशीकरण एवं आकर्षण का ही कारक ग्रह नहीं है, यह तो पूरे व्यक्तित्व में अद्भुत कान्ति देने वाला, स्वच्छता, सुन्दरता, विदेश गमन, पूर्ण तृप्ति एवं आनन्द का कारक ग्रह है।

मैंने अपने अनुभव के आधार पर शुक्र से संबंधित सभी ग्रंथों का अध्ययन करने के पश्चात जो सरल साधना का निचोड़ किया है, वह पत्रिका के प्रत्येक पाठक के लिए निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगा।

इस साधना में विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है, किसी भी शुक्रवार को यह साधना प्रारंभ की जा सकती है, साथ ही प्रति शुक्रवार को सामान्य पूजन कर इसके विशेष मंत्र का नियमित रूप से जप किया जाए तो शुक्र निरंतर प्रबल बनता रहता है, और आपकी इच्छा पूर्ति पूर्ण रूप से संभव हो जाती है।

साधना प्रयोग

कुछ ग्रह दिन में अपना पूर्ण प्रभाव दिखाते हैं और कुछ ग्रह रात्रि में, शुक्र भी इसी प्रकार रात्रि तत्व प्रधान ग्रह है, अत: इसकी साधना रात्रि में ही प्रथम प्रहर के पश्चात् अर्थात् 10 बजे के पश्चात् ही सम्पन्न करनी चाहिए।

इस साधना हेतु दो उपकरणों की विशेष आवश्यकता रहती है, प्रथम तो है, 'शुक्राष्टक यंत्र (ताबीज)' और दूसरा 'काम रूप मणि माला' इसके अतिरिक्त और कोई उपकरण इस साधना में आवश्यक नहीं है।

शुक्रवार की रात्रि को जब आपके मन में शुक्र साधना करने का पूर्ण निश्चय हो, मन प्रसन्न हो, और इच्छा प्रबल हो रही हो, तब अपने पूजा स्थान में अपने शयन कक्ष में अथवा एकान्त में कहीं भी इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है,उस दिन रात्रि को सुंदर स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा स्थान में सुगंधित इत्र इत्यादि छिड़कें, वातावरण में भी ताजगी होनी चाहिए, श्रेष्ठ सुगंधित माला पहले से लाकर रखें, 'शुक्राष्टक यंत्र' को अपने सामने पीले वस्त्र पर बीचों बीच स्थापित करें, वस्त्र के चारों ओर चार लकड़ी की खूटियां बाँधकर उस पर मौली बाँध दें, इसे कीलन कहते हैं, और ग्रहराज शुक्र साधना में यह आवश्यक है क्योंकि शुक्र एक चल देव है, और उसे कीलन द्वारा बांधना आवश्यक है।

सर्वप्रथम अपने हृदय में शुक्र का ध्यान करें तथा यह आह्वान करें कि शुक्र देव आपके भीतर अपना पूरा प्रभाव देते हुए स्थित हो जाये।

शुक्र ध्यान

संतप्तकांचननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं घृतसरोरुहद्वन्द्व शूलम्।
क्रौंचासनं चासुरसेव्यपाद शुक्रं स्मरेत त्रिनयनं हृदयाम्बुजेहम्।।

इसके पश्चात् कामरूप मणिमाला से शुक्र बीज मंत्र का जप प्रारंभ करें, इसी स्थान पर बैठे-बैठे प्रथम शुक्रवार को पाँच मालाएं जप आवश्यक हैं -

शुक्र बीज मंत्र

।। ॐ ऐं जं गीं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः ।।

जब पाँच माला मंत्र पूर्ण हो जाए तो अपने मन में जो भी इच्छा, चाहे वह कार्य संबंधी इच्छा हो, वशीकरण संबंधी इच्छा हो, विवाह संबंधी इच्छा हो अथवा कोई अन्य इच्छा व्यक्त करते हुए पूर्णता प्राप्त करने की प्रार्थना करते हुए शुक्राष्टक यंत्र को अर्पित पुष्प हार स्वयं धारण कर लें और उसी स्थान पर कुछ देर बैठे रहें, उसके पश्चात कामरूप मणि माला धारण कर लें और यंत्र को हाथ में बाँध लें।

यह साधना आने वाले शुक्रवार को केवल तीन माला मंत्र जप से ही करें, इस प्रकार पाँच शुक्रवार तक सम्पन्न करते रहे। जब भी किसी विशेष कार्य के लिए जाना हो, अथवा किसी महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करना हो, उस दिन शुक्राष्टक यंत्र का पूजन अवश्य करें, सामान्य कार्यों के हेतु इस विशेष यंत्र और माला को प्रयोग में न लावें। यह साधना निश्चय ही आपके जीवन में विशेष आनन्द प्रवाहित करने वाली एवं कामनाओं, इच्छाओं की पूर्ति में पूर्ण रूप से सहायक है।

साधना सामग्री पैकेट : 450/-

तंत्र बाधा निवारण दीक्षा
साधक पर
किसी भी
प्रकार का
तंत्र प्रभाव
समाप्त कर
जीवन को
सफल करें
प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका जीवन सुखी एवं समृद्धिशाली हो और इसके लिए वह सतत् प्रयत्नशील रहता है। सुबह प्रातः जल्दी उठकर अपने दैनिक कार्य में संलग्न हो जाता है। दिन भर के कठोर परिश्रम के पश्चात् सायं तक वह अपने व अपने परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था, उनके रहने के लिए, बच्चों की पढ़ाई का खर्चा आदि की व्यवस्था कर पाता है। कई व्यवसायी बड़ी मेहनत से अपने व्यवसाय को स्थापित करते हैं, जिसमें वे उत्पादन के साथ-साथ कई लोगों को रोजगार भी प्रदान करने में सक्षम होते हैं, किन्तु जीवन के इस आपाधापी के युग में यह आवश्यक नहीं है, कि व्यवसाय में निरंतर प्रगति हो या स्थायित्व बना रहे।
• नारायण मंत्र साधना विज्ञान • 8890543002 • 42 • narayanmantrasadhanavigyan.org • मई-2020 •

यदि घर में जवान पुत्र या पुत्री अथवा घर के किसी सदस्य की अचानक मृत्यु हो जाए, तो निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिये, कि किसी ने घर के सदस्यों पर मूठ का प्रयोग किया हैं या मृत्यु का अन्य कोई प्रयोग किया हैं।

जीवन में हम देखते हैं, कि बहुत अधिक परिश्रम करने के बाद भी बहुत कम सफलता मिल पा रहें है, व्यापार में दिन-रात मेहनत करते रहते हैं और समय आने पर उसका जो लाभ होना चाहिए, वह नहीं मिल पाता है। व्यक्ति अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मन-मुटाव नहीं चाहते हैं, परंतु फिर भी प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख-शांति और आनन्द होना चाहिए, वह नहीं मिल पाता है।

तब मस्तिष्क में यह प्रश्न उठता है, कि जब थोड़ा सा परिश्रम करने से दूसरे व्यक्ति व्यापार में लक्ष्मी प्राप्त करके आराम की जिन्दगी व्यतीत करने में सफल हो जाते हैं और हम नहीं कर सकते हैं, तो जरूर इसके पीछे कोई न कोई रहस्य है, कोई न कोई कारण है, जिसे हम भली प्रकार नहीं समझ पाते हैं।

तांत्रिक प्रयोग - मुख्य कारण

जब जीवन में ऐसी स्थिति अनुभव हो, तो यह निश्चित है, कि किसी ने कोई टोना-टोटका या तांत्रिक प्रयोग कर दिया है, जिससे जीवन में जो अनुकूलता और सुख प्राप्त होना चाहिए वह नहीं हो पाता है।

यद्यपि तांत्रिक प्रयोग सरल नहीं हैं, किन्तु आजकल छोटे-मोटे टुच्चे किस्म के कई तांत्रिक बन गये हैं, जो किसी का हित तो नहीं कर पाते, पर उसे नुकसान अवश्य पहुँचा देते हैं।

कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने इस प्रकार के छोटे-मोटे तांत्रिक प्रयोग सीख लिए हैं और वे दूसरों के द्वारा पैसा मिलने पर इस प्रकार का प्रयोग कर देते हैं, इसके कारण सामने वाले की भरी-पूरी गृहस्थी बरबाद होकर रह जाती है।

अभी एक सज्जन अपनी समस्या लेकर आये, वे अच्छे सरकारी पद पर कार्यरत थे। घर में खूब शान, बंगला, कार आदि सब कुछ उपलब्ध था, किन्तु कुछ ईर्ष्यालु लोगों से उनकी शान-शौकत व सुखी जीवन देखा नहीं गया और उन पर तंत्र प्रयोग करवा दिया, जिसके कारण उनके परिवार के सदस्यों की एक-एक कर मृत्यु होने लगी, उन सज्जन को नौकरी से मुअत्तल कर दिया गया। आय के समस्त स्रोत बंद हो गये। साथ ही अपने घर से बेघर हो गये। इस तरह लोगों के साथ तंत्र बाधा के हादसे आये दिन होते हैं।

यह तो वैसी हुई, कि किसी व्यक्ति को चाकू मारने में कोई विशेष हुनर या ज्ञान की जरूरत नहीं होती, कहीं से भी उसके हाथ एक छोटा सा चाकू लग जाता है और वह बिना परिणाम जाने किसी के पेट में चाकू का घाव लगा देता है, परंतु उस घाव को दूर करने में और कटे हुए स्थान की चिकित्सा करने में विशेष ज्ञान, विशेष अनुभव और विशेष औषधि की जरूरत होती है, बिना कुशल डॉक्टर के वह घाव सड़ सकता है, नुकसान हो सकता है और कभी-कभी उससे मृत्यु भी हो सकती है।

इसका तात्पर्य यह हुआ है कि चाकू लगाने में केवल एक क्षण का समय लगता हे, परंतु चाकू लगाने से जो घाव होता है, उसको ठीक करने में पूरा एक महीना लग सकता है। चाकू लगाने में केवल दो रुपये चाकू खरीदने मे खर्च होते हैं, परंतु उससे जो घाव बन जाता है, उस घाव को ठीक करने में सैकड़ों रुपये लग जाते हैं।

ठीक यही बात तांत्रिक प्रभाव की है, तांत्रिक प्रयोग कोई भी कर सकता है, परंतु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते है और एक प्रकार से देखा जाए, तो पूरी जिंदगी अस्त-व्यस्त हो जाती है। हमला करने या तांत्रिक प्रयोग कराने की विद्या सीखने में बहुत ज्यादा साधना की जरूरत नहीं होती, परंतु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया है, तो उसे दूर करने के लिए कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती ही है।

क्योंकि तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करना विशेष विद्वान या जानकार के द्वारा ही संभव है और तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक होता है, कि यह प्रयोग किसने किया है तथा तंत्र की सैकड़ों विद्याओं में से कौन सा तांत्रिक प्रयोग हुआ है और इस तांत्रिक प्रयोग की काट क्या है, किस विधि से या किस प्रयोग से वह तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो सकता हैं इसके लिए तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करना एक श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण उपाय है।

तांत्रिक बाधा के संभावित परिणाम

दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं से हम आसानी से मालूम कर सकते हैं, कि हम पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है कि नहीं। यद्यपि दूसरे कारण भी हो सकते हैं, किन्तु यदि जीवन के सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लग जाए, तो तंत्र प्रयोग की संभावना ही अधिक होती है और आज के युग में इस तरह छोटे-छोटे तांत्रिक हैं, जो विरोधियों से धनराशि लेकर तांत्रिक प्रयोग कर देते हैं और उसके परिणाम स्वरूप परेशानियां उत्पन्न हो जाती हैं।

यहाँ पर कुछ तथ्य दिये जा रहे हैं, जिनके माध्यम से आप यह जान सकते हैं, कि तांत्रिक प्रयोग है या नहीं -

1. यदि स्वयं बहुत बीमार रहें, तबीयत ठीक रहे ही नहीं और इलाज कराने पर भी उसका परिणाम प्रतीत न हो, तो समझ लेना चाहिये कि आप पर प्रयोग हुआ है।
2. यदि आप हर समय चिंता ग्रस्त रहते हैं या बार-बार आत्महत्या करने की भावना मन में आती है या घर बार छोड़कर कहीं दूर चले जाने का विचार मन में आता है, तो समझना चाहिए, कि जरूर किसी ने आप पर तांत्रिक प्रयोग करवाया है।

3. यदि परिवार में कोई न कोई बीमार बना ही रहता है और दवाईयों तथा डॉक्टर पर खर्चा होने के बावजूद भी बीमारी का पता नहीं चल रहा हो या घर से बीमारी समाप्त हो ही नहीं रही हो, घर में डॉक्टर का आना-जाना बना ही रहे, तो निश्चय ही तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

4. यदि विवाह के कुछ वर्ष बीतने पर भी संतान नहीं हो रही हो और डॉक्टरों को दिखाने पर यदि रिपोर्ट सही आ रही हो, कि स्वास्थ्य की दृष्टि से और संतान पैदा करने की दृष्टि से कोई कमी नहीं है, फिर भी संतान नहीं हो रही हो, तो यह समझ लेना चाहिए, कि किसी ने गर्भ बंधन किया है।

5. इसी प्रकार यदि संतान पैदा होकर मर जाती है या बीच में ही गर्भ गिर जाता है, तो निश्चय ही 'गर्भ बंधन प्रयोग' किया गया है, ऐसा समझना चाहिए।

6. यदि घर में जवान पुत्र या पुत्री अथवा घर के किसी सदस्य की अचानक मृत्यु हो जाए, तो निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिये, कि किसी ने घर के सदस्यों पर मूठ का प्रयोग किया है या मृत्यु का अन्य कोई प्रयोग किया है।

7. यदि आपने मकान बनाया है और उसके बाद बराबर कोई न कोई विपत्ति या परेशानी आती है, तो समझ लेना चाहिए, कि इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।

8. यदि आप का स्वभाव हंसमुख है और आप अचानक बराबर कमजोरी अनुभव करते हैं और आपका मनोबल समाप्त हो गया है, जीवन को जीने का उत्साह खत्म हो गया हो, उन्नति की इच्छा ही मर गई हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।

9. यदि भाई-भाई में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी समझौता नहीं हो अथवा एक दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।

10. यदि जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा पार करने के बावजूद भी आपका मकान नहीं बन रहा हो या कोई नई जमीन नहीं खरीद पा रहे हों या मकान अधूरा रह रहा हो, तो निश्चय ही गृह बंधन प्रयोग है, जिसकी वजह से यह परेशानी आपको उठानी पड़ रही है।

11. यदि संतान बराबर अस्वस्थ रहती हो,

इलाज कराने पर भी उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो रहा है या वह ठीक ढंग से पढ़ाई नहीं कर रहा हो अथवा उसका मानसिक विकास भली प्रकार से नहीं हो रहा हो, तो इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।

12. यदि आपके जीवन में आकरण शत्रु बनते जा रहे हों, आप जिसकी भी भलाई करें, वही शत्रु बन जाए या आपको हानि पहुँचाने की कोशिश करें, तो इसका सीधा-सादा तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है।

13. यदि हर समय पति-पत्नी में मतभेद हो, आपके समझाने पर भी पत्नी सही रास्ते पर नहीं चल रही हो या हर समय घर में कलह का वातावरण हो, तो यह कलह तंत्र प्रयोग है।

14. यदि प्रयत्न करने के बावजूद भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों, जो काम दूसरों के लिए आसानी से हो जाते हैं पर आप आसानी से वह काम नहीं कर पाते हैं, तो तांत्रिक प्रयोग के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता है।

15. यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी आपका भाग्योदय नहीं हो रहा हो और हर क्षण बाधाएं आ रही हों, जो उन्नति होनी चाहिए वह नहीं हो, तो इसका तात्पर्य भाग्य बंधन अथवा इसी तरह का कोई तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

16. यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चनें आती हो, प्रयत्न करने पर भी अधिकारी से मतभेद दूर नहीं हो रहे हो, प्रमोशन नहीं हो रहा हो, आप जैसा स्थानांतरण चाहते हैं, प्रयत्न करने पर वैसा नहीं हो रहा हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग ही है।

17. यदि आपके साधन कमजोर हो गये हों, प्रयत्न और परिश्रम के बावजूद भी लक्ष्मी का आगमन नहीं हो रहा हो, ग्राहक नहीं आते हों, लक्ष्मी की वृद्धि नहीं हो रही हो, व्यापार कमजोर पड़ गया हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग के कारण से हो सकता है।

उक्त बिन्दुओं के आधार पर यह आसानी से जान सकते हैं, कि हम वर्तमान परेशानी किस कारण से भुगत रहे हैं और इसका एकमात्र उपाय तंत्र बाधा का निवारण करने से ही संभव है।

ऐसा अनुभव होने पर हम पूज्य गुरुदेव से तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त कर इन दुर्भाग्य की लकीरों को मिटा सकते हैं।

वस्तुत: तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त होना इस कठिनाई के युग में एक वरदान से भी उच्च स्थिति है। यह परम पूज्य गुरुदेव की हम सब पर विशेष कृपा है।

स्वार्थी संसार

एक था किसान उसके किशोर बालक की मृत्यु हो गई। किसान उसे लेकर दाह-संस्कार के लिए निकला। मार्ग में एक सियार मिला, बोला कहाँ जा रहे हो? किसान ने बताया बेटे की मृत्यु हो गई है इसे जलाने ले जा रहा हूँ। सियार ने पहले तो पुत्र की मृत्यु पर शोक जताया, फिर बोला आप भी कितने हृदयहीन हैं, जिस बच्चे को गोद में खिलाया, उसे जलाओगे? आपको कष्ट नहीं होगा। आप बताइए कोई उपाय, किसान के प्रश्न करने पर सियार बोला आदमी का शरीर मिट्टी से बना है, मिट्टी में गाड़ दीजिए, माटी-माटी में मिल जाए। इससे अच्छा और क्या होगा? सियार इतना कह कर एक झाड़ी में छिप गया, किसान गड्ढा खोलने लगा। तब तक एक कौवा आया, बोला बंधु ! क्या कर रहे हो? किसान ने आप बीती सुनाई सियार का उपदेश भी बताया। कौवा बोला आप बहुत भोले जान पड़ते हैं। जानते नहीं सियार कितना चालाक है। वह इस ताक में है कि आप इसे गाड़कर जाएं और फिर वह सपरिवार दावत उड़ाए। किसान ने गड्ढा खोदना बीच में बंद कर दिया फिर आगे चल पड़ा। कौवा भी साथ-साथ उड़ने लगा। बोला भाई बच्चे की मृत्यु पर जितना दुख करें, कम है पर एक बात तो सियार की सच लगती है कि इस बच्चे को आप जलाएंगे? यह तो बड़ा क्रूर कर्म है।

आप कोई अच्छा उपाय बताइए। आपसे अच्छा प्रवक्ता और कौन होगा? कौवा बोला आप इसे यों ही धूप में रखकर चले जाइए। पंचतत्त्व सब अपने-अपने तत्व में अपने आप विलीन हो जाएंगे। किसान ने धन्यवाद दिया। कौवा पेड़ के झुरमुट में छिप गया। किसान अभी स्थान की तलाश में था कि उसकी भेंट एक कछुए से हो गई। अब उसने भी उसी तरह बात की। कछुआ बोला आप जानते नहीं। कौवा अपने स्वार्थवश ऐसा कह रहा है। आप हटे और इसने पूरी बिरादरी का भोज किया। उसने सुझाव दिया आप शव नदी में प्रवाहित कर दीजिए। बच्चे की सद्गति भी हो जाएगी और कोई कष्ट भी नहीं होगा। जैसे ही किसान नदी किनारे पहुँचा घाट पर एक संत विराजमान था, किसान से सारी बातें जानने के बाद उन्होंने किसान से कहा यह कछुआ भी दूसरों की तरह ही चालाक है ज्योंहि आपने इसे नदी में प्रवाहित किया कि यह सब कछुए इसे नोंच-नोंच कर खा जाएंगे। इसलिए किसी के धोखे में न आइए, चलिए चिता लगाइए और दाह-संस्कार कीजिए।

ऐसा ही है यह संसार। पराये तो पराये जिनको आप अपना समझतें है वो भी मौका मिलते ही अपना स्वार्थ सिद्ध करने हेतु स्वार्थी बन जाते हैं। इस संसार में हर व्यक्ति अपने स्वार्थ को ध्यान में रखकर ही व्यवहार करता है अत: सुनिए सबकी पर कीजिए वही जो आवाज आपकी आत्मा से आये क्योंकि वहीं सद्गुरुदेव का निवास है। और यह तभी होगा जब आप स्वयं अपने अन्तर्मन को पवित्र करेंगे और उसका प्रारम्भ है अधिक से अधिक गुरु मंत्र जप करना, गुरु से सम्बन्धित दीक्षाएं लेते रहना एवं सद्गुरुदेव द्वारा पूर्व में बताये गये योग, प्राणायाम एवं भस्त्रिका का अभ्यास करते रहना।

गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा, गुरु एकाकार दीक्षा, गुरु रक्त कण-कण स्थापन, गुरु आत्मएक्य दीक्षा आदि अनेकों अनेक दीक्षाएं आपको पवित्रता की ओर ले जाती हैं साथ ही गुरुमंत्र अत्यन्त आवश्यक है जो कि अपवित्रता को शनैः-शनैः साफ करता हुआ पवित्रता का बोध कराता है। ध्यान रखिए जहाँ पवित्रता है जहाँ कथनी और करनी में अन्तर नहीं है वहीं पर सद्गुरुदेव का निवास है।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – प्रथम सप्ताह का प्रारंभ अनुकूल नहीं होगा। परिवार में किसी की तबियत खराब हो सकती है। आर्थिक तंगी रहेगी। संतान पक्ष कहने के अनुकूल नहीं रहेगा। बाद में कहीं से आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। परिवारिक समस्यायें सुलझेगी, व्यापारियों को बड़ा ऑर्डर मिलेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। विरोधियों को जवाब देने में समर्थ होंगे। आय के स्रोत बढ़ेंगे। शत्रुओं से सावधान रहें। परिवार में मन-मुटाव का वातावरण रहेगा। राजनीतिक क्षेत्र में अवसर हैं। कृषक पैदावार अच्छी होने से प्रसन्न रहेंगे, किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। पुरानी बीमारी गंभीर रूप ले सकती है। पैतृक सम्पत्ति मिल सकती है। जीवन साथी से अनबन हो सकती है। आखिरी दिनों में स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप कायाकल्प दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ–4,5,12,13,14,22,23,24

वृष – प्रथम सप्ताह का प्रारंभ अच्छा रहेगा। प्रयास करने से नौकरी मिलेगी। राजनीति में भी अच्छे अवसर बनेंगे। जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। आय के स्रोत में वृद्धि होगी। विरोधियों को परास्त करने में सक्षम होंगे। गरीबों को सहायता करेंगे। आने वाले समय में किसी समस्या में उलझने के कारण कोई गलत कदम उठाने हेतु मजबूर होंगे, आकस्मिक स्रोतों से धन लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, ऋण लेना पड़ सकता है। राजनीतिक क्षेत्र में दबदबा बढ़ेगा। इस समय के निर्णय श्रेष्ठ होंगे, आत्मविश्वास के साथ निर्णय लें। पुरानी बीमारी गंभीर हो सकती है। कारोबार पर ध्यान रखें नहीं तो आर्थिक नुकसान हो सकता हैं, क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। आप भैरव साधना करें।

शुभ तिथियाँ–6,7,15,16,17,24,25,26

मिथुन – माह का प्रथम सप्ताह अनुकूल है। ईमानदारी से कमाया हुआ धन आपको आगे बढ़ायेगा, मधुर व्यवहार से संकट टलेंगे। प्रलोभन या लालच में न आये, गलत ढंग से आया धन टिकेगा नहीं अशांति लायेगा। परिवारिक समस्यायें एवं अन्य विषम परिस्थितियां हल करने में आप सक्षम होंगे, आप मित्रों की सहायता करेंगे। माह के मध्य में कोई सामाजिक लांछन लग सकते हैं। अत: सतर्कता से व्यवहार करें, बंधु बांधव नाराज हो सकते हैं। तीसरा सप्ताह अनुकूल नहीं है, नया कार्य प्रारंभ करने पर घाटा हो सकता है। परेशानी भी आ सकती है। उलझनें बढ़ेंगी, अंतिम तारीखों में संतों के दर्शन करेंगे, वाहन या मकान बदलने या खरीदे जाने का योग है। यात्रा से व्यापार लाभ होगा। चल-अचल सम्पत्ति का लाभ मिलेगा, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ–1,8,9,17,18,27,28,29

कर्क – प्रारंभ में कोई शुभ सूचना मिल सकती है। कार्य क्षेत्र में परस्पर सहयोग की भावना से आगे बढ़ेंगे। आपका स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है। पारिवारिक सदस्यों की गलत आदतें आपको परेशान करेंगी। विदेश यात्रा की अनुमति मिल सकती है। परिवार में शांति का वातावरण रहेगा। माह के मध्य में किसी भी प्रकार के झगड़े में न फंसे कोई झूठा आरोप लग सकता है। नशे आदि से दूर रहें, सतर्क रहें। वाहन धीमी गति से चलायें। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। दूसरों की भलाई के चक्कर में तनाव न लें। तीसरे सप्ताह में लिया गया निर्णय सही होगा। आखिरी सप्ताह में उतार-चढ़ाव रहेगा, नोक-झोंक से अशांति रहेगी, किसी साजिश का शिकार हो सकते हैं। आखिरी तारीखों में धन प्राप्ति के योग है। कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। आप रोग निवारण साधना करें।

शुभ तिथियाँ– 2,3,10,11,12,20,21,22,29,30

सिंह – प्रथम सप्ताह पक्ष में नहीं है। प्रतिकूल परिस्थितयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अहंकार एवं घमण्ड के कारण अपना काम स्वयं बिगाड़ लेंगे। विद्यार्थी वर्ग सफलता से खुश रहेगा। घरेलू समस्याओं में उलझे रहेंगे। कार्य के सिलसिले में बाहर यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। दोस्त सहयोग करेंगे। आय के साथ व्यय का अनुपात भी रहेगा। किसी और के जमानत आदि में न फंसे। सेहत का ख्याल रखें। अधिकारी वर्ग का सहयोग, कर्मचारियों को प्राप्त होगा, पदोन्नति भी हो सकती है। व्यापारिक यात्रा फायदेमंद रहेगी, वाहन चालन में सावधानी रखें, नशा आदि न करें वरना शारीरिक कष्ट हो सकता है। जीवन साथी का सहयोग परिवारक सुख एवं सहयोग को बढ़ायेगा। आप हनुमान साधना करें।

शुभ तिथियाँ–4,5,12,13,14,22,23,24

कन्या – माह का प्रारंभ शुभकारी रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा, यात्रा हो सकती है। किसी की बातों से भ्रमित न हों। परिवार में अच्छा माहौल रहेगा, पुराने दिये ऋण की वसूली हो

सकती हैं रुके कार्य पूरे होंगे, शत्रु वर्ग छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे, नौकरीपेशा लोगों को परेशानियां आयेगी। स्वास्थ्य की वजह से मानसिक अशांति रहेगी। किसी भी कार्य में हड़बड़ी नुकसान देह होगी। वाहन चालन में सावधानी रखें। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन हो सकता है। महत्वपूर्ण पेपर पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। शत्रुओं से सावधान रहने की जरूरत है। आप समस्याओं को आराम से सुलझा लेगें जल्दबाजी न करें। माह के अंत की तारीख में कोई अनहोनी बात चिंता में डाल सकती है। सरकारी कार्यों में फंस सकते हैं। आप बगलामुखी यंत्र धारण करें।

शुभ तिथियाँ–6,7,15,16,17,24,25,26

तुला – प्रारंभ के दिन सकारात्मक परिणाम देंगे, व्यापारी एवं नौकरी पेशा लोगों को यात्रा से लाभ होगा। सम्मान एवं विद्वानों का साथ मिलेगा। किसी कार्य को अच्छी तरह सोच विचार कर प्रारंभ करें। विरोधियों से सावधान रहें। परिवार में सभी से सहयोग प्राप्त होगा। लालच में सट्टे आदि में धन न लगायें। शत्रु फसाने की कोशिश में है। स्वास्थ्य के लिए समय ठीक नहीं है। जीवन साथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे, संताक्ष पक्ष की ओर से निश्चिंतता रहेगी। आखिरी सप्ताह में सावधानी रखें, आर्थिक हानि हो सकती हे। बिना समझे पैसे न लगायें। आपकी कोई छिपी बात उजागर हो सकती है। माह के अंत में मानसिक परेशानियां दूर होगी। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। आप कोई महालक्ष्मी की साधना करें।

शुभ तिथियाँ–1,8,9,17,18,27,28,29

वृश्चिक – माह का प्रारंभ सकारात्मक परिणाम देगा। सभी की तरफ से तारीफ मिलेगी। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्यक्रमों में रुचि लेंगे। आलस्य त्याग कर कार्यों में लगेंगे, संतान का व्यापार में सहयोग मिलेगा। मंजिल प्राप्ति की ओर बढ़ेंगे। कोई आपको धोखा दे सकता है, न चाहते हुये भी कोई गलत कार्य करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। माह का मध्य अनुकूल नहीं है। शत्रुओं से सावधान रहें। एक अनजान व्यक्ति से मुलाकात आपकी दिनचर्या में बदलाव लायेगी। आत्मिक रूप से सुकुन मिलेगा। किसी और की गलती आप पर थोपी जा सकती है। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत का फल मिलेगा। आवेश में न आयें, संयम रखें अन्यथा कार्य बिगड़ेंगे। इस माह आप दुर्गा साधना करें।

शुभ तिथियाँ–2,3,10,11,12,20,21,29,30

धनु – माह का प्रारंभ असफलतादायक रहेगा। दबाव में आकर कोई निर्णय न लें एवं न किसी पेपर पर हस्ताक्षर करें। परिस्थितियां सुधरेगी, आय में वृद्धि होगी। संतान पढ़ाई में अच्छे नम्बरों से पास होगी। आप अपनी मधुर वाणी से सभी को अपना बना सकेंगे, पिछली की गई मेहनत का फल मिलेगा, शत्रु पक्ष शांत होंगे। किसी धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। विदेश जाने का वीजा हो जायेगा। शेयर मार्केट आपके लिए अभी अनुकूल नहीं है। उच्चाधिकारी वर्ग संतुष्ट नहीं होंगे। कोर्ट कचहरी के मामले परेशान करेंगे, वाहन धीमी गति से चलायें। आप पूरी मेहनत से कार्य में लगे रहेंगे। परंतु सावधान रहे कोई धोखा दे सकता है और आपको नुकसान पहुँचा सकता है। विरोधी प्रसन्नता अनुभव करेंगे। आप इस माह बगलामुखी साधना नित्य करते रहें।

शुभ तिथियाँ–4,5,12,13,14,22,23,24

मकर – माह का प्रारंभ उन्नतिकारक है। मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास से कार्य करेंगे, कामयाबी मिलेगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अपनों का वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी। यात्रा लाभदायक रहेगी। कोई भी काम सोच-समझ कर करें। विद्यार्थी वर्ग मनचाहा परिणाम पाकर खुश रहेगा। आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। नये मकान में प्रवेश का कार्यक्रम संभव है। बिना पढ़े किसी महत्वपूर्ण कागजात पर साइन न करें। घर में अशांति का वातावरण रहेगा, स्वास्थ्य खराब रहेगा सचेत रहें। कैरियर चुनने का समय है। कारोबार में लाभ होगा, रुके हुये रुपये वसूल होंगे, वाहन चालन में सावधानी रखें, लापरवाही से कोई कार्य न करें। इस माह आप गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ–6,7,15,16,17,24,25,26

कुंभ – माह का प्रारंभ शुभकारी है। किसी अच्छे व्यक्ति से मुलाकात होगी, दिनचर्या में बदलाव होगा। रुके कार्य पूरे होंगे, बाद के समय में सावधानी रखें, कोई व्यक्ति आपको फंसा सकता है। आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। आप की मेहनत से आपकी मंजिल आपके पास आती दिखाई देगी। किसी को उधार न दें, शत्रु हावी होने की कोशिश करेंगे। अटके रुपये प्राप्त होंगे। धार्मिक शास्त्रों में रुचि रहेगी। आखिरी सप्ताह श्रेष्ठ नहीं है कष्टकारी रहेगा, सेहत खराब रहेगी, कार्य विपरीत परिणाम देंगे। कोई अप्रिय समाचार भी मिल सकता है। नौकरीपेशा लोगों की तरक्की के अवसर है। आखिरी तारीख में चिंतायें कम होगी। आप भुवनेश्वरी साधना करें।

शुभ तिथियाँ– 1,8,9,17,18,19,27,28,29

मीन – माह का प्रारंभ उत्तम है। विद्यार्थी वर्ग सफलता पाकर खुश रहेगा। बाहरी यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। आर्थिक स्रोतों में वृद्धि होगी, अचानक कोई मानसिक चिंता परेशान करेगी। नौकरीपेशा लोग मनचाही स्थान पर ट्रांसफर न होने से परेशान होंगे। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, घर में खुशी का माहौल रहेगा। माह के मध्य में किसी उलझन में फंस सकते हैं। फालतू के कार्यों से धन व्यय न करें। किसी अनजान से टकराहट हो सकती है। माह के अंत में स्वास्थ्य का ध्यान रखें, आर्थिक परेशानी भी हो सकती है। शत्रु पराजित होंगे। आप पारद मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ–3,10,11,12,20,21,22,29,30

सर्वार्थ सिद्धि योग	– मई – 8,10,23,25,31
रवि योग	– मई – 3,6,13,26,28,31
गुरु पुष्य योग	– मई 28 (प्रातः 5.50 से 7.26 तक)

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.05.2020	शुक्रवार	बगलामुखी जयंती
04.05.2020	सोमवार	मोहिनी एकादशी
06.05.2020	बुधवार	नृसिंह जयंती
07.05.2020	गुरुवार	छिन्नमस्ता जयंती
09.05.2020	शनिवार	ज्ञान जयंती
18.05.2020	सोमवार	अपरा एकादशी
22.05.2020	शुक्रवार	शनि जयंती
30.05.2020	शनिवार	धूमावती जयंती

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई 10,17,24,31)	दिन 06.00 से 08.24 तक 11.36 से 02.48 तक 03.36 से 04.24 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
सोमवार (मई 11,18,25)	दिन 06.00 से 07.36 तक 09.12 से 11.36 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.48 से 03.36 तक
मंगलवार (मई 12,19,26)	दिन 10.00 से 11.36 तक 04.30 से 06.00 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 05.12 से 06.00 तक
बुधवार (मई 13,20,27)	दिन 06.48 से 10.00 तक 02.48 से 05.12 तक रात 07.36 से 09.12 तक 12.24 से 02.48 तक
गुरुवार (मई 14,21,28)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 11.36 तक 04.24 से 06.00 तक रात 09.12 से 11.36 तक 02.00 से 04.24 तक
शुक्रवार (मई 8,15,22,29)	दिन 06.00 से 06.48 तक 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 03.36 तक रात 07.36 से 09.12 तक 10.48 से 11.36 तक 01.12 से 02.48 तक
शनिवार (मई 9,16,23,30)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.30 से 12.24 तक रात 08.24 से 10.48 तक 02.48 से 03.36 तक 05.12 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मई 2020

11. आज शिष्योपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
12. हनुमान जी के मंदिर में बेसन के लड्डुओं का भोग लगायें।
13. प्रात: स्नान पूजन के बाद महालक्ष्मी की आरती अवश्य करें।
14. तुलसी के पेड़ में जल चढ़ायें।
15. निम्न मंत्र का 21 बार जप करके जाएं –

    मंत्र : ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे
16. किसी भैरव मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर बाँट दें।
17. प्रात: भगवान सूर्य को जल समर्पित करें।
18. किसी असहाय को भोजन करा दें।
19. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके घर से जाएं।
20. आज केसर का तिलक करके जाएं।
21. आज सद्गुरुदेव जन्म दिवस पर गुरु गीता का एक पाठ करें।
22. आज शनि साधना सम्पन्न करें।
23. आज भैरव गुटिका (न्यौछावर 150/-) धारण करे शत्रु शांत होंगे।
24. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
25. आज निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं –

    मंत्र : ॐ अन्न पूर्णायै नम:
26. आज प्रात: उठते ही पृथ्वी माता को प्रणाम करें।
27. 'ह्रीं' मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
28. आज के दिन अपने वस्त्रों में पीले रंग को प्रधानता दें।
29. 'ह्लीं' मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
30. आज धूमावती जयंती पर धूमावती साधना सम्पन्न करें।
31. जल में पुष्प के साथ भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।

जून 2020

1. आज प्रात: ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
2. आज स्नान के बाद अन्न दान करें।
3. आज बरगद के वृक्ष को पुष्प चढ़ाकर जल अर्पण करें।
4. आज चना और गुड़ का दान करें सफलता मिलेगी।
5. दाल, चावल, घी, दक्षिणा के साथ किसी गरीब को दान दें।
6. शनि बाधा निवारण हेतु शनि मुद्रिका (न्यौछावर 150/-) धारण करें।
7. आज पक्षियों को दाना डालें।
8. शरीर की स्वस्थता हेतु कायाकल्प गुटिका (न्यौ. 210/-) धारण करें।
9. हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करें तंत्र बाधा से छुटकारा मिलेगा।
10. किसी देवी मंदिर में तेल का दीपक जलायें।

गतांक से आगे....

इबोपी

मणिपुर चक्र जागरण प्रक्रिया

अब तक आप लोगों ने 'इबोपी' यात्रा पथ के दो पड़ाव पार किये हैं – 'मूलाधार चक्र' और 'स्वाधिष्ठान चक्र'...

आप अपने जीवन में अद्वितीय एवं अद्भुत क्षमताओं से मुक्त बनें और मानव जीवन की श्रेष्ठता एवं उच्चता को प्राप्त कर सकें, आपको ऐसी ही शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए अब आपको ले चलता हूँ इस 'इबोपी यात्रा पथ' के अगले पड़ाव पर 'मणिपुर चक्र' पर...

यह चक्र 'अग्नि तत्त्व' का प्रतिनिधित्व करता है। मणिपुर चक्र के पूर्णतः स्पन्दन मुक्त होने से व्यक्ति एक दिव्य शांति से आपूरित हो जाता है।

और फिर हृदय की कोमल भावनाओं का उदय होता है तथा व्यक्ति षोडश गुणों को प्राप्त करता है। ये षोडश गुण हैं – सत्य, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द्र, बंधुत्व, दया, ममता, करुणा, दानशीलता, दृढ़ता, विनम्रता, शुचिता, विवेक, सदाचार, सुविचार एवं कर्त्तव्य निष्ठा।

मानव पैदा होता है और अंत में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, उसका शरीर पंचमहाभूतों में निर्मित होकर पुनः उन्हीं में विलीन हो जाता है। जन्म और मृत्यु के बीच का फासला ही जीवन यात्रा के नाम से जाना जाता है।

सामान्य मानव के लिए इस जीवन यात्रा का पथ पूर्ण रूप से अंधकारमय ही होता है, उसे ज्ञात ही नहीं होता, कि कब क्या घटित हो सकता है, कहाँ यह रास्ता ऊबड़-खाबड़ है, कहाँ-कहाँ ठोकरें लग सकती हैं, कहाँ से वह फिसल सकता है.. आदि-आदि। फलस्वरूप उसे इस यात्रा पथ के चाहे-अनचाहे पड़ावों से गुजरना ही पड़ता है, उनकी खट्टी-मीठी यादों से साक्षात्कार करना ही पड़ता है। ये पड़ाव होते हैं रोगों के, दुःखों के, पीड़ाओं के, कष्टों के, बाधाओं के, समस्याओं के, परेशानियों के....

और उस गहन अंधकार में वह इनसे टकराता-उलझता आगे बढ़ता रहता है। इस बीच कई ऐसे पड़ाव भी आते हैं, जिन्हें व्यक्ति खुशी, प्रसन्नता, उत्साह आदि नामों से भी संबोधित करता है, लेकिन यह उसका भ्रम मात्र ही साबित होता है और कुछ समय बाद यथार्थ के कठोर धरातल पर उसे इस बात का अहसास भी हो जाता है, जब पुनः दुःख, कष्ट, पीड़ा, बाधा रूपी कांटें उसके पैरों को लहुलुहान कर देते हैं, परंतु उन जख्मों के साथ गतिशील होना उसकी मजबूरी होती है। वह किसी सहारे को प्राप्त करने के लिए, प्रकाश की किसी किरण द्वारा इस पथ को आलोकित करने के लिए छटपटाता तो है, इसके लिए प्रयास भी करता है, मगर कालचक्र के इस तीव्र फिसलन भरे पथ पर अधिकांशतः उसे असफलता ही हाथ लगती है।

इस गहन अंधकार युक्त पथ पर उस व्यक्ति के हमम सङ्कर होते हैं काम, क्रोध, लोभ आदि अष्टपाश, जो उस पर हावी होकर उसे अधोगामिता की ओर ही अग्रसर करते हैं और इनसे छुटकारा पाना व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों से संभव नहीं होता, कदाचित उसे इसका बोध भी नहीं होता, कि इस अधोगामी कीचड़ से बाहर निकल कर श्रेष्ठत्व के पथ का अवलम्बन लेना चाहिए... और यदि बोध भी हो, तो इसका तरीका ज्ञात नहीं होता।

इस यात्रा पथ के किसी पड़ाव पर कभी सौभाग्यवश किन्हीं विशेष पुण्यों के जाग्रत होने के फलस्वरूप सद्गुरु खड़े मिल जाते हैं, जो उसके वहाँ से गुजरते ही उसका हाथ थाम कर अपने आगोश में ले लेते हैं, उसके लहूलुहान जख्मों पर वात्सल्य और करुणा रूपी मरहम लगा कर शीतलता प्रदान करते हैं और अग्रसर कर देते हैं एक नवीन पथ पर, जो उनकी तेजस्विता के आलोक से प्रकाशमान होता है, जिस पर काम, क्रोधादि अधोगामी वृत्तियां उसे स्पर्श भी नहीं कर पातीं, जहाँ दुःख, पीड़ा, बाधा, कष्ट, समस्याओं आदि के स्याह साये उसके जीवन को ग्रहण नहीं लगा पाते, जहाँ पग-पग पर ठोकरें नहीं होतीं।

...अपितु होता है उल्लास और मस्ती का आलम, जहाँ उत्साह और उमंग रूपी शीतल वायु बहती रहती है, जहाँ आनन्द की बूँदें अमृत वर्षा के रूप में बरस कर उसके तन-मन को भिगोती रहती हैं, जहाँ प्रेम, दया, करुणा, आदि गुणों की प्रधानता रहती है।

और फिर शुरु होती है एक नवीन यात्रा . . .बूँद से समुद्र बनने की यात्रा, मृत्यु से अमृत्यु की यात्रा, न्यूनता से श्रेष्ठता की यात्रा, अपूर्णता से पूर्णता की यात्रा, शवत्व से शिवत्व की यात्रा . . .

और इसके लिए सद्गुरु समय-समय पर ज्ञान-आलोक प्रदान करते रहते हैं, जिससे यात्रा पथ आलोकित होता रहे और स्पष्टतः उसका बोध हो सके एवं उस पर चल कर व्यक्ति अपने लक्ष्य तक निर्विघ्नता के साथ गतिशील हो सके, उस लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

'इबोपी' भी एक ऐसा ही ज्ञान आलोक है, जो आपके जीवन को आलोकित करने और आपको वास्तविकता का बोध कराने के लिए है . . .और जिन्होंने इस प्रकाश को अपने जीवन में स्थान दिया है, उनके चेहरों पर छाई मुस्कान इस बात की द्योतक है, कि जनसामान्य के लिए यह पथ कितना सरल, सुगम और उपयोगी है।

इबोपी यात्रा के तीसरे चरण में हम तीसरे पड़ाव - तृतीय चक्र या 'मणिपुर चक्र' के आलोक से अपने जीवन-पथ को आलोकित करेंगे। इस चक्र का पूर्णतः चैतन्य होना अपने आपमें कोई सामान्य घटना नहीं, अपितु जीवन की एक ऐतिहासिक घटना है, जो जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन करने में समर्थ है, क्योंकि इसका प्रभाव ही इतना अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं व्यापक है।

यह चक्र व्यक्ति के नाभि प्रदेश में स्थित होता है और भारतीय वैदिक सिद्धांत के पंच महाभूतों - भूमि, जल, अग्नि, वायु और ईथर (आकाश) - में से 'अग्नि तत्त्व' का प्रतिनिधित्व करता है। नाभि को ही मानव जीवन का आधार बताया गया है, गर्भस्थ शिशु नाभि के द्वारा ही प्राणवायु और भोजन ग्रहण करता है।

मणिपुर चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त होने से व्यक्ति एक दिव्य शांति से आपूरित हो जाता है, उसके विचार, उसके व्यवहार आदि में अद्वितीय परिवर्तन आ जाता है तथा वह ध्यानावस्था में जाने लग जाता है।

अग्नि का यह गुण है, कि वह अपने सान्निध्य में आने वाली प्रत्येक वस्तु को जला देती है, जब पाप-दोषों से युक्त सामान्य व्यक्ति इस पड़ाव से गुजरता है, तो उसके समस्त पाप-दोष जल कर समाप्त हो जाते हैं और वह इनसे मुक्त हो जाता है फिर क्रोध, ईर्ष्या, छल, द्वेष, झूठ, व्यभिचार आदि उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाते।

....और फिर हृदय की कोमल भावनाओं का उदय होता है तथा व्यक्ति षोडश गुणों को प्राप्त करता है। ये षोडश गुण हैं-सत्य, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द्र, बंधुत्व, दया, ममता, करुणा, दान शीलता, दृढ़ता, विनम्रता, शुचिता, विवेक, सदाचार, सुविचार एवं कर्त्तव्य निष्ठा।

इन गुणों के विकास के बाद ही व्यक्ति सही अर्थों में मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। इससे पूर्व तो वह पशु वृत्तियों के ही बंधन में जकड़ा रहता है, क्योंकि भूमि तत्त्व और जल तत्त्व गुरुत्वाकर्षण शक्ति से प्रभावित रहते हैं और इनकी सहज गति गुरुत्वाकर्षण बल की दिशा में ही होती है। अग्नि तत्त्व पर गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव नहीं पड़ता और यह सहज ही ऊर्ध्वगति को प्राप्त होता है

इस चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त होते ही उपरोक्त सभी गुण उभर कर सामने आ जाते हैं और जीवन ऊर्ध्वमुखी होता है।

दोषों तथा वृत्तियों के पाश से मुक्त होने पर व्यक्ति के चेहरे और शरीर के चारों ओर स्थित चुम्बकीय शक्ति के घनत्व में कई गुणा वृद्धि होती है, उसकी वाणी एक ओज, एक विशेष प्रभाव से

युक्त हो जाती है और उसके मुख से उच्चरित एक-एक शब्द अटल सत्य होता है।

मणिपुर का आकार 'दस दल वाले कमल' के समान माना गया है। इस कमल का रंग 'नीला' होता है, जो कि मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने के पश्चात् प्रकट होने वाली रश्मियों का रंग है।

मणिपुर चक्र को पूर्णतः चैतन्यता प्रदान कर निम्न भौतिक, आध्यात्मिक एवं चिकित्सकीय उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं -

1. मणिपुर चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त एवं चैतन्य होने पर अग्नि तत्त्व पर नियंत्रण स्थापित होता है और जीवन ऊर्ध्वगामी बन जाता है।
2. इसके पूर्णतः चैतन्य होने से पाचन क्रिया से संबंधित सभी नाड़ियां चैतन्य अवस्था प्राप्त करती हैं और पेट से संबंधित सभी व्याधियों का निराकरण हो जाता है।
3. यदि व्यक्ति को पीलिया रोग हो, तो वह समाप्त हो जाता है।
4. मणिपुर के पूर्णतः चैतन्य होने पर पित्ताशय की सभी बीमारियां दूर हो जाती हैं।
5. यदि किसी व्यक्ति को मधुमेह रोग हो, तो वह जड़ से समाप्त हो जाता है।
6. मणिपुर चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त होने पर शरीर के सभी अंगों एवं नाड़ियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त होने की क्रिया प्रारंभ हो जाती है।
7. व्यक्ति को योग का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और वह अनुशासित जीवन जीता हुआ जीवन को अध्यात्म के पथ पर अग्रसर करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।
8. यदि व्यक्ति आकाश गमन की साधना सम्पन्न कर रहा हो और उसमें उसे सफलता नहीं मिल पा रही हो, तो मणिपुर चक्र के चैतन्य होने के पश्चात् इस साधना की सभी बाधाएं समाप्त हो जाती हैं और सरलता से सफलता प्राप्त हो जाती है।
9. मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर जल गमन साधना की भी सारी बाधाएं समाप्त हो जाती हैं और व्यक्ति को जल पर चल पाने की क्षमता प्राप्त हो जाती है।
10. यदि व्यक्ति अदृश्य सिद्धि साधना सम्पन्न करना चाहता हो, तो भी यह प्रयोग अत्यधिक उपयोगी है। मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर अदृश्य सिद्धि साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है।
11. इस चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त होने पर व्यक्ति को पृथ्वी की सतह पर ही वायु वेग से दूरी तय करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है।
12. इस प्रयोग की सफलता के उपरांत व्यक्ति सभी जीवों, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि से सूक्ष्म तरंगों द्वारा सम्पर्क स्थापित करने में समर्थ होता है और जंगली हिंसक पशुओं को भी आज्ञा मानने के लिए बाध्य कर सकता है।
13. जो व्यक्ति आयुर्वेद के क्षेत्र में उतरना चाहता हो या पहले से ही इस क्षेत्र में हो, परंतु इच्छित सफलता नहीं प्राप्त कर पा रहा हो, उसके लिए यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूलता प्रदान करने वाला है, क्योंकि मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य हुए बिना आयुर्वेद में पूर्णता प्राप्त करना संभव ही नहीं है।
14. मणिपुर चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त होने पर व्यक्ति को एक ही आसन पर स्थिर रहने की क्षमता प्राप्त होती है और वह मनचाहे समय तक बैठ सकता है तथा अत्यधिक लम्बी साधनाएं भी सहजता से सम्पन्न कर सकता है।
15. इससे श्वास को नियंत्रित करने की प्रक्रिया का प्रारंभ हो जाता है और व्यक्ति प्राणायाम आदि क्रियाओं में निष्णात् होने लगता है।
16. मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर शरीर में निहित शक्ति को नियंत्रित करने की क्रिया का ज्ञान हो जाता है।
17. शरीर में अग्नि तत्त्व की प्रधानता होने पर व्यक्ति पर वातावरण का असर नहीं होता।
18. मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने से प्रज्वलित होने वाली अग्नि में व्यक्ति के इस जन्म के और पूर्व जन्मों के समस्त पाप-दोष समाप्त हो जाते हैं और वह निर्मल, शुद्ध, दिव्य बन जाता है।
19. व्यक्ति के अंदर षोडश गुणों का प्रादुर्भाव होने से विलक्षण नेतृत्व शक्ति का विकास होता है तथा वह मानव कल्याण के हित में श्रेष्ठ कार्यों का सम्पादन करने में समर्थ होता है।

20. मणिपुर चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर व्यक्ति पर अष्ट पाशों का प्रभाव नहीं पड़ता और इनसे मुक्ति की क्रिया प्रारंभ हो जाती है।
21. मणिपुर चक्र की उच्चतम देन है - 'ध्यान', जिसका अर्थ है - चैतन्य अवस्था प्राप्त कर दिव्य आनन्द की अनुभूति करना। इस प्रकार व्यक्ति घंटों ध्यान चिंतन की अवस्था में रह सकता है तथा अपने आपको और अधिक आध्यात्मिक उत्थान के लिए तैयार कर सकता है।

ये सभी उपलब्धियां अपने आपमें अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं दिव्य हैं और मानव जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने में समर्थ हैं।

इस साधना को सम्पन्न करना जीवन में सौभाग्य को स्थान देकर इसे अद्वितीयता की ऊंचाइयों की ओर अग्रसर करने की क्रिया है।

साधना विधान

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए 'मणिपुर यंत्र' की आवश्यकता होती है, जो कि प्राण प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध हो।

किसी भी गुरुवार को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि दैनिक नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले रंग के आसन पर बैठ जाएं, दिशा उत्तर या पूर्व की ओर हो। सामने बाजोट पर पीले रंग का ही वस्त्र बिछा कर उस पर 'मणिपुर यंत्र' को स्थापित करें।

सबसे पहले गुरुदेव का ध्यान कर उनका पूजन सम्पन्न करें।

ध्यान

नमामि निखिलं दिव्यं, गुरुं तत्त्वस्वरूपिणं।
यस्य प्रसादमादाय, कुण्डलिनी चक्रासते।।

गुरुदेव के पूजन के उपरांत मणिपुर यंत्र का भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प, दीप तथा नैवेद्य चढ़ा कर पूजन करें। पूजन के उपरांत मणिपुर यंत्र को ध्यान पूर्वक देखते हुए (यदि संभव हो, तो त्राटक करते हुए) पूर्ण एकाग्र होकर निम्न मंत्र का शक्ति माला से 16 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।। ॐ रं जाग्रय स्फोटय ॐ फट् ।।

ऐसा तीन दिनों तक नित्य करें। ऐसा करने पर यंत्र में संग्रहीत शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित मणिपुर चक्र में हो जाता है। इस स्वरूप मणिपुर चक्र के स्पन्दन में वृद्धि हो जाती है और वह चैतन्यता को प्राप्त करता है। तीन दिन बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

अब उपरोक्त 21 बिन्दुओं में से आपकी कोई इच्छा है, तो किसी भी गुरुवार को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जायें और गुरु पूजन सम्पन्न कर अपनी इच्छा पूर्ति का संकल्प लेकर मणिपुर चक्र पर ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक जप करें।

ऐसा करने से मणिपुर की शक्ति स्पन्दित होकर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आपकी इच्छा पूर्ति हो सकेगी।
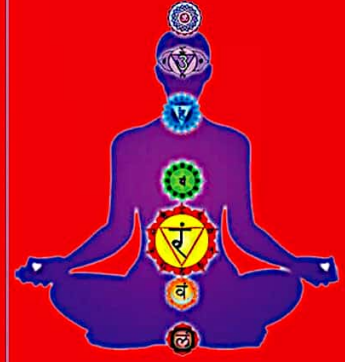
साधना सामग्री- 450/-

साधकों को एक बात निश्चित रूप से हृदयंगम कर ही लेनी चाहिए, कि जब तक मन शांत, शीतल एवं स्निग्ध नहीं होगा, तब तक किसी आध्यात्मिक उपलब्धि का होना तो दूर, भौतिक उपलब्धि भी नहीं होगी।

योग

धनुरासन

विधि

इस आसन में शरीर की आकृति खींचे हुए धनुष जैसी बनती है अत: इसको धनुरासन कहा जाता है।

ध्यान मणिपुर चक्र में। श्वास नीचे की स्थिति में रेचक और ऊपर की स्थिति में पूरक।

भूमि पर बिछे हुए कम्बल पर पेट के बल उल्टे होकर लेट जायें। दोनों पैर परस्पर मिले हुए रहें। अब दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ें। दोनों हाथों को पीछे ले जाकर दोनों पैरों को टखनों से पकड़ें। रेचक करके हाथ से पकड़े हुए पैरों को कसकर धीरे-धीरे खींचे। जितना हो सके उतना सिर को पीछे की ओर ले जाने की कोशिश करें। दृष्टि भी ऊपर एवं पीछे की ओर रहनी चाहिए। समग्र शरीर का बोझ केवल नाभिप्रदेश के ऊपर ही रहेगा। कमर से ऊपर का धड़ एवं कमर से नीचे पूरे पैर ऊपर की ओर मुड़े हुए रहेंगे।

कुम्भक करके इस स्थिति में टिके रहें। बाद में हाथ खोलकर पैर तथा सिर को मूल अवस्था में ले जायें और पूरक करें। प्रारंभ में पाँच सेकण्ड यह आसन करें। धीरे-धीरे समय बढ़ाकर तीन मिनट या उससे भी अधिक समय इस आसन का अभ्यास करें। तीन-चार बार यह आसन करना चाहिए।

लाभ : धनुरासन के अभ्यास से पेट की चरबी कफ होती है। गैस दूर होती है। पेट के रोग नष्ट होते हैं। कब्ज में लाभ होता है। भूख खुलती है। छाती का दर्द दूर होता है। हृदय की धड़कन दूर होकर हृदय मजबूत बनता है। गले के तमाम रोग नष्ट होते हैं। आवाज मधुर बनती है। श्वास की क्रिया व्यवस्थित चलती है। मुखाकृति सुन्दर बनती है। आँखों की रोशनी बढ़ती है और तमाम रोग दूर होते हैं। हाथ-पैर में होने वाला कंपन रुकता है। शरीर का सौन्दर्य बढ़ता है। पेट के स्नायुओं में खिंचाव आने से पेट को अच्छा लाभ होता है। आँतों पर खूब दबाव पड़ने से पेट के अंगों पर भी दबाव पड़ता है। फलत: आँखों में पाचक रस आने लगता है इससे जठराग्नि तेज होती है, पाचन शक्ति बढ़ती है। वायुरोग नष्ट होता है। पेट के क्षेत्र में रक्त का संचार अधिक होता है। धनुरासन में भुजंगासन और शलभासन का समावेश हो जाने के कारण इन दोनों आसनों के लाभ मिलते हैं। स्त्रियों के लिए यह आसन खूब लाभकारक है। इससे मस्तिष्क धर्म के विकार, गर्भाशय के तमाम रोग दूर होते हैं।

धूमावती दीक्षा

धूमावती दीक्षा प्राप्त होने से साधक का शरीर मजबूत व सुदृढ़ हो जाता है। आए दिन नित्य प्रति ही यदि कोई रोग लगा रहता हो, या शारीरिक अस्वस्थता निरंतर बनी ही रहती हो, तो वह भी दूर होने लग जाती है। उसकी आँखों में प्रबल तेज व्याप्त हो जाता है, जिससे शत्रु अपने आप ही भयभीत रहते हैं। इस दीक्षा के प्रभाव से यदि किसी प्रकार की तंत्र बाधा, प्रेत बाधा आदि हो, तो वह भी क्षीण हो जाती है। इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद मन में अद्भुत साहस का संचार हो जाता है और फिर किसी भी स्थिति में व्यक्ति भयभीत नहीं होता है। तंत्र की कई उच्चतम क्रियाओं का रहस्य इस दीक्षा के बाद ही साधक के समक्ष स्वतः धीरे-धीरे खुलने लगता है।

मंत्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

योजना केवल 30 मई 2020 को एक दिन के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खातें में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 58 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

27.06.2020 or Any Sunday

Negate The Influence Of Rahu In Your Life

Surya Vigyan Sadhana

According to the science of astrology the nine planets determine the course of life for a human. There can be no doubt that heavenly bodies do have an effect on one's life and even modern science is accepting this fact today.

Among these nine planets two planets Rahu and Ketu are called shadow planets because they are not actual planets. This is why their existence can be very confusing for the common man.

But still their effect on life is definite. And what more they are natural malefics with very strong influence on the natal chart.

Together they also form a very negative combination called ***Kaal Sarpa Yoga*** in which all other planets are placed between these two planets. The presence of such a combination can make one lead a very ordinary life even though one might be very talented and skilled.

The effect of Rahu can lead to obstructions in life. Where life could have been smooth it is left turbulent and uncertain.

But this does not mean that one should fear this planet. Many people believe that the negative effect of Rahu is very dangerous and it cannot be remedied. But this is not true. Through Sadhanas this negative planet can easily be controlled.

Rahu being malefic in one's natal chart or the negative influence of Rahu in one's life actually denotes lack of spiritual energy in life. This leads to a situation where one is constantly faced by difficulities, obstacles and problems which one is not able to overcome.

The effect of Rahu cannot be negated by worshipping it. The only way is to increase one's own spiritual power.

The significator of soul or spiritual power is sun. It is by imbibing the power of the sun that Rahu's negative influence can be best neutralised.

The negative influence of the shadow planet can manifest in many forms-enemies, failure in life, loss of respect, poverty, disease and tension.

All these can be removed from one's life through the following Sadhana which is based on ***Surya Vigyaan*** (the science of tapping the energy of sun).

On a **Sunday** try this ritual early morning when the sun is rising. Have a bath and wear clothes which are either red or white. No other colour must be chosen.

Then sit facing East on a red mat.

Cover a wooden seat with a red cloth and in a cooper plate place the ***Rahu Yantra.***

One need not light any incense or lamp for the Sadhana. All one needs to do is try the ritual with full devotion and concentration.

After this chant the following verse twenty onetimes.

Vedaahmetam Purusham Mahaant-maadityavarnnam Tamasah Parastaat. Tamev Viditvaati Mrityumeti Naanyah Panthaa Vidhyate-yanaay.

Then chant 21 rounds of the following Mantra with ***Hakeek rosary.***

Om Hroum Aryamanne Namah Om

After the Sadhana drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana articles- 450/-

Any day

WISH AWAY ALL YOU CAN !

Vaanchaa Kalplata Tantra Sadhna
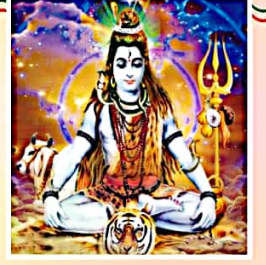
Lord Shiva is creator of Tantra and through Tantra anything could be made possible provided one's intentions are pure and not directed towards harming anyone. One can get the knowledge of any Mantra or Yantra from a text but if there is some mistake in the procedure or Tantra then the benefits would not accrue or would accrue to a lesser degree. Hence it is best to get in the holy feet of the Guru and learn the right procedure from him. But for the householders it is not possible to observe rules very strictly. Hence a Sadguru has pity on them and devises or finds out for them very simple rituals which are as powerful and effective as Vedic Sadhanas.

Such a very easy and effective Sadhana is the ***Vaanchhaa Kalplata Siddhi Sadhana*** for fulfilment of all wishes. **Vaanchhaa** means wish and **Kalplata** means the divine wish tree ***Kalp Vriksh*** which fulfils all one's desires. According to Tantra texts - ***Vaanchhaa Kalplata Sadhana*** is a very rare practice from the world of Tantra in which there are no complex steps. Just by chanting its Mantra one's wishes are fulfilled. Trying the Sadhana once makes one wealthy, five times makes one ruler of the world and ten times makes one as powerful as Lord Shiva and Vishnnu. And if one tries it hundred times one becomes respected world over.

Several texts speak of amazing power of this Mantra. One text states that if one chants this Mantra 108 times and goes to accomplish some task it surely gets complete. If one chants it 108 X 5 times them one can influence any officer or administrator to act in one's favour. If one places garland of roses before oneself and chants the Mantra 108 x 5 times and then sprinkles the petals all around the house then all evil powers are warded off.

One can start this Sadhana on any day such is its power. Early morning have a bath and wear clean clothes. Sit facing North. Cover a wooden seat with red cloth. On it place **Vaanchaa Kalplata Yantra**. Also place picture of the Guru. Light a ghee lamp. Then chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Saadhana. Then join both hands and chant thus.

Shreevidyaa Brahmvidyaa Cha
vyaaptam Ye Sacharaacharam.
Nirdwandwaa Nitya Santushtaa
Nirmohaa Niroopaadhikaa.
Kaameshwaree Manobheesht
Kaameshwar Swaroopinnee.
Namastenant Ropaayei Praseed
Supraseed Me.

Then with a ***Manokamna rosary*** chant three rounds of the following Mantra.

Shreem Shreem Shreem Hreem Hreem Hreem Kleem Kleem Kleem Ayeim Ayeim Ayeim Souh Souh Souh OmOm Om Hreem Hreem Hreem Shreem Shreem Shreem Kam Kam Kam Aim Aim Aim Eem Eem Eem Lam Lam Lam Hreem Hreem Hreem Ham Ham Ham Sam Sam Sam Kam Kam Kam Ham Ham Ham Lam Lam Lam Hreem Hreem Hreem Sam Sam Sam Kam Kam Kam Lam Lam Lam Hreem Hreem Hreem Souh Souh Souh Ayeim Ayeim Ayeim Kleem Kleem Kleem Hreem Hreem Hreem Shreem Shreem Shreem Praseed Praseed Mam Mano Eepsitam Kuru Kuru.

Do this daily for 16 days. This Mantra seems long but is very simple to chant. One 17th day drop Yantra in river or pond. If after this Sadhana one chants one round daily or on some special occasion for fulfilment of some wish then it sure is fulfilled.

Sadhana articles 450/-

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।
परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण साधना
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 37219989876

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

हनुमान यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

गणपति यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039